क्रिकेट-कीर्तन

क्रिकेट-कीर्तन

सपादक
डा० वालेन्दु शेखर तिवारी

पचशील प्रकाशन, जयपुर

ISBN 81-7056 032 2
प्रकाशक पंचशील प्रकाशन
फिल्म कालोनी, जयपुर-302003
संस्करण प्रथम 1988
मूल्य पचीस रुपये
मुद्रक साहन प्रिंटर्स शिवाजी पार्क, शाहदरा, दिल्ली 110032

Cricket Kirtan
Edited by Balendu Shekhar Tiwari Rs 25 00

कीर्तन से पहले

पिछले कुछ दशकों से एक नए रोग ने लगभग आधे संसार में त्राहि त्राहि मचा रखी है। यह रोग है क्रिकेटेरिया। जिस तरह किसी बाला के बाल-जाल में लोचनद्वय का उलझ जाना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है, उसी तरह जिसने भूल से भी कभी क्रिकेट नामधारी खेल देख लिया अथवा उसका आँखों देखा हाल सुन लिया, वह इस रोग का रोगी हो जाता है। जिस देश में भी क्रिकेट खेला जाता है, वहाँ का जनसमुदाय अनिवार्यत क्रिकेटेरिया से पीड़ित होता है। टेस्ट मैचों के मौसम में इस रोग के कीटाणु सक्रामक रूप से फैलते हैं। एकदिवसीय मच के माहौल में तो यह रोग चरम उत्कर्ष पर पहुँच जाता है। किसीको खेल के मैदान में इसकी हवा लगती है, कोई टी० वी० पर इसके नजारे देखकर पीड़ित हो जाता है तो कुछ लोग रेडियो पर आँखों देखा हाल सुनकर ही क्रिकेटेरिया से ग्रस्त हो जाते हैं। किसी रोग का इससे घातक प्रभाव और क्या हो सकता है कि आदमी दीन दुनिया से बेखबर हो जाए। कहीं भी क्रिकेट मैच चलना चाहिए हर शहर में इस रोग के रोगी अपने अपने टेलीविजन या रेडियो सेटों से चिपक जाते हैं। इस दौरान लोग केवल खेल देखने या सुनने ही नहीं, खेल के अनुकूल आचरण भी करते हैं। उधर रन निरोध में तनते हैं और इधर सुनने वालों की सांसें रुकने लगती हैं। मैं ऐसे कई लोगों को जानता हूँ, जिन्होंने विरोधी का छक्का बनते ही अपने ट्रांजिस्टर को मुक्का जड़कर तत्काल धराशायी कर डाला है। निर्लिप्त भाव से क्रिकेट लीन रहने वाले ऐसे मरीजों की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि वे महान देश-

भक्त होत है। देश का हर क्रिकेटप्रेमी अपने देश की टीम की जीत को अपनी जीत समझता है और हार से दु खी होकर अन्न जल त्याग देता है। क्रिकेटेरिया का प्रसार जम्बूद्वीप के इस भारत खण्ड मे जिस तेजी से हुआ है, उसका सीधा असर हिन्दी के समकालीन व्यग्यकर्म पर भी पडा है। हिन्दी के विभिन्न व्यग्यकारो ने विभिन्न टेस्ट मचो अथवा एकदिवसीय मचो के समय विभिन्न व्यग्य लिखे है। 'क्रिकेट कीर्तन' इन्ही विभिन्न व्यग्यो मे से कतिपय क्रिकेटधर्मी व्यग्य रचनाओ का सकलन है।

अपने किस्म का यह अनूठा सकलन है, क्योकि भारत की किसी भी आधुनिक भाषा म ऐसी क्रिकेट केन्द्रित व्यग्य रचनाओ का सकलन अब तक प्रकाशित नही हुआ है। आइडिया तो मेरा है लेकिन इसे साकार करने का श्रेय उन तमाम मित्र व्यग्यकारो को है—जिनकी रचनाएँ 'क्रिकेट-कीर्तन' मे एकत्र है। बधुवर मूलचद गुप्ता जी ने इसके प्रकाशन मे रुचि ली वे मेरे अतिरिक्त धन्यवाद के पात्र हैं।

—बालेन्दु शेखर तिवारी

क्रम

अंधायुग क्रिकेट का

—शरद जोशी

[तीन बार हूटिंग के उपरांत परदा उठता है]

कथा गायन

कंठ गवैया को दे ईश्वर,
    बजवइया को दीजो ताल
नचवइया को पाँव जो दीजे,
    तो महफ़िल में होय कमाल
और खिलाड़ी का साहस दे,
    भारत की बच जाये लाज
कवियन को दे सत्य कठोरा,
    तासे सरग सगरे काज
खतम भयो सब खेल,
    क्रिकिट में हारो भारत भया
धर लपेट ली बैट बिसर गये
    सगरी ताता थैया
यह चौथा है दिवस मैच का,
    छायी उदासी गहरी
गिरगिट सम पिच की रक्षा में
    घूम रहे हैं प्रहरी

[परदा उठने पर स्टेज खाली है। दोनों ओर से दो प्रहरी वार्तालाप करते हुए यंत्रचालित-से स्टेज के आरपार चलते हैं।]

प्रहरी 1

उल्लू के पटठे हैं हम
घूम घूम पहरा देते है
इस सून स्टेडियम म ।

प्रहरी 2

इम सूने स्टेडियम की
धोखेबाज पिच पर
खिलाडी हमारे जहा
मथर गति से रन बनाते
तीव्र गति से आउट हुए
लौट गये मुह लटकाय
पैवेलियन की दिशा में
क्राउड को धिक्कारो को
सहन करते हुए ।

प्रहरी 1

थके हुए हैं हम
इसलिए नही कि
हमने फील्डिंग की
या बॉलिंग
हम तो यो ही ड्यूटी,पर तने रहे ।
हजारो की टिकट बिक्री के
इस पाच दिवसीय मजाक म
उल्लू के पटठे हैं हम रक्षक
गिरती हुई इज्जत क्रिकेट की
हम क्या बचाते
हमारा बाप भी नहीं बचा सकता था ।

प्रहरी 2

बचाने को था ही क्या
जब ओपनस के घुटने
काप उठे फास्ट बॉल को देख
बचाने को था ही क्या ।

प्रहरी 1

रात-रात भर जाग
हम इस पिच की रक्षा करते रहे
शायद कल यहा इतिहास बनेगा
यही सोचते
कुछ अर्थ नही था हमारी मेहनत का
हमारी प्रतीक्षा का ।

प्रहरी 2

कुछ अर्थ नही था
क्रिकेट के इस अर्थहीन सून स्टेडियम मे
पहरा दे-दे कर
अब थक हुए हैं हम
अब चुके हुए है हम
अच्छा होता हम भी खिलाडी बन जाते
होटल म सोते चैन से
हारना तो हम भी आता है ।

[चुप होकर वे आरपार घूमते है । सहसा स्टेज पर प्रकाश धीमा हो जाता है । नेपथ्य से आधी की-सी ध्वनि आती है । दोनो प्रहरी सुनते हैं ।]

प्रहरी 1

सुनते हो
कसी ध्वनि है यह ?

प्रहरी 2

समीक्षक है क्रिकेट के
लौट रहे हैं अपने दफ्तरो से
लिख लिख कर टिप्पणियाँ
आज के खेल पर
कर दी होगी बौद्धिक व्याख्या
दिखाये होगे भाषा के चमत्कार
कितनी पक्तियो म वर्णित हुआ होगा
केवल एक शब्द 'हार'।

[प्रहरी जाते हैं। पीछे का परदा उठता है। क्रिकेट समीक्षक ख
सोच रहा है कभी-कभी सर खुजलाता। नाम है विदुर राय।]

कथा गायन

छि तू क्या लिक्खेगा !
फि तू क्या लिक्खगा !
जिन खिलाडी की तारीफन मे
बांधे तून सेतु
ले बल्ला जब आये खेलने
भूले अपन हेतु
अनुभव से क्या सिक्खेगा !
निरक्षर तू क्या लिक्खगा !
आज स्पोर्ट् स पज पर छायी

मरघट-सी खामोशी
दोष खिलाड़ी का जरूर है
तू भी उतना दोषी
किस मुंह फिर दिखेगा
टेंपा तू क्या लिखेगा ?
झेंपा तू क्या लिखेगा ?

[पीछे पुराना खिलाड़ी धृतराष्ट्र राव ट्रांजिस्टर से कमेंट्री सुनने का प्रयास करते हैं। न सुनाई देने पर खीझते हैं।]

धृतराष्ट्र

कौन कप्तान ?
क्या ख्याल है
कल ड्रा हो सकेगा या नहीं ?

विदुर

मैं हूँ विदुर, कप्तान नहीं
क्रिकेट समीक्षक इस अभागे खेल का
महाराज
वीर हो गया सारा देश आज
बचे-खुच जो 'टेल एंडर' है
क्या बचा पायेंगे इनिंग से हार
मुझे नहीं लगता
आप इतने चुप क्यों हैं राव जी !

धृतराष्ट्र

सत्य, कटु सत्य !
क्रिकेट प्रेमी का पूरा जीवन जो

पहली बार समझा है मैंने
सत्य, कटु सत्य !

विदुर

मत कहिए
कांप उठेगा भारतीय क्रिकेट का
समूचा महल
मत कहिए उसे।

धृतराष्ट्र

समीक्षक हो कर तुमने
क्यों नहीं कहा

विदुर

कहा था
अन्य मेरे मित्रों ने भी कहा था
अखबारों में लिखने के अतिरिक्त
व्यक्तिगत रूप से भी बोला था
सेलेक्टरों से
क्या होता है। कुछ नहीं होता।

धृतराष्ट्र

हम क्या कर सकते थे।
रेडियो से कान लगा
खून का घूट पीने के अतिरिक्त
हम क्या कर सकते थे
हमारी सदभावना से उपजा
व्यक्तिगत संवेदन से जो जाना
केवल उतना ही है मेरा क्रिकेट जगत

इद्रजाल की माया सृष्टि के समान
मन मे ही स्टेडियम विकसित हुए
टू स्लिप ऐंड ए गली
मन मे फेंकी गयी सारी आफब्रेक, लेगब्रेक
मन म लगते रहे चौके छक्के
यह पराजय मेरी वैयक्तिक है
मेरी सदभावना ही उस टीम की शक्ति थी
मुझ जैसो की बूद बूद सद्भावना।

विदुर

पर टॉस से ही होने लगी भूल
आपका अनकहा सत्य हो गया प्रकट
होने लगा सिद्ध झूठा और शक्तिहीन
टीम का गव
एक एक कर हम पिटे
कमेट्री आप सुनते रहे।

धृतराष्ट्र

मेरे लिए वह कमट्री निरथक थी
मैं खेल नही सकता
केवल सुन ही तो सकता हूँ।
मुझे मिलते हैं केवल शब्द
कल्पित कर सकता नही
कैसे गेंद के आने पर
प्राय उखड जाता है हमारा विकेट।

गाधारी (नेपथ्य से एक कक श स्वर।)

महाराज
मत दोहरायें अब

बोर हो गयी सुन-सुन कर
सह नही पाऊँगी।

(सब क्षण भर चुप)

विदुर

कारण क्या है समझ नही पाया ?

गांधारी (नेपथ्य से)

अब बद भी करो यह चर्चा
भाड म जाये मुआ
क्रिकेट फिकेट
मेरे सारे लडके बिगड गये इस खेल मे।

(धृतराष्ट्र और विदुर ट्राजिस्टर बगल म दाब घर से भागते ह।)

कथा गायन

समय करे नर क्या करे
समय होत बलवान
भीलन लूटी गोपियाँ,
वही अर्जुन वही बाण
भारत खिलाडी जाग कर
लेओ इधर चित मोड
दिखा देओ निज बुद्धिबल,
कायरता को छोड
दिखलाना जौहर वही,
घोर गरज एक बार
डट कर खेलो अंतिम दिन,
जीत म बदले हार।

प्रहरी 1

क्या तुम्हे सभव दिखता है ?
विजय होगी हमारी ?

प्रहरी 2

मरीचिका है, महज मरीचिका
क्रिकेट के निराश शून्य मे भी
चमकती है आशा
विजय की सुनिश्चितता को भी
डँस लेती है पराजय की आशका
अरे कौन याचक जी, इतनी रात गये !

(याचक जी का प्रवेश)

याचक जी

आज कुछ ज्यादा ही हो गयी
ह्विस्की शिस्की
क्रिकेट के सेलेक्टस न
दी थी बहुत बडी पार्टी ।

प्रहरी 1 और 2

खिलाडियो को ?
काश हम भी खिलाडी होते ?

याचक जी

नही प्रेमवालो को ।

प्रहरी 1

तो फिर हम वही होते ।

याचक जी

मैं कहता हूँ, पराजय की व्याख्या म
दोष सलेक्टर्स पर न मढ़ा जाये।

प्रहरी 2

फिर किस पर टूटेगी पत्रकारिय प्रतिभा ?

याचक जी

पिच पर,
सुबह गिरी ओस पर
आकाश पर
अनझेले कचो पर
गेंद के चक्कर न लेने पर
या ऐसा ही कोई कारण
जो व्याख्याकारो की
व्हिस्की सिंचित प्रतिभाएँ खोज सकें।

प्रहरी 1

जा कर कोई कहे उनसे हम भी कर रहे है पराजय का विश्लेषण
हम भी
पार्टी दें
हम सलेक्टर्स को दोषी नही मानेंगे।

याचक जी

सारा देश कर रहा चर्चा
सत्य को छुपाने के लिए
पार्टियो की बरसात जरूरी होगी देश पर,
चरित्र की रक्षा के लिए

छाता लगाना पड़ेगा मुझे
जानते हो मैं तो पीता नहीं ।

(लड़खड़ाता है)

प्रहरी 2

सो तो आपके पैरों से जाहिर है ।

याचक जी

बहुत दबाव था, इकार नहीं कर पाया ।

प्रहरी 2

दबाव सही शब्द,
बबई पर कर्नाटक का दबाव
कर्नाटक पर बबई
दोनों पर पजाब
पजाब पर गुजरात
राष्ट्रीय खेल पर प्रातीय शतरज पर
बढते हटते रहते हैं खिलाडी
प्राता के गौरव की प्रतिस्पर्धा मे
पिछडता है देश
हमेशा यही होता है क्रिकेट म
अ यत्र भी ।

याचक जी

मैं कहूगा सेलेक्टर्स का इसमे क्या दोष है ?

प्रहरी 1

दोषी वे क्यों नहीं ?

याचक जो

जिनकी ह्विस्की तैरती है
मेरी शिराओं मे
दोष नही है वे मेरी निगाह मे।
जाऊँ अब
पत्नी प्रतीक्षा करती होगी
सस्कार वश

जानती है वह
क्रिकेट के मौसम मे
मैं अच्छा पति नही रहता
पर इतना याद रखें
क्रिकेट को मैं गभीरतापूवक लेता हूँ ।
(याचक का प्रस्थान)

प्रहरी 2

हम सभी क्रिकेट को गभीरतापूवक लेते हैं।

प्रहरी 1

काश क्रिकेट भी हमे गभीरतापूवक लेता।
सेंचुरी बन जाने पर जहाँ
वितरित होते है मुफ्त चुबन
उसी स्टेडियम का पहरा देने पर
क्या मिला हम ? बोलो क्या मिला ?

प्रहरी 2

सच है
नही लिखे लक्कड़हारा और सुतारो के भाग्य म

शृंगारधर्मी काठ के पलग
सहना है हमे श्रम की यातना।
गेंद को पीटना
गेंद से पिटना
हाथ बाँधे खडे रहना विकेट के पीछे
धीमे धीमे घूमना एपायरी अदाज मे
कप्तानी करना, आज्ञाएँ देना
पानी की गाडी लिए आना
कमेंट्री करना रेडियो पर
टिप्पणी करना आज के खेल पर
वतमान की समीक्षा इतिहास मे
आकडो के सदभ मे
चयनकर्त्ता बन सूची बनाने की राजनीति
यश और गौरव के सदभ म
विवाह कर लेना अभिनेत्रियो या सुदर कन्याओ से
विदेश जाना, लौटना
क्रिकेट के ये सकल सुख, आनद
नही लिखे हमारे भाग्य मे।

प्रहरी 1

हमारी वाणी मे नही वे उक्तिया
जो नत्य करती रहती हैं
क्रिकट के मैदान पर।

[प्रहरी धीरे धीरे चले जाते है। क्रिकेट की उक्तिया नत्य करती आती हैं। उक्तियो का नृत्य।]

उक्तियाँ

हम है उक्तियाँ
उक्तियाँ है हम

चलता है खेल बस
हमारे ही दम
हम हैं उक्तियाँ
उक्तियाँ हैं हम।

उक्ति 1

यह पिच स्पिनरा को फेवर करता है

उक्ति 2

यह पिच बल्लेबाजो का स्वर्ग है

उक्ति 1

खेल का भाग्य टॉस से निश्चित होगा

उक्ति 2

क्रिकेट इज ए गेम ऑफ चास

उक्तियाँ

उक्तियो को याद रखो
दूर होवे गम
हम हैं उक्तिया
उक्तिया हैं हम
चलता है खेल बस
हमारे ही दम।

उक्ति 1

गेंद की चमक खेल के लिए खतरनाक है।

उक्ति 2

आउट फील्ड धीमा होने से रन कम बने

उक्ति 1

लगातार बपर फेंकना सभ्यता नही

उक्ति 2

टीम का मनोबल और खिलाडी का फॉम ज़रूरी बात है।

उक्तियाँ

उक्तियाँ ही निणय
देती कदम-कदम
हम है उक्तिया
उक्तिया हैं हम
चलता है खेल बस
हमारे ही दम
हम हैं उक्तियाँ
उक्तियाँ हैं हम
हम है उक्तियाँ

[उक्तियाँ नृत्य करती चली जाती हैं। धृतराष्ट्र राव और विदुर राम ट्राजिस्टर लटकाये आ रहे हैं। विदुर, धृतराष्ट्र को बीच-बीच म सभाल लेता है।]

धृतराष्ट्र

मेरी पत्नी गाधारी को
'माना काम्प्लेक्स' है।

विदुर

मैं समझा नही महाराज
मनोविज्ञान मेरे लिए गुगली है
क्या होना है कभी समझ न पाया।

धृतराष्ट्र

जब कभी हारता है भारत क्रिकेट म
गाधारी को यह अपनी हार लगती
जानत हो उसके सारे पुत्र
क्रिकेट के खिलाडी रहे जन्म से
इसी कारण फेल होते रहे इम्तहानो मे

विदुर

गाधारी पुत्र क्रिकेट खिलाडी बनें।
मैं बता सकता हूँ क्या होगा भविष्य महाभारत का।

धृतराष्ट्र

पर वे अच्छे खिलाडी भी न बन सके।
कार, ट्रक और ऑटोरिक्शा के विकास ने
मुहल्ले मे क्रिकेट को बडी क्षति पहुँचाई है
प्रतिभायें कुठित हो रही हैं
निराशा घुटन, सत्रास वगैरह इधर भी है।
वे 'समातर क्रिकेट' की सोचने लगे हैं।

विदुर

समातर क्रिकेट ?

धृतराष्ट्र

गुल्ली डडा
यानी खेल आम आदमी का।

विदुर

उसका भविष्य उज्जवल है

गुल्ली डंडे से पहचान सकते हैं वे
भारतीय क्रिकेट की आत्मा ।

धृतराष्ट्र

गांधारी पुत्र नहीं बन सकेंगे खिलाड़ी
कोई नहीं लेगा उन्हें टीम में
काश, मैं अमरनाथ, मांकड या पटौदी होता
मेरे बच्चों का भविष्य बन जाता
यहीं खेलते रहेंगे मुहल्ले की धूल में वे
हाय !

विदुर

निराश न हों
मेरा एक निवेदन स्वीकारें ।

धृतराष्ट्र

कहो विदुर,
पुत्रों को जन्म देने के अतिरिक्त
हम भारतीय क्रिकेट के विकास में
क्या योग दे सकते थे ?

विदुर

यद्यपि परिवार नियोजन की
आपने उपेक्षा की
अपने अज्ञानवश
पर फास्ट बॉलर का नितान्त अभाव है
देश में
आपने इस पर कभी क्यों नहीं विचार किया

गाधारी अगर एक फास्ट बॉलर देती
क्रिकेट कटोल बोड उनका कितना आभारी होता !

धृतराष्ट्र

हमने प्रयत्न किये थे
सफलता नही मिली
सब क सब स्पिनस ही निकले
धीमी गेंदो के फिकैया
स्वय गाधारी यह सोच
बहुत पीडित रहती है।

विदुर

क्या होगा ? क्या होगा देश का ?

धृतराष्ट्र

जब चार मौ मीटर दौड के
स्वण पदक विजेता खिलाडी
गोला फेंकने मे स्वण पदक प्राप्त
कन्याओ से
प्रणय निवेदन कर विवाह करेंगे
तब उनका पुत्र होगा फास्ट बॉलर।
प्रथम इस देश का
या इसका उल्टा
अथात वर गोला फेंकता हो
वधू चार सौ मीटर की दौड दौडती हो
एथलटिक्स म सुलझेगी
क्रिकट की समस्या
यह मरी भविष्यवाणी है

गहन चिंतन के बाद
मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ ।

विदुर

आप धन्य हैं महाराज
नई दिशा दी है आपने
खेल जगत को
मानेंगे इसे तो
क्रिकेट सभी स्तर पर
राष्ट्रीय खेल बन जायेगा ।

धृतराष्ट्र

मीटिंग है आज चयनकर्ताओं की
देखें क्या होता है ?

[धृतराष्ट्र और विदुर चले जाते हैं बात करते । मंच पर दोनों प्रहरी आ एक टेबुल और तीन कुर्सियाँ लगाते हैं ।]

प्रहरी 1

अब क्या होगा ?

प्रहरी 2

वही होगा जो होता आ रहा है ।

प्रहरी 1

क्या निर्णय लेंगे चयनकर्ता

प्रहरी 2

वही जो लेते रहे हैं
वही तक

वही बहसें
वही प्रश्न, वे ही मुद्राए
वही विरोध
वे ही समस्यायें
क्या निणय होगा
वही जो होता रहा है।

प्रहरी 1

व आ रहे हैं इस तरफ
चलो, हम बठ जायें इधर।

[तीन चयनकत्ताओ का प्रवेश। अलग-अलग चाल, चेहरो पर जिम्मेदारी के मुखौटे लगाए मानो मच पर घूमते-विचारते कुर्सिया पर आ बैठते हैं।]

चयनकर्त्ता 1

मेरा मत है

चयनकर्त्ता 2

मैं सहमत नही

चयनकर्त्ता 3

इनकी सुनिए तो सही

चयनकर्त्ता 1

ओपनर क लिए क और ख
बाद म च और फ
मिडिल ऑर्डर म द और न
फिर म और म
म घ च प द न य म

प्रहरी 2 नि ध प म ग रे सा

[चयनकर्त्ता बहस की मुद्राओं म नामा पर व्यस्त रहते हैं। कथा गायन आरम्भ हो जाता है। बीच म दोना प्रहरी जुगलबन्दी गाने का अभिनय करते हैं। चयनकत्ताओ की बहस लडाई तक पहुच जाती है।]

कथा गायन

कमेटी कमेटी, कमटी कमटी
खडी हो के बैठो हमारी कमटी।
कमेटी ने तारा, कमटी ने मारा
कमटी ही किस्मत, बनाती है यारा
यहाँ पर कमेटी, वहा पर कमटी
मुसीबत म डूबे, जहाँ पर कमेटी
जब भी पुकारा, उठ कर के लेटी
कुभकण की बेटी, ये चलती कमेटी
शब्दो मे जीते, शब्दो से हारे
शब्दो के चलते, पटा ओ बनेटी
कमेटी कमेटी कमेटी कमेटी

[गायन समाप्त होने तक चयनकत्ता आपस मे गुत्थमगुत्था हो चुकते हं। चयनकर्त्ता 1 शेप दोनो को हरा देता है। कृतवर्मा का प्रवश।]

कृतवर्मा

मैं हूँ वमा
महाभारत टाइम्स का
खेलकूद प्रतिनिधि
घोषित कर दिये नाम
आदरणीय चयनकत्ताओ ने

नई टीम के
यह-यह मे कुछ वह-वह मिला।
तू तू के सग
मैं मैं का समोजन कर
इसके साथ उसको
ये और वे को पास ला
क्लाइडोस्कोप की
उन्ही चूडियो के टुकडो से
नया फूल बनाया है
टैस्ट म विजय की कामना के साथ
ह ह क्या होगा सब जानते हैं।
(अश्वत्थामा का टूटा बल्ला लिए प्रवेश)
कौन अश्वत्थामा !

अश्वत्थामा

हाँ, मैं हूँ अश्वत्थामा
यह मेरा बल्ला है
जिस पर कभी सी० के० नायडू ने दस्तखत किये थे,
आज जब मैंने
घोषित टीम म नही देखा अपना नाम
तोड दिया मैंने इसे
हमेशा के लिए।

कृतवर्मा

निराश न हो अश्वत्थामा

अश्वत्थामा

कब तक रहूँगा मैं
भारतीय टीम का पहला खिलाडी

मेरी थी अटल आस्था
इसी बल्ले से
टस्ट मे सेंचुरी बनाऊँगा
थक गया रणजी ट्राफी और
स्थानीय टीमो म खेलते
पर मैं सदव रहा
पन्द्रहवाँ खिलाडी
बारहवें खिलाडी और दो रिजव
के बाद शायद मेरा नाम है
जो कभी घोषित नही होता
(वक्ष पीटता है)
आत्मघात कर लू
इस नपुसक अस्तित्व से

कृतवर्मा

धीरज रखो अश्वत्थामा
हम पत्रकारो की तरह
कभी-कभी
नपुसक अस्तित्व जरूरी होता है
प्राण रक्षा के लिए ।

अश्वत्थामा

तुम्हारी कलम की तरह

कृतवर्मा

क्रिकट इज ए गम आफ चास, अश्वत्थामा !

अश्वत्थामा

बहुत सुन चुका हूँ
फिर मुझे क्या नही मिला चास

आज देखता हूँ चयनकर्त्ता को
कहाँ है वे ?
कहाँ है वे ?
(जाता है)

कृतवर्मा

ठहरो अश्वत्थामा, ठहरो ।
(जाता है)

प्रहरी 1

लराला लाल्ला !

प्रहरी 2

लरीरी री री !

प्रहरी 1

कोई विक्षिप्त हुआ ।

प्रहरी 2

कोई शापग्रस्त हुआ ।

प्रहरी 1

हम जसे पहले थे ।

प्रहरी 2

वसे अब भी है ।

प्रहरी 1

प्रहरी अधे युग के

प्रहरी 2

क्रिकेट के इस सूने स्टेडियम मे
करते प्रतीक्षा और अधेरे कल की ।

अडर नाइन टेस्ट मैच

—के० पी० सक्सेना

मुझे याद है कि मेरे बचपन मे मेरी ही उम्र के एक घूरेलाल हुआ करते थे। जिस्म से काफी मजबूत थे और मेरे दुबलेपन का फायदा उठाकर लगातार टीपें मारा करते थे। मेरी मजबूरी थी कि टीप मारना तो दूर मैं उनकी चढिया तक भी नही पहुच सकता था। चुनाचे मैं बदला चुकाने की गरज से घूरेलाल के छोटे भाई को मौका ताडकर टीप मार लेता था। जो हाल बचपन म मेरा था, वही आज भारतीय पाकिस्तानी क्रिकेट का है। हम पाकिस्तान म टस्ट मैंच खेलने गये तो वहा के घूरेलाल ने हमें धुनकर धर दिया। हम भी भडास निकालनी थी सो हमने उनकी नाइण्टीन (उन्नीस वप से कम) की टीम बुला ली और अपनी अण्डर नाइण्टीन से भिडाकर टीपें मार ली। हिसाब बराबर हुआ।

क्रिकेट वाले अगर मेरी राय मानें तो इस मनहूस खेल को अडर नाइण्टीन के लिए ही रहने दें। जब मूछ दाढी वाले इसे पाच पाच दिन खेलते है तो सारे मुल्क का पाटिया गुल हो जाता है। सारे दफ्तर काट, कचहरी स्कूल, बैंक, डाकखाने मेडन ओवर जैसे खाली नजर आते ह। जिसे दखिए वही रेडियो के सामन हिज मास्टस वॉयस के कुत्ते जैसा मुह बाए बठा रहता है। खेल हो रहा है कोटला म, छातिया कुट रही है कानपुर म।

इन पाच दिना का आलम होता है कि हर बीवी को उसका शौहर विश्वनाथ स कम नजर नही आता। कमेन्ट्री पर बहस के दौरान नौबत यहाँ तक आ जाती है कि जगह जगह घूसे और जूते का डबल स्पिन अटैक तक शुरु

टाइम-पास क्रिकेट

—लतीफ घोंघी

—सभी प्लान मिल गये मौसम बदल गया मैदान साफ है अपना दुखड़ा कासे कहूँ सखी सारे बैटसमैन घायल हो गये।

—हाँ सखी बड़ी निर्दयी है यह दुनिया यौवन की इस देहरी पर आते ही बड़ी क्लोज फील्डिंग हो रही है बहुत चाहती हूँ कि पैर आगे बढ़ा कर कवर प्वाइंट की तरफ चार बलिंग हुक हो जाऊँ यह संसार कितना कठोर है है ना सखी?

—हाँ सखी बिलकुल हार्ड पिच की तरह लगता है मैं तो खेल ही नहीं पाऊँगी इस टेस्ट में बॉल टप्पा खाने के बाद बहुत टर्न लेने लगी है है ना सखी?

—अपना दुख कैसे कहूँ उसने तो मुझे पहली गेंद में ही लेग बिफोर कर दिया सखी, वह आइव्वर दी विकेट आया और मुझे मौका देने के पहले ही मुझे पवेलियन भेज दिया।

—सखी कोई नया एम्पायर होगा नो बाल दे देता तो क्या जाता उसका।

—हा सखी, इन एम्पायरों के हृदयों में कोई दया नहीं होती मैंने लेग विकेट मांगा तो उसने ऑफ दे दिया खेल का मजा ही किरकिरा हो गया मैं तो गार्ड लेकर अपना मिडिल विकेट ही संभाल रही थी पता ही नहीं चला कि कब बाल ऑफ ब्रेक होकर आयी और उसने मेरा लेग विकेट गिरा दिया पीछे मुड़कर देखा तो बेल्स गिर गयी थी विकेट-

वीपर वडा खुश था हरामजादा मुझे बडा घूर रहा था मैं कोई काट बिहाइड थोडे ही हुई थी। क्यो सखी ? है ना ?

—हा सखी क्रेडिट तो बालर को ही मिलेगी क्या कहूँ आजकल तो बालर बहुत थूक लगाने लगे है गेंद पर अपनी अपनी किस्मत है

—सखी, मैं तो बिलकुल नयी हूँ तुमने तो कई मैच खेले है पहली बार पड बाधकर मैदान मे उतरी तो बहुत भय लगा सच सखी, मेरे पैर थरथरा रहे थे सुना है आजकल बडी फास्ट बालिंग का फैशन है गेंद फेंकते हैं तो दिखायी भी नही देती समझ म नही आता कैसे खेल पाऊँगी उनकी तेज गेंदें।

—डरो नही सखी मैदान म डरोगी तो कप्तान का मानसिक दबाव कैसे झेल पाओगी तेज गेंद पर तीन-तीन स्लिप होते है हा, तीन-तीन। तुम चूकी नही कि वे तुम्हें बिना कैच लिए नही छोडेंगे। धीरज रखो सखी और साहस से काम लो मेरी मानो तो शुरू-शुरू म डिफेंसिव स्ट्रोक ही लगाया करो पिच ठीक हो जायेगी तो रन निकाल लेना अपना विकेट बचाकर खेलोगी तो नाम बहुत देर तक स्कोर बोर्ड पर रहेगा।

—सखी, देखो गली मे कौन खडा है अरे यह तो वही है इसे कप्तान ने डीप फाइन लेग से निकालकर गली पर खडा कर दिया है लगता है मुझे आउट कर देगा बाल और बैट की मुलाकात होते ही यह मौका नही चूकेगा कोई रास्ता बताओ ना तुम तो बडी अनुभवी हो।

—सखी, सुनो तुम अपना दाहिना पैर आगे बढाकर गेंद की लाइन म आ जाना अपनी नाजुक कलाई का उपयोग करके काम निकाल लेना। स्ट्रेट फारवड रहना गेंद को देखना और फर्स्ट स्लिप और गली के बीच से सेट कट करके बाल को निकाल लेना भूलकर भी क्रास बैट मत खेलना।

—सखी, मेरा जी चाहता है कि छक्का लगाऊँ इस तरह गेंद रोक-रोक कर उसकी ग्लेज खराब करना मुझे अच्छा नही लगता सखी, मैं तो स्कूल लाइफ म भी रिस्क लेकर ही खेलती थी मालूम है ना तुम्हे ?

—सखी जल्दी मत करो पहले पिच फेवरेबल हो जाने दो बिना सोचे-समझे हाफ हार्टेड स्ट्रोक लगाओगी तो जल्दी आउट हो जाओगी कभी-न-भार अच्छी गेंद देखकर छक्का लगा देना

—सखी अटठारह ओवर हो गये लेकिन बाल राइज ही नहीं हो रही है टप्पा खाने के बाद सीधी विकेट की तरफ आती है तुम्ही कहा कैसे बचाऊँ अपना विकेट मैं तो बिलकुल नही खेल पा रही हूँ

—मेरी मानो तो सिंगल बनाकर बालिंग एंड पर चली आओ सखी पहले विकेट की पाटनरशिप टीम के लिए बडी जरूरी होती है रन बनाने की चिंता मत करो सखी बस तुम तो सामने वाले खिलाड़ी को स्टेंड देती रहो जितनी देर क्रीज पर रहोगी तुम्हारा आत्म विश्वास बढेगा।

—सखी लच के पहले ही तीन विकेट गिर गये शुरूआत ही बिगड़ गयी कहा फालो ऑन की सोच रही थी। अब तो लगता है यह टस्ट भी हाथ से निकल जायगा।

—सखी क्रिकेट बडा छलिया होता है कभी-कभी नौवें विकट की भागीदारी पासा पलट देती है।

—देखो सखी पाँचवा विकट भी उखड गया क्या हो गया है हमारे बल्लेबाजों को कोई जमकर खेल ही नहीं रहा है

—सखी बडी धाधली चल रही है बोर्ड म, मैं कहती हूँ नये लोगो को मौका देना चाहिए नेट प्रेक्टिस ठीक करनी चाहिए

—सखी मुझे तो फील्डिंग बडी लचडी लगती है कप्तान बडा चालाक है लगता है टी-टाइम के पहले सबको ले डूबेगा बडा नीरस है आज का खेल सखी लगता है पहले टैस्ट म ही हम हार जायेंगे दाव रही हो हमारी प्रतिष्ठा जा रही है कोई डबल सेंचुरी बनाने वाला नही दिखता हम हार जायेंगे तो हमे लोग कहगे कि हम खेलना नहीं आता।

—बीते हुए दिनो की बडी याद आ रही है सखी पहली इनिंग म कितना बडा स्कोर खड़ा कर दिया था हमने पूरे सात विकेट स जीता था हमने वह टैस्ट अपने होम ग्राउंड पर खेल के क्षण याद करती हू तो अभी भी पूरे बदन म झुरझुरी आ जाती है कितने फार्म म थे हम है न सखी ?

—हाँ सखी अब वो गोल्डन फार्म कहाँ रहा—तुम्हारी तो कट गयी इस

क्रिकेट मे किसी तरह   मेरे सामने तो पूरा भविष्य है   तुमने तो अपने जीवन म कई रिकाड बनाये है और तोडे हैं   सोचती हूँ मेरा क्या होगा

—सखी निराश मत होना   क्रिकेट मे कभी कभी टाइम-पास का भी बडा महत्व होता है

—बताओ ना सखी कैसे करते हैं टाइम पास   बताओ ना प्लीज

होना। बडे साब का तो स्त्रय पास आ गया है, फैमिली पास। बडे मिया कल कुर्सी पर नही। दफ्तर मे किसी के बाप का डर नही।

"एक एक करके जाना, यारो", श्रीवास्तो बाबू हिदायत देते है। बस डर की कोई बात नही, परन्तु फिर भी। ठीक रहता है। एक एक करके जाना कोई पीछे पूछे तो ठीक रहता है। अब पिछले दफे के मैच की बात ही लो। बडे साहब लच तक का खेल देख कर ही लौट आये तो पाया कि दफ्तर खाली। पर दरियादिली की हद है। हँसने लगे। हँस कर अपने ड्राइवर से बोले, "बडा बोर गेम चल रहा था। यह हमारा स्टॉफ न मालूम कसे झेल रहा है। भई, हम तो उठ आये।'

एक बार और हँस कर कार मे बैठ गये। किसी से कुछ नही कहा अगल दिन। वो तो ड्राइवर ने बताया सबको। बडे साहब का इसलिए बडा मान है दफ्तर म। श्रीवास्तो बाबू तब से सतर्क रहते है। कोई कभी पूछ ही ले। इसीलिए एकाध आदमी दफ्तर मे रुकने का कल मैच के पहले दिन चौबे जी रुक लें। परसो बाजपयी जी रुक लेंगे। वैसे भी, परसा बाजपयी जी की लडकी को देखने आने वाले आने को हैं, शाम को। तो व बीच-बीच मे थोडा दफ्तर भी झाक लेंगे और घर म इतजाम भी देखत रहेंगे। क्यो बाजपेयी जी ? नही। बाजपयी जी नही रूकेंगे। लडके वाल दिन मे मच देखना चाहते हैं। बडे साहब ने पैविलियन का पास दिला दिया है बाजपयी जी को। लडके वालो पर रुआब पडेगा, तो शायद वे लडकी के मुहासो का न देखें। बाजपेयी जी कृतज्ञ हैं। बडे साहब का मान है बडा, इसलिए।

स्कूल-कॉलेज तो खैर, आज से ही बद से है। डिवस इटरवल की-सी सुस्ती तथा स्टेडियम-सी अफरातफरी। सारे टीचर, प्रिंसिपल त्रिवेदी जी के कमर म टीम चयन पर बहस कर रह है और लडका-लडकी लोग मैदान म। छोटे छोटे गुटो म। किताबो पर सर रख कर लेट गय है बहुत स लडक। लडकिया परम्परागत चुस्त पोशाका मे, उल्लासपूर्वक लज्जा तथा नाजुकता से भरे बल खाती यहाँ-वहाँ टहल रही हैं और बेवजह जोर-जोर से हँस रही हैं।

कुछ लडके अग्रेजी म जोर-जोर से क्रिकेट की बातें कर रहे हैं और

लडकिया पर प्रभाव डालने के प्रयास कर रहे हैं। हिंदी वाले लडकों की मौत है। वे अंग्रेजी अच्छी बोल पाते, तो आज काम आती, हिंदी से वे स्वयं शरमाते हैं। फिर लडकियों का तो कहना ही क्या? चंद लडके, लडकियो को हँसाने के लिए यहा-वहा बॉल फेंकने का अभिनय कर रहे हैं और लडकिया हँस भी रही हैं। परंतु 'वो' नहीं हँस रही, जिसके लिए 'ये' बाल फेंक-फेंक कर जी हलकान कर रहे हैं।

हँसेगी 'वो' भी। आशावादी है 'ये', भारतीय कप्तान की तरह। हँसेगी तो फँसेगी। कल वो भी मैच देखने जा रही है। वे पीछे की पंक्ति मे जम लेंगे। पर वो न आयी, तो? नहीं-नहीं, क्या नहीं आयेगी? आयेगी। विश्वस्त सूत्रों ने खबर पहुँचायी है। जरूर आयगी अपनी चक वाली लाल शाट जिंदाबाद। कल भाग्य ने साथ दिया, तो वह आयगी और भारत टॉस जीतेगा। अपनी टीम टास जीत लें तो लडकी प्रसन्न रहती है। ऐसे नाजुक मसलो में लडकी का प्रसन्न होना मायने रखता है। अच्छे मूड म, पीछे से ये जो भी कमेंट मारेंगे, 'वो' हँसेगी। और जैसा कि पीछे इनकी आशावादिता की बात चली थी, ये आश्वस्त हैं कि हँसी तो फँसी।

कुल मिलाकर सब बढ़िया चल रहा है। पाँच दिन के टेस्ट मैच का कुछ नतीजा निकले, न निकले ये कटिबद्ध है कि प्रेम के क्षेत्र म कुछ मधुर निर्णय निकाल ही लेंगे। पिछले टैस्ट मैच म दो वर्ष पूर्व भी ये ऐसे ही कटिबद्ध थे, परंतु लडकी के बाप ने एन मौके पर झापड मार कर इनकी गिल्लियाँ उडा दी थी। उनका बस चले तो लडकी के बाप को ड्रिंक्स का ठेला पकडाकर मैदान म भेज दें। पर इनकी कौन सुनता है? फिर भी इस बार पाँच दिनो मे ये अवश्य कुछ करेंगे। फिर बीच मे एक दिन विश्राम का भी तो है। उस दिन चेकवाली शर्ट फिर धुल कर चमाचम हो जायगी। आसार अच्छे हैं अगर देखा जाये तो। भारतीय टीम के न भी हों, इनके तो अच्छे हैं।

शाम हो रही है। समय रहते दुकान म चेकवाली शर्ट उठा लें। नहीं तो प्रेस कर दी होगी। उसे भी पता है कि कल मैच है।

मन मैच है और रात भी हो गयी। रात उनकी किसी सगठित टीम

सी, कि साथ में खेल अधिकारियों से नासपीट, बेरहम, काले कलूटे बादल भी घिर आये। जी धक्क हो गया शहर का। फिर एक-दो बार यहां वहां बिजली चमकी। मानो किसी घटिया बल्लेबाज ने एक-दो अच्छे शाट मार दिये हों। घबरा उठा सारा शहर। पानी बरसेगा क्या ? पर गधी तो गधी ठहरी। गधी ने आसमान की तरफ देखा और मुदित मन लिये मैदान में उदास खड़े गधे के निकट पहुँची। बोली, "पानी बरसेगा।"

"यही तो डर है", गधा चिंतित होकर बोला। "डर काहे का ? हरी घास और उगेगी," ठुमककर गधी ने कहा।

"पर कल, जो पिच पानी अधिक हो गया, तो क्या होगा ? मैच होगा या नहीं ?" गधा चिंतित था।

"कैसी पिच, गदभनाथ ?"

"तू गधी है न, नहीं समझेगी। पिच पर हरी घास के टुकड़ों का अर्थ समझती है नादान ?" गधा नाराज हो चला।

"कहाँ है हरी घास ? हम खायेंगी।"

"सारा शहर चिंतित है बरसात के डर से और तुझे खाने की मची है ? अरे, एक साल घास भी न उगी, तो क्या हम भारतीय गधे मर जायेंगे ? पानी नहीं बरसना चाहिए। हम भारतीय गधों का क्रिकेट मैच होना। घास भी न मिले चलेगा। पर भूखे गधों को क्रिकेट होना। दोनों टैम होना। पांच दिन का भी होना," गधा बोलता रहा समझदार गधी की छाती पर भारी रोलर-सा चलता रहा। यह गधे को क्या हो गया ? शहर में यह क्या हादसा होने वाला है कल, कि शहर के गधे खाना-पीना छोड़कर उसकी प्रतीक्षा में बैठे हैं ? गधी चुपचाप मैदान के एक कोने में जाकर बैठ गयी। गधा चिंतित हो आकाश ताकता रहा।

तभी कुछ हलकी सी बूंदाबांदी शुरू हो गयी। आकाश से पृथ्वी के बीच बूंदें, पिद्दी टेलण्डर खिलाड़ियों सी 'रनिंग बिटवीन द विकेट' करने लगीं।

"पानी बरसेगा क्या ?" खिड़की से बाहर झांकते हुए चिंतित होकर पप्पू के बाबूजी भी घबराकर खिड़की पर आ गये। देखा, बाहर मैदान में गधा खड़ा था और बूंदाबांदी हो रही थी। कल मैच न हुआ, तो क्या

खरीदा रंगीन टी० वी० बेकार गया समझो। ये घबरा कर टहलने लगे।

हल्ला सुनकर अंदर से दादी निकल आयी, "कोई आउट हो गया?"

'आज मैच नहीं है, दादी,' पोते ने खिड़की से टंगे टंगे जवाब दिया।

'जब हम का मालूम? तुम घबड़ा के इते उते भागे, तो हम समझे कि कोई आउट हो गया। अच्छा भैया, जे बताना कि गेंद कौन फेंक रहा है?"

आज मच नहीं है, मां", बेटे ने खिड़की से भांक कर बताया। (गधा अभी भी मैदान में था।)

"जब हो, तब बताना, कपलदेव जब फेंके, तब बताना। हमहुँ देखेंगे। बड़ी तेज फेंके है गेंद, छोकरा। वा रे विधाता, वा

'इधर पानी के डर से मच खत्म होने को है और आप अपनी लगाये हुए हैं', पोता और बेटा दोनों बिगड़ गये।

(गधा अभी भी मैदान में था)

दोनों को चिंतित देख दादी जान गयी कि बात गंभीर है। वे भी चिंतित होकर चौके में चली गयी। बाप-बेटे खिड़की पर खड़े रहे। बाप ने पप्पू से कहा, 'बाहर आओ और डंडा मार कर इस गधे को हकाल दो। साला खड़ा-खड़ा अपशकुन कर रहा है।

आकाश में बादल हैं और शहर चिंतित है। आकाश से बूंदें गिरी और देश चिंतित है। आसमान में बिजली चमकी और गधे चिंतित हैं। कल के मैच का क्या होगा? किसान खेती में खड़ा बरसात की संभावना से मुदित है और उसका सुपुत्र हॉस्टल की छत पर खड़ा होकर बादलों को कोस रहा है। कल पानी नहीं बरसना चाहिए। कल मैच होना चाहिए। शहर ने महीनों से तैयारी की है। चेक वाली शर्ट प्रेस होकर आ गयी है। ब्लैक में सीजन टिकट मिल गये हैं किसान के बेटे को। बाजपेयी जी की लड़की का प्रश्न है। पूरा दफ्तर छुट्टी के मूड में है। पूरा देश पाँच दिन के लिए काम छोड़ कर बैठा है। क्रिकेट में गले गले डूब इस देश को कल मच होना। बरोबर होना। कल मैच अवश्य होगा।

मुसद्दी लाल का क्रिकेट प्रेम

—पूरन सरमा

मुसद्दी लाल की हालत इन दिनों खराब है, अनमना, घबराया चौकन्ना और डरा हुआ-सा दिखता है। न खाने की सुध न ढंग से कपड़े पहनने की फ़ुरसत। सदैव एक तनाव सा बना रहता है। उसकी स्थिति इन दिनों पागलों की सी है। इन सबके मूल में कारण देश में क्रिकेट के खेल का चलना है। मुसद्दी हर किसी से पूछता फिरता है—'क्यों भाई जी, क्या स्कोर चल रहा है?'

जब यही प्रश्न एक दिन मुसद्दी लाल ने मुझसे कर लिया तो मैंने उसे समझाया—'इससे बढ़िया तो यह रहे कि तुम एक पॉकेट रेडियो अपने साथ रखो।'

अपनी जेब से छोटा-सा रेडियो निकालकर मुझे दिखाते हुए मुसद्दी बोला—'रेडियो तो मेरे पास है, यार। मगर यह साला साब का बच्चा है न, कई बार टोक चुका और फिर अंत में तो इसके सैल निकाल कर रख लिए।' इतनी सी बात बताते हुए भी मुसद्दी के चेहरे पर गुस्से के भाव थे।

मैंने कहा—'सच। मुसद्दी ऐसे में आफिस का साब बीमार हो जाए।

'सही है, सत्यानाश हो जाए। मरदुआ स्वयं कमेंट्री सुनता रहता है और आफिस के स्टॉफ को सुनने से रोकता है। कौन समझाये उसे कि इस समय देश की प्रतिष्ठा दाव पर लग रही है। भोंदू है पूरा।' मुसद्दी अब भी गुस्से में था।

'तुम्हारी क्या हालत हो रही होगी इस समय मुसद्दी तेरा दद तो तू ही जाने।' अपनी वाणी म अत्यन्त सहानुभूति का पुट लगाते हुए मैंने उसमे पूछा।

इतना सुनते ही तो मुसद्दी खुल पडा—'क्या बताऊ भाई, उस इसने खा लिया। और घर की तो कुछ पूछो ही मत। पूरा कबाडखाना है। जरा रेडियो हाथ म लिया नही कि श्रीमती का पारा आसमान छूने लगता है। कहगी—सब्जी लाओ चक्की से आटा लाओ, बच्चा को पढाओ, चक्की से हाथ मुह धो लो मकान के किराये का इतजाम करो। उसे सारी बातें तब ही सूझती है जब मैं कमट्री सुनता हू, सही बताऊ दो रेडियो पहल उसके गुस्से का समर्पित हो चुक है। यह तो तीसरा है, इतना कहकर वह मुझस बोला—जरा मालूम तो करो यार क्या स्कोर चल रहा है।

मैं किसी स कुछ पूछू उससे पहले तो मुसद्दी ने एक सज्जन स पूछ लिया क्यो भाई साहब ! क्या स्कोर चल रहा है ?'

शायद वह सज्जन स्कोर—कमेट्री और क्रिकेट तीना से अनभिज्ञ थ, उन्होंने मुसद्दी का व्यग्य अपने घर के प्रतिवर्ष बढने वाले बच्चा के स्कोर की ओर समझा अत वह उसे घूरते हुए बोले—'आपको क्या आपत्ति है ?

'आपत्ति किस बात की भाई ! स्कोर बताने म तो आपको भी किसी प्रकार की आपत्ति नही होनी चाहिए। यह तो राष्ट्रीय कायक्रम है।'

अरे मुझे क्या समझता है। मैं इमरजेंसी मे ही इस राष्ट्रीय कायक्रम का नहा अपना सका तो अब क्या अपनाऊगा और सुनो घर म कुल 7 बच्चे हैं कर लो जो कुछ करना है। सज्जन इतने उत्तेजित हो चुके थे कि मुसद्दी का भी फ्यूज़ आउट आ गई। वह भी गुस्से मे चीखा— क्या तुम बता सकते हो इसम कोई छक्का या चौका भी शामिल है क्या ?'

छक्का और चौका भी सज्जन की समझ म पर थ। बोले—'क्या होना है यह छक्का और चौका तुम्हारा भेजा तो खराब नहीं है साला ! गृहस्थी म फँसाग तब मालूम चलेगा ! गृहस्थी का नाम सुनते ही मुसद्दी क मुह म फ्यूज़ आउट कर गई। उन्हें अपने पोते का स्मरण हो आया। मेरी ओर मुखातिब होकर मुसद्दी बोला—'देखा हाल, इसलिए तो देश का

विराम नहीं हो रहा है। कथन से लगा, सही मायने में तो जिन दिनों यह खेल शुरू हो, तब सरकारी स्तर पर अवकाश की व्यवस्था होना आवश्यक है। मैं अपनी बताऊँ, मैं साल भर छुट्टी लेने में इसीलिए कंजूसी बरतता रहता हूँ कि पता नहीं क्रिकेट कब शुरू हो जाय।'

'इसमें दिक्कत यह भी तो है मुसद्दी भाई, यह खेल अक्सर दिसम्बर में शुरू होता है और तब तक हमारी सी० एल० अंतिम साँसें लेने लगती हैं। असलियत में यह खेल के दर्शकों तथा कमेंट्री के श्रोताओं के साथ अन्याय है।' मैंने मुसद्दी की भावनाओं को तूल दिया।

'कैसा रहे यदि श्रोता और दर्शक मिलकर अपनी यूनियन बना लें तथा अपनी माँग फिर सरकार के सामने रखें। क्योंकि बिना सामूहिक प्रयास के आजकल कुछ होता भी तो नहीं। नया जमाना प्योर यूनियनबाजी का है।' मुसद्दी भावनाओं में बहा जा रहा था।

'और कैसा रहे यदि उस यूनियन का प्रेसीडेंट तुम्हें बना दिया जाय?'

मुसद्दी का चेहरा खिल उठा, वह अपने दोनों कंधे उचकाकर बोला—'मेरा प्रेसीडेंट बनना देश क्रिकेट प्रेमियों के सर्वथा हित में होगा। सबसे पहला काम मैं अपने दर्शक और श्रोताओं की संख्या में वृद्धि करूँ जो लोग इसके बारे में नहीं समझते हैं, उनके लिए पार्टटाइम कोर्सेज चलवाने की योजनाएँ शुरू करवाऊँ। सरकारी स्तर पर रेडियो सैटस की सुविधाएँ प्रेमियों को सुलभ करवाऊँ। क्रिकेट के दिनों में कार्यालयीय काम-काज ठप्प करवा दूँ। सिर्फ टेबिलों पर कमेंट्री सुनी जाती रहें। और तो और पत्नियों को मायके की राह दिखाऊँ।'

मैंने मुसद्दी को भावनाओं में बहने से रोका और कहा— लेकिन इससे तो सुखी दाम्पत्य जीवन में जहर भी तो घुल सकता है।'

'घुल तो घुले, या तो क्रिकेट का विकास कर लो या सुखी दाम्पत्य-जीवन भोग लो। सच है अभी लोग क्रिकेट को सीरियसली नहीं ले रहे हैं और उससे होने वाले फायदा से अनभिज्ञ हैं।' मुसद्दी बोला—

वैसे इसका मूल फायदा क्या है?'

फायदा तुम भी अभी फिसड्डी हो। अरे भाई, क्रिकेट के बारे में

जानकारी रखना और कमट्री सुनना लेटस्ट फैशन है। फिर यह तो समझने की बात है कि लेटस्ट फैशन हमारी प्रगतिशीलता का द्योतक है। मुसद्दी ने मुझे बिल्कुल व्यावहारिक रूप से समझाना चाहा, लेकिन तभी मुसद्दी को दौरा आया और वह चीखा—लेकिन मुझे अभी बताओ क्या स्कार चल रहा है।'

मुसद्दी लाल की चीख से दफ्तर म सन्नाटा छा गया और दफ्तर का साहब बाहर निकल आया। उसन मुसद्दी की चीख को पूरा सम्मान दिया और पास आकर बोला— चिन्ता मत करो मुसद्दी भारत के चार पर चवालीस चल रहे हैं। मुसद्दी का चेहरा लटक गया और वाम पुन अपने चैम्बर म लौट गया। मैं मुसद्दी लाल के क्रिकेट म लौट गया। प्रेम पर नतमस्तक हो गया। मेरी आँखें श्रद्धा स श्रद्धांजलि रूप म मुसद्दी लाल के सामन झुक गई।

आया क्रिकेट झूम के

—प्रेम जनमेजय

क्रिकेट का मौसम आ गया है। चौके, छक्के, आउट आदि की गड़गड़ाहट दसो दिशाओं में गूंज रही है। लोग हार जीत की वर्षा में भीग रहे हैं। सजोकर रखे गए बैट-बॉल को धूप दिखाई जा रही है। नन्हे मुन्ने किलकारियां मारते, हाथ में कपड़े धोने का डंडा पकड़े मोहल्ले में उतर पड़े हैं। खिड़कियों के शीशे टूट रहे हैं, खेलने वालों के सिर फूट रहे हैं।

ट्रांजिस्टरों की बिक्री बढ़ गई है। कानों को 'ट्रांजिस्टरी' का छूत का रोग लग गया है। जिसे देखो कानों से जेबी ट्रांजिस्टर लगाए कभी मुसकरा रहा है और कभी उदास हो रहा है। ऐसी दशा में किसी को देखकर आप यह सोच सकते हैं कि कहीं 'बेचारे' के कान में दर्द तो नहीं। कैसे कान को दबाए, बिना इधर-उधर ध्यान दिए भागा चला जा रहा है।

आप सहानुभूतिपूर्वक पूछते हैं, 'क्यों भाई साहब, कान में क्या हो गया?'

भाई साहब जवाब देते हैं, "सोलह पर दो।'

आप आश्चर्यचकित खड़े हैं। गुत्थी सुलझा रहे हैं कि 'सोलह पर दो' किस बीमारी का नाम है। सिर नोच रहे हैं। परन्तु भाई साहब आपको स्कोर बताकर शान्त भाव से आगे बढ़े चले जा रहे हैं। 'कदम कदम बढ़ाए जा, क्रिकेट के गीत गाए जा'।

ऐसे में आप किसी क्रिकेट प्रेमी सम्बन्धी के घर जाएंगे तो वहां भी ऐसा ही आदर-सत्कार मिलेगा। बच्चे मोहल्ले में क्रिकेट के माध्यम से

खिडकियो के शीशे तोड रहे हैं और पति पत्नी सिर से सिर जुटाए खेल का विश्लेषण कर रहे है। पतिदेव के पास राशन लाने का समय नही है और गृहस्वामिनी के पास खाना बनाने का। ऐसे म आप पहुँचते है। पति पत्नी रेडियो से कान टिकाए बस आपकी ओर देख भर लेते है। आप पूछते है 'क्या हाल चाल हे आप लोगो के ?'

चालीस पर एक, बैठिए।" जवाब मिलता है।

कैसा चल रहा है ?"

'गावस्कर बढिया नही खेल रहा है।'

बच्चे ठीक ठाक है ?'

"बाथम न सारी पाच विकटें ले ली।"

आपकी प्रमोशन का क्या हुआ ?'

"मैच गया हाथ से। विश्वनाथ इस बार फ्लाप गया। अब बूढा हो गया है। मिडिल आडर म किसी यग को लाना चाहिए।'

'अच्छा, हम चलत है।'

अर, बठिए न कमेंटरी सुनकर जाइएगा। आप तो बहुत दिना बाद आए है। कमला, देना इन्हें भी एक ट्रांजिस्टर। तकल्लुफ मत करिए आराम से सुनिए बडा मजा आ रहा है। शास्त्री सेंचुरी मार जाएगा। आपका क्या खयाल है ? लगाते है दस-दस की शत ?'

आप हाथ जोडकर उठ जाते हैं। वे रेडियो स चिपके चिपके आपको विदा कर देत हैं।

क्रिकेट प्रेमी जब आपके घर आते हैं, तब भी यही माहौल है। आप उनसे चाय पूछते हैं और वे आपसे स्कोर पूछते हैं।

दफ्तरो म काम ठप्प पड गया है। साहब चपरासी को बुलाते हैं और चपरासी ने कानो म ट्रांजिस्टर चिपका रखा है। (साहब का ट्रांजिस्टर उनकी दराज म पडा है) कुछ क्रिकेट प्रेमियो ने सी० एल० बचाकर रखी है वे उनका सदुपयोग कर रहे है। कुछ कम ही दफ्तर से कल्टी मारकर घर बैठे हैं।

मैच शुरू हो गया है। दीनानाथजी की फाइल आगे नहीं बढ रही है। वह बडे बाबू के सामने गिडगिडा रहे हैं। और बडे बाबू ट्रांजिस्टर कान मे

लगाए जैसे आध्यात्मिक ध्यान मे लीन हैं । ध्यान भग होने पर कहते है, "आपसे कितनी बार कहा कि लच मे आइएगा । लच से पहले आपका काम नही होगा । देखते नही मैं कितना व्यस्त हूँ । बडे बाबू फिर ध्यान मग्न हो जाते है । कितने कर्तव्यनिष्ठ हैं हमारे सरकारी कर्मचारी, जो लच के समय मे ही काम करते हैं । काम के आगे उन्हे अपने भोजन तक की चिन्ता भी नही है । ऐसा देश क्या न उन्नति करे, क्यो न सोने की चिड़िया कहलाये ?

प्रेमिका अपने प्रेमी से रुष्ट बैठी है । वह विलाप कर रही है, "हे प्रिय, तुम झूठे हो, मक्कार हो ! तुम्हे मुझमे सच्चा प्रेम नही है । तुम केवल बातें बनाना जानते हो । कहाँ तुम आकाश म तारे तक तोडकर लाने के वायदे करते थे और अब मैंने तुमसे क्रिकेट मैच के टिकट लाने को कहा तो तुम भीड से डरकर खाली हाथ लौट आए । निर्दयी एक टिकट तो ले आते । अब मैं यह पाच दिन कैसे काटूगी ? झूठे, दगाबाज, निर्दयी, क्रिकेट द्रोही, मैंने तुम्हारा प्यार देख लिया । मैंने अब रवि शास्त्री से विवाह करने का फैसला कर लिया है । तुम मुझे भूल जाओ ।'

बेचारा प्रेमी चरणो मे बैठा कसमे खा रहा है गिडगिडा रहा है, "हे प्रिये, मुझ पर रहम खाओ, इतना अत्याचार न करो । मैंने बड़ा ही चरण पकडे, एप्रोच लडाई, सुबह छह बजे जाकर लाइन म खडा हुआ पर तु टिकट नहीं मिली । इसमे मेरा दोष नही है, यह जालिम जमाना है ही ऐसा । यह दो दिलो को मिलने नही देता । मैं सच्चे प्यार की कसम खाता हूँ कि जब तक हजार मील दूर होने वाले मैच की टिकट नही ले आऊँगा और मच तुम्हे दिखा नही दूगा चैन म नही बैठूगा । चाहे टिकट लाने मे मेरी जान ही क्या न चली जाए अब म तुम्हे मैच दिखाकर ही अन्न जल ग्रहण करूँगा ।

यह कहकर प्रेमी तलवार की धार स भी तेज, प्रेम के मार्ग पर चल देता है । वाह क्रिकेट, तेरे क्या कहने ! तू कैसी-कैसी परीक्षा लेता है !

एक परीक्षा सरकार भी दे रही है—प्रजातन्त्र को राह पर चलने की परीक्षा । सरकार निरन्तर कुछ न कुछ ऐसे काम करती रहती है, जिनके विरोध म विरोधी दल बोलें और सरकार इस परीक्षा मे खरी उतर सके

कि देश म प्रजातन्त्र है। विरोधी दल भी अपने अस्तित्व को वनाए रखने के लिए चालते रहते हैं। सरकार क्रिकेट मैच की कमेंटरी आकाशवाणी से प्रसारित कर रही है और विरोधी दल कानों मे जेवी ट्रांजिस्टर चिपकाए विरोध कर रहा है। प्रजातन्त्र बचा हुआ है।

कैसा सुन्दर और सुवासित है यह क्रिकेट का मौसम जो बूढे दिलो को भी जवान कर देता है, जो जड वस्तुओ मे भी चेतना भर देता है जो सारे देश को एक लडी म पिरा देता है, जिसमे क्रिकेट के अधे को क्रिकेट ही क्रिकेट दिखाई देता है। ऐसे मौसम को मैं वारम्वार नमन करता हूँ। ऐसे मौसम का स्वागत है, यह वार-बार आए।

इमरती लाल को क्रिकेट टीम मे शामिल करे

—डा बालेन्दु शेखर तिवारी

क्रिकेट का मौसम आ रहा है। जाडे की अगवानी करने वाली विकटें तयार हो रही हैं। नई गेंद की तरह स्पिन खाने वाली पचरगी विचार-धाराएँ सभी दिशाओ म भटक रही हैं। ट्राजिस्टरो की सफाई घर-घर मे चल रही है। टी० वी० सेटो की बिक्री बढ गई है। गलियो मे कोई बच्चा अब गिल्ली डडा नही खेल रहा है। हर गली मे नए-नए पिच पिचपिचाने लगे ह। पत्र पत्रिकाओ के सम्पादकगण क्रिकेट विशेषज्ञों के योग्य मैटर का एकत्रीकरण युद्ध-स्तर पर करने लगे हैं। हर ओर बस एक ही शोर है कि आ गया, आ गया—क्रिकेट का मौसम आ गया। क्रिकेट के इस लोक-हितकारी मौसम की छटा अपन आप मे इतनी मनोहारी हाती है कि कवियो और रसिको का मन लोट पोट हो जाता है। इस सुहाने मौसम म हर तरफ बैट और बॉल, विकेट और कैच, आउट और लेगबिफोर की बहार रहती है। दीवारो से लेकर पान की दूकानो तक गावस्कर और कपिलदव की तस्वीरें सुपर फिल्मी कलाकारो को अपदस्थ कर विराजमान हो जाती है। मिनी स्कटधारिणी कन्याओ स लेकर जीसशोभित कुलदीपो तक के बीच केवल क्रिकेट का ही कौतूहल व्यापा रहता है इस मौसम म। इस सीजन मे धराधाम पर अवतीर्ण हानवाले राष्ट्र के नवजात नागरिक भी आँख खोलत ही पहला राष्ट्रीय सवाल यही करते हैं कि—नत, स्कोर कितना है ? स्कार की चिता से आकुल जनता की बचैनी का मौसम आ रहा है। लेकिन, भारतीय क्रिकेट कट्रोल बोड की चयन समिति तो लगातार चिन्तन के

चाउसर झेलती रही है। परम प्रसन्नता का प्रसंग है कि चिंतन के महासागर में गहरे पानी पैठकर क्रिकेट के विधाताओं ने यह फैसला कर लिया है कि आगामी मैचों के लिए कपिलदेव ही भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान होंगे। अन्यथा अभी तक चाय के स्टालों से लेकर मूंगफली की महफिलों तक यही विषय शास्त्रीय विवाद का कारण बना हुआ था कि हिंदुस्तानी टीम की कप्तानी किसे दी जानी चाहिए ? परम पिता को असंख्य धन्यवाद कि अब यह संकट समाप्त हो गया है और लोग चिंतामुक्त होकर खा पी रहे हैं।

लेकिन क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड का काम अभी समाप्त कहां हुआ है ? अभी तो शेष समूची टीम का चुनाव बाकी है। इस सन्दर्भ में हमारा सविनय निवेदन है कि हमारे मुहल्ले के बाबू इमरतीलाल को भारतीय क्रिकेट दल में अवश्य शामिल किया जाए।

आप कहेंगे, कौन हैं ये श्रीयुत इमरती लाल ? तो सज्जनो और सज्जनियो श्रीमान् इमरतीलाल हमारे मुहल्ले की एक बहुमुखी प्रतिभा का नाम है। ऑल इन-वन श्रेणी का महामंडित व्यक्तित्व है उनका। जैसे लोग दिल्ली जाकर लाल किले और कुतुबमीनार के दर्शन अवश्य करते हैं बस ही हमारे मुहल्ले के लोग हर आगंतुक से उनका परिचय जरूर कराते हैं। हर आगंतुक को उनसे मिलकर असीम प्रसन्नता होती है और उस समय तक होती रहती है—जब तक हमारे इमरतीलाल अपने मौलिक चिंतन की रागिनी छेड़कर प्रसन्नता को बाई पास का रास्ता नहीं दिखा देते। दरअसल श्री इमरती लाल की मौलिकता यही है कि उनके पास प्रश्नों और शंकाओं का कभी न समाप्त होनेवाला खजाना है। फिल्म और राजनीति, सट्टा और संसद, कुश्ती और जादू, किचन और क्रिकेट—गरज यह कि इस असार संसार में पाई जाने वाली हर चीज में बाबू इमरतीलाल का भरपूर दखल है। लेकिन क्रिकेट तो उनकी पहली पसन्द है। टैस्ट मैच के दिनों में उनकी शोभा देखकर नयनों की वाणी और वाणी के नयन लापता हो जाते हैं। हर कदम पर चिंता करते हुए श्रीयुत् इमरतीलाल एकदम क्रिकेटमय हो जाते हैं। एक दिवसीय मैचों के समय तो वे पूरे फॉर्म में आ जाते हैं। जैसे सुस्त बालर की गेंद को बल्ला दुतकार देता है, ठीक वैसे ही क्रिकेट के मौसम में वे

संसार के [illegible]
उनकी [illegible]
इमरतीलाल [illegible]
लगा कर [illegible]
होता है कि [illegible]
लोग तो [illegible]
पिच की [illegible]
हुआ [illegible]
गेंद को [illegible]
पर [illegible]
के [illegible]
बाद [illegible]
[illegible]

वे साथ भारतीय क्रिकेट में उभर रहे थे कि महज एक गेंद के गुम हो जाने के कारण यह देश एक महान गेंदबाज की सेवाओं से वंचित हो गया। इसके बाद इमरतीलाल जी लगभग रिटायर चल रहे हैं लेकिन राष्ट्र को उनकी प्रतिभा का सदुपयोग अवश्य करना चाहिए। इसीलिए, प्रार्थना है कि इमरतीलाल को टीम में शामिल करें।

जैसा कि शास्त्रों में कहा गया है कि क्रिकेट भाग्य का खेल है। इमरतीलाल जी भारतीय क्रिकेट के लिए परम भाग्यशाली साबित होंगे। वे निष्ठापूर्वक क्रिकेट से प्रेम करते हैं तथा उसके वर्तमान और भविष्य के प्रति परम सचेत हैं। इस संलग्नता का हाल यह है कि जब वे टी० वी० के सामने मैच देखने सशरीर बैठते हैं तो न उन्हें भूख लगती है और न प्यास सताती है। अपने देश की टीम के किसी खिलाड़ी के आउट होने पर वेदना के मारे वे पिघलने लगते हैं। एक बार तो वे ऐसे क्रिकेटमय हुए कि हर हिन्दुस्तानी विकेट के पतन के साथ साथ यह संभावना तेज होने लगी कि *किसी भी क्षण टी० वी० स्क्रीन खण्ड-खण्ड हो जाएगा।* इसी तनाव के बीच सहसा उनके सुपुत्र क्रम संख्या तीन सीन पर हाजिर हो गए और घबराए हुए बोले—जल्दी घर चलिए पिताजी, मकान की ऊपरी मंजिल में आग लग गई है। इमरतीलाल तनिक भी विचलित नहीं हुए। उनके नेत्र-द्वय टी० वी० की दिशा में डटे रहे। बेटे से उन्होंने फरमाया—'भागो यहां और भी बुरी हालत है। अपना कप्तान ही आउट हो गया है।' क्रिकेट का इससे सुन्दर प्रभाव और क्या हो सकता है कि आदमी दीन दुनिया से बेखबर हो जाय।

अनन्य क्रिकेट प्रेमी होने के साथ-साथ उनमें और भी कई विशेषताएँ हैं। उनमें और अजहरुद्दीन और श्रीकान्त में क्या भेद है? केवल नाम ही का तो अंतर है। क्या इमरतीलाल भारतीय नागरिक नहीं हैं? क्या वे वयस्क नहीं हैं? हमारे स्वनामधन्य इमरतीलाल कपिलदेव और वेंगसरकर की ही तरह क्रिकेट के सनातन रसिक हैं। वे साकार क्रिकेट हैं। क्रिकेट में लीन होने के कारण एक बार तो वे स्वर्ग की टीम में शामिल होते-होते बचे थे। भाग्यशाली रहे कि उनकी साइकिल ने सड़क का दाहिना किनारा नहीं लिया वरना तीन मोटरें और एक ट्रक पूरी तरह तैयार थे, उन्हें कुच

कर समार से आउट करने के लिए। हम सबकी दिली तमन्ना है कि इमरतीलाल जी को चास अवश्य मिले। उनको भारतीय टीम म चुन लेने का मात्मात लाभ यह होगा कि हिंदुस्तान के हारने का गम जनता को नहीं सताएगा। लोग यह तो नही कहेंगे कि कपिलदेव और रवी शास्त्री खेलने गए और हार गए। अरे, जब हारना ही है तो टीम म हमार इमरतीलाल क्यों नही, इमरतीलाल क शून्य पर ससम्मान आउट हो जान पर भला किसे गम होगा ? वैसे हारन की नौबत नही आएगी और इसका सारा श्रेय बाबू इमरतीलाल को ही देना होगा। वे पूरी तन्मयता के साथ इन दिनो मेघ-मल्हार की प्रक्टिस कर रहे हैं, ताकि वक्त जरूरत मेघो को निमत्रणपत्र भेज कर हारती हुई टीम की इज्जत रक्षा की जा सके। इसलिए, कृपया इमरतीलाल को क्रिकेट दल म अवश्य शामिल करें। परीक्षा प्रार्थनीय।

मिस्टर कमेंट्रीदास

हरीश नवल

यूं तो वे सी० डी० मल्होत्रा यानि चरणदास मल्होत्रा हैं लेकिन 'यथा गुण तथा नाम' के अनुसार दफ्तर वालों ने सी० डी० की तर्ज पर उनका नाम 'कमेंट्रीदास' रखा हुआ है। जैसे नई बहू ससुराल के लिए दिये गये नाम को जीवन भर अपनाती है, वैसे ही हँसी-खुशी चरणदास जी ने यह नाम स्वीकार कर लिया है। क्रिकेट-कमेंट्री उनका व्यसन, उनकी कला, उनका विज्ञान यानी उनकी सब कुछ है। वैसे भी यदि वे गौर से देखे जाएँ तो क्रिकेट के साथ उनके रिश्ते का बोध भी हो सकता है। क्रिकेट की नई गेंद जैसी चमकती उनकी चाँद को यार लोग 'गद चरी' कहते हैं। आँखें मानो विकेट गाड़ने के लिए सूराख किए गए हों। विकेट की नोक सरीखी धारदार नाक डी० टी० सी० की भीड़ छाँटने की क्षमता रखती है, उनकी फेफड़ात्मक छाती जैसे दो बैट औंधे रखे हों। गर्मियों में वे सफेद कमीज, सफेद पैंट और सफेद कपड़े के जूते पहनते हैं तथा सर्दियों में उनकी शोभा 'एम्पायर' जैसे सफेद चोगे से निराली ही होती है।

कमेंट्री के शौक ने उन्हें कुख्यात कर दिया है। कहीं भी, किन्हीं टीमों की मैच की कमेंट्री आ रही हो, वे उससे अछूते नहीं रह सकते। इधर जब से हिन्दी में भी कमेंट्री आने लगी है वे पूरे मूड में हैं। पहले अंग्रेजी की कमेंट्री सुनते तो अवश्य थे किन्तु अधिकांश सिर में से फुलटास निकल जाती थी। जब कमेंटेटर जरा जोश में बोलता तो कहते थे 'आहा'! धीरे से कुछ कहता तो बोलते थे, 'आह हो'।

चावड़ी बाजार म एक भस थी जो जिस दिन पजाबी टप्पे सुनती, उस दिन बेहद दूध देती थी, वैसे वैस ही 'विचित्र किन्तु सत्य' यह है कि कमेंट्री के दिनो मे चरणदास मल्होत्रा कमेंट्री सुनते-सुनते आफिस म ऐसे डट कर काम करते है गोया 'सिलोआन पर पीलिंडग कर रहे हो। 'कमेंट्री-इज्म के शिकार उनके बॉस भी है जो मैच के रोमाचक क्षणा (प्राय फाइनल दिवस) म खुद भी छुट्टी पर होते है और कमेंट्रीदास को भी 'कैजुअल दे देते हैं।

इस मुई कमेंट्री ने उन पर कई सितम भी ढाए है। पिछला इतिहास देख ता कई दुख भरी गाथाएँ मिलेंगी। पिछली बार न्यूजील ड व भारत के बीच हुए तीन टस्ट मैचो की तीन टेस्ट क्स्सिा की बानगी दखिए ?

पहले टस्ट मच के कैजुअल वाले दिन उनके साथ कैजुअलटी हो गई। उनका ट्राजीस्टर मेडिकल पर था, अत फतहपुरी मे घर के नीचे पान वाले की दुकान पर घण्टो पान चबाते हुए उसके रेडियो से कमेन्ट्री' सुन रहे थे। दजना और भी लोग वहाँ मौजूद थ, जिनमे दस प्रतिशत (सी० डी० सहित) तो वास्तव मे ही कमेंट्री सुन रहे थे, चालीस प्रतिशत वसे ही देखा-देखी चेहरे के भाव बदल रह थे। पच्चीस प्रतिशत, उत्सुकता के वशीभूत थे, पन्द्रह प्रतिशत 'मोबाइल' थे (याने उनका आवागमन किसी न किसी कारण या शका से जारी था) बाकी दस प्रतिशत जेबकतर उच्चक्के व सम्बधित कोटियो के जीव थे। अचानक एक पच्चीस प्रतिशत वाले 'चदगीराम' ने घोषणा की, कि "भारत जीतेगा और जरूर जीतेगा" चरणदास जी ने झट कह दिया कि, भारत जीत नही सकता, पिच' हेल्प ही नही कर रही, पान की पिचकारी फेंक कर वक्तव्य पूरा किया बाल स्पिन नही ले रही है, कमेंट्री सुनते सुनते यहाँ बाल सफेद हो गए है तजुर्बा कह रहा है की भारत सक्ट में है, जीत सकता ही नही। किन्तु पच्चीस प्रतिशत वाला भारत को जिताने पर आमादा हो रहा था, वह भी अड गया, बल्कि अकड गया। चोंचे लडी पहलवान बाला, 'अगर भारत जीत गया तो बता तू कुछ देगा'? जो तुम कहोगे वही करूँगा चरणदास न उत्तर दिया। अब चरणदास पर खुदा की मार कि भारत जीत गया, अब तो वे क्लीनबोल्ड' हो गए, पहलवान जाने क्या चाहे वे उसकी

सेहत देखकर काप उठें। पहलवान ने जीत की खुशी मे एक ठहाका लगाया और बोला, 'क्यो बे, बता अब क्या करेगा ? 'जो कहो' चरनदास न सह मते हुए कहा। पहलवान ने कुछ सोचा, इधर-उधर दखा, फिर आदश दिया, 'देख, वा जो सफाई करने वाली सिर पर कूडे का टोकरा उठा कर ले जा रही है, बस उसका दुपटटा छू कर आ' (पहलवान, शायद बचपन म 'छुअम छुआई का चम्पियन रहा होगा या 'सेनेटरी इसपक्टर,' के सलेक्शन मे फेल हो गया होगा)

चरणदास तो कुछ क्षण भौचक्के हो भीड की चुभती नजरें सहन करते रहे, फिर लपके 'लाग-आन' पर जा रही सफाई करने वाली के दुपटटे को कैच करने। भीड की चुभती नजरें अब कौतूहल से भर गई थी पहलवान मूछो पर ताव दे रहा था। उधर चरणदास जी से दुपटटा छुआ नही जा रहा था पीछे से भी छूना कठिन था क्योकि वह चेहरे को लपटता हुआ सिर पर था। वह चरणदास जी के लिए 'गुडलग्थ की गेंद हो रही थी हार कर चरणदास जी ने 'डाई मार कर अपना हाथ उसके चेहरे की ओर किया, वह अचानक आई बला को देख सकपका गई, उसने जैसे ही पतरा बादला उसकी कमर लचकी और कूडे का टोकरा 'भच्च' से गिरा चरण-दास के सिर पर, जिससे सनकर व गोबर गणेश बन गए। इधर पान की दुकान पर किलकारियाँ पीक बिखेर रही थी। पहलवान ऐसे खुश था माना 'भारत-केसरी बना दिया गया हो और बेचारे चरणदास खिसियान हाकर खम्भा तलाश रहे थे।

खैर साहब वीर वही है जो कभी पीछे न लौटे उस दुघटना के बाद भी चरणदास जी ने न कमन्ट्री सुननी बन्द की, न अटकलबाजी व शत लगानी छोडी, बल्कि कमेन्ट्री की ओर अधिक ध्यान दने लगे। दूसरे टैस्टमैच क एक दिन व घर म रेडियो के आगे धरना दिए एडी रौबट का खेल सुन सडे सेलिवेट कर रहे थे। ऐडी रौबट दे रन पर रन बनाय चले जा रहे थे और चरणदास को खिजाए चले जा रहे थे। चरणदास विल पावर लगा रहे थे कि वह आउट हो जाए किन्तु वह हो नही रहा था। वे बीच म रेडियो बन्द कर देते थे, लकिन वह फिर भी रन पर रन बनाए चला जा रहा था। वे दाँत पीस रहे थे, वह चौका लगा रहा था। वे क्रोध म थ, वह

जोश म था। वे खिज रहे थे, वह आक्रमण कर रहा था। जसे ही उसन शतक पूरा किया, पहले तो चरणदास ने अपना सिर पीट लिया फिर क्रोध म दुहत्थड दे मारा बेचारे प्रागैतिहासिक रेडियो पर, वह मार न सह सका और 'मिली मिड आन' से 'मिली मिड आफ' की ओर लटक गया। वैज्ञानिक अभी तक विद्युत को शॉक-रहित नही कर पाए हैं, अत कमेन्ट्रीदास चीत्कार कर 'शाट फाइन लेग' की ओर और सिर खुलवा बैठे।

परन्तु वाह रे कमेन्ट्री के शौकीन, आदमी हो तो ऐसा। हिम्मत न हारी कमेन्ट्री न छोडी! अब तीसरा किस्सा ही लीजिए। तीसरे व अतिम टैस्ट मैच के दूसरे दिन उन्हें बॉस से आदेश प्राप्त हुआ कि कुछ जरूरी फाइलें ब्राच आफिस मे पहुँचानी हैं। वे अपनी स्कूटर पर फाइलें और चपरासी को 'बैंक लिफ्ट' देकर चल पडे हुक्म-अदुली करने। (भारत की स्थिति खराब थी, दिग्गज बल्लेबाज आऊट हो चुके थे और गेंदबाज वेंकटराघवन बल्ला सम्भाले हुए थे) चरणदास ने ट्राजिस्टर पीछे बैठे चपरासी को पकडा रखा था और वह उनके आदेश के अनुसार ट्राजिस्टर को उनके कानो के पास 'कवर' करके 'ट्राजिस्टर कीपिंग' कर रहा था। स्कूटर से भी तेज चल रही थी कमेन्ट्री। एक ढेले से दो शिकार हो रहे थे—आफिस की कार्यपूर्ति और कमेन्ट्री-श्रवण।

वेंकटराघवन भी उस दिन जोश मे था, अच्छा स्कोर खीच रहा था। जैसे ही उसने पचास रन पूरे किये, कमेंट्री दास की बांछें खिल गईं, खुशी से दोनो हाथ ऊपर उठाकर चिल्लाए, 'वा वेंकट, वाह! जिता रह मेरे शे ' पर वेंकट विकेट हो गया। स्कूटर बेकाबू हो कर 'स्टेट ड्राइव' हो गया और पीछे आ रही बस से 'पुश' खाकर पैंतालीस के कोण मे नमित हो गया। वे और वह दोनो स्कूटर से जम्पिग आऊट होकर इधर उधर जा गिरे।

प्रिय चरणदास जी तीन मास तक इरविन अस्पताल के जनरल वार्ड मे अपनी फुटवर्क से रहित हो गए टागें लिए 'स्वीप' लेते रहे। लेकिन उन्हें कोई दुख नही। कोई अवसाद नही था क्योकि बगल म उनका नया ट्राजिस्टर बराबर सहवास करता रहा और उन्हे इधर उधर के क्रिकेट मैचो की कमेन्ट्री सुनाता रहा।

क्रिकेट मे भूगोल की भूमिका

यज्ञ शर्मा

भूगोल, क्रिकेट म बहुत ही महत्वपूण भूमिका अदा करता है। मसलन भूगाल के कारण ही तो हम क्रिकेट खेलते हैं। न हम लोग भूगोल म वहाँ होते जहा है, न अग्रेज हमारे यहाँ आते न वे अंग्रेजी व क्रिकेट यहा छोड कर जाते। मान लीजिए भूगोल मे हम वहाँ हाते जहाँ रूस है तो क्या हम क्रिकेट खेलते ? या फिर वहाँ होते जहाँ अमरीका है या जमनी है या स्विटजरलण्ड या पृथ्वी के अधिकाग देग हैं तो क्या हम क्रिकेट खेलते ?

वैसे भूगोल म हम वहा नहा होते जहाँ है तो हम शायद हाकी भी नही खेलत। हॉकी भी तो हमारे यहा अग्रेज लाये थे। लेकिन, ऐसा लगता है कि अग्रेज हॉकी हमारे यहाँ छोड कर नही गये हम ही न जबरदस्ती रख ली थी। लेकिन आजकल हॉकी की बात करना ठीक नही है क्योकि मौसम क्रिकेट का है। वसे भी हॉकी की हालत हमने अपनी आजादी जैसी कर दी है।

भूगोल, क्रिकेट मे बहुत ही महत्वपूण भूमिका अदा करता है। कसे? यह समझने के लिए जरा इस स्थिति का जायजा फरमाइये —फज कीजिए टेस्ट मैच चल रहा है। अब टेस्ट मच तो दो देशो के बीच ही होते हैं। देश भौगोलिक इकाइयाँ होत हैं। इसलिए भूगोल के बिना टेस्टमच सभव ही नही है। सभी क्रिकेट विशेषज्ञ जानते हैं कि अपनी धरती पर मच जीतन म भूगाल बहुत मदद करता है। मेजबान खिलाडियो को पिच की सही स्थिति का ज्ञान होता है। अपन मदान मे खेलन का अनुभव मच जिताने म काफी सहायक सिद्ध हाता है। लेकिन मैच जीतन म सबस अधिक काम आता है

अपायर का भूगोल ज्ञान।

मान लीजिए अपायर भूगोल का जानकार है। उसके देश के खिलाडी क्षेत्ररक्षण कर रहे हैं। मेहमान देश के बल्लेबाज जमे हुए हैं, दनादन रन बना रहे हैं। बल्लेबाजा को उखाडने के लिए मेजवान देश के कप्तान ने गेंद बदल दिया। आप भूलें नही कि अपायर भूगोल का जानकार है। तो नए गेंदबाज ने गेंद फेंकी। बाहर की ओर जाती हुई गेंद बल्लेबाज के पाँव म लगी बल्लेबाज के पास खडे क्षेत्ररक्षक चिल्लाये, 'हाउज दट'।

क्रिकेट मे 'हाउज दैट' चिल्लाना उतना ही जरूरी होता है, जितना गजल के कायक्रम मे वाह वाह करना। खर, तो क्षेत्ररक्षक चिल्लाये हाउज दैट अपायर जानता है कि बल्लेबाज आउट नही है। गेंदबाज जानता है कि बल्लेबाज आउट नही है। इसलिए गेंदबाज अपायर से पूछता है, 'भाईसाहब बरसात कहाँ से होती है?' मैं आपको फिर एक बार ध्यान दिला दू अपायर भूगोल का जानकार है। अपने भूगोल के साथ वह बेईमानी नही कर सकता। इसलिए वह उगली बादलो की ओर उठा कर इशारा कर दता है, 'वहाँ से'।

हालाकि अपायर ने कोई बेईमानी नही की लेकिन बल्लेबाज पडाल मे वापस चला गया। अपायर का भूगोल ज्ञान, बचारे बल्लेबाज को ले डूबा। यहाँ यह प्रश्न उठ सकता है कि बरसात ऊपर के बजाय नीचे से होती, तो क्या होता? तब शायद उगली नीचे दिखाने से बल्लेबाज आउट हुआ करते, नहीं तो गेंदबाज दूसरा कोई प्रश्न ढूढ लेते, जिसके उत्तर मे उगली ऊपर उठा ली जाती। भूगोल मे उगली ऊपर उठाने की सभावनाओ की कोई कमी तो है नही। बहरहाल क्रिकेट का पीछा भूगोल से छूटने वाला नही है।

हमारा भूगोल अहिमा से भरा पडा है। बस, एक राजनीति को छोड दें, ता दश के हर क्षेत्र मे अहिसा का ही बोलबाला है। यहाँ की मिट्टी म अहिसा है, हवा मे अहिसा है दसो दिशाओ मे अहिसा है। दूसरे देशो के साथ यह दिक्कत नहीं है। स्वाभाविक है कि हमारी अहिसा का हमारी क्रिकेट पर भी पडा है।

अहिसा के कारण ही हम अब तक अच्छे तेज गेंदबाज र

पाये। बहुत कोशिश की, किसी तरह मध्यम गति तक पहुँचे जब दूसरो के गेंदबाज, सनसनाती हुई तेज गेंद फेंक्ते रहते हैं, हमारे भाई लोग गेंद को टन कराने की फिक्र मे दुबले होते रहत हैं। गेंद टन न हा, तो हम पिच का रोत हैं दूसरे उस हालत मे बपर उछाल देत हैं।

दूसरो के बल्लेबाज जहा बपर आने पर चौका छक्का ठोक देत है, हमारे अहिसावादी अपनी कनपटी सामने कर देते है। अहिसा का उसूल है कि एक कनपटी पर चोट लगे तो दूसरी भी सामने कर देनी चाहिए हमारे बल्लेबाज बस यही चूक जाते हैं। आखिर बेचारे करें भी क्या ? पहली कनपटी पर गेंद लगने के बाद होश रह तब तो दूसरी कनपटी सामने करें न ?

अहिंसावादी रुख खेल भावना क लिए तो ठीक होता है, लेकिन खेल के लिए भी ठीक होता है, यह नहा कहा जा सकता। जो अहिसावादी नही है, उनकी तारीफ हमेशा यह होती है कि वे खेलते अच्छा हैं। हमारी तारीफ अधिकतर यह होती है कि हम हारते अच्छा हैं। हारने के मामले मे थोडे स अपवादो को छोड कर हम लगातार अपनी परपरा से जुडे हुए है। कभी कभी जब मन होता है कि अब और नही हारना चाहिए तो हम टीम का कप्तान बदल देत हैं।

हमारे भूगोल मे खेल भावना बहुत प्रबल है। हम क्रिकेट भी इसी भौगोलिक भावना के अनुरूप खेलते हैं। इतिहास साक्षी है कि जब कभी विदेशी हमारे भूगोल मे घूमे, हमारे लोग बडी खेल भावना के साथ उनसे लडे। अब हार जीत तो खेल व युद्ध म लगी ही रहती है। उनम प्रभावित न होना खेल भावना व सास्कृतिक श्रेष्ठता का प्रतीक है। बस खेल भावना की आवश्यकता हारने वालो की ही अधिक होती है। जाहिर है कि हमारे यहाँ इस भावना की कमी कभी नही रही। जिसने भी हमे हराया ऐसे हर व्यक्ति का, हमने अपने यहाँ चन से बसने दिया। अब अग्रेजो को यहाँ बसना नही था, तो वे वापस चले गये। हमारा कोहेनूर हीरा और भवानी तलवार अपने साथ ले गये, अपनी अग्रेजी व क्रिकेट यहाँ छोड गये। वैसे अग्रेज सभ्य समझे जाते हैं। हो सकता है वे जानबूझ कर छोड कर न गए हो। अग्रेजी व क्रिकेट गलती से यहाँ रह गये हो और हम मुफ्त म मिली

चीजो का लालच न छोड पाने के कारण धडल्ले से उनका उपयोग किय जा रहे हों।

हमने कोहेनूर वापस पाने की बहुत कोशिश की, लेकिन अंग्रेजा ने दिया नही। अतुले साहब तो भवानी तलवार लाने लदन तक गये, पर अंग्रेजा ने वह भी नही दी। आखिर क्यो देत ? हम भी ता उनकी अंग्रेजी व क्रिकेट का इस्तेमाल कर रहे हैं। हाँ, यदि अतुले साहब, अंग्रेजी व क्रिकेट अपने साथ ले गये होते कि जेंटिलमैनो, आप लोग अपनी य चीजें हमारे यहाँ भूल आये थे, लीजिए मैं ले आया हूँ, तो जेंटिलमैन लोग भवानी तलवार तो शायद वापस कर ही देते

लेकिन यदि हम अंग्रेजी व क्रिकेट वापस कर देते, तो उनका क्या होता जो इन्ही के बल पर कायम है ? उनका क्या होता, जा अंग्रेजी तो सही बोलते नही मातृभाषा और भी गलत बोलते हैं ? उनका क्या हाता जो क्रिकेट को अपनी जीवन पद्धति बताते है ? कितने सारे लोग दुखी हो जाते बेचारे। सा जिस तरह हमारे क्रिकेट का छुटकारा हमारे भूगोल से नही हो सकता, हमारे भूगोल का छुटकारा भी क्रिकेट से नही हा सकता।

भूगोल का कुछ न कुछ असर तो हर खेल पर होता ही है। लेकिन, क्रिकेट व भूगोल का सबध कुछ विचित्र ही है। अब देखिए न विश्व मे कुल जमा साढे सात देश क्रिकेट खेलते हैं, परतु क्रिकेट मे विश्व कप आयोजन बडे जोर शोर से किया जाता है। समझ मे नहा आता कि जब अधिकाश देश क्रिकेट नही खेलत तो इस प्रतियोगिता को विश्व कप न कह कर साढेसाती प्रतियोगिता क्यो नही कहा जाता ?

क्रिकेट इज इंडिया एंड इंडिया इज क्रिकेट

घनश्याम अग्रवाल

भारत एक अर्ध विकसित देश है, और अर्ध विकसित ही रहेगा क्योंकि वह वर्ष में छह महीने अपनी प्रगति करता है और छह महीने क्रिकेट खेलता है। उसकी यह प्रगति भी खेले गये क्रिकेट पर निर्भर रहती है। भारत की रग-रग में रोम-रोम में क्रिकेट समा चुका है। भारत आज खुश है, प्रफुल्लित है उसमें उमंग है, जोश है कुछ करने को जी करता है क्योंकि आज हमारी टीम जीत गयी है। अगर हार जाती तो सारी उमंग, जोश, कुछ करने की ललक धरी की धरी रह जाती। वैराग्य लेने का जी करता है हमारी क्रिकेट टीम हार गयी और हम सांस ले रहे हैं, धिक्कार है ऐसे जीने पर।

हमारी नजर टी०वी० पर और कान ट्रांजिस्टर पर लगे हैं। क्रिकेट मोटो हो गया है भारत का। बैट, बाल और स्टंप्स हमारे जीवन के प्रतीक बनते जा रहे हैं। अशोक चक्र में हमें क्रिकेट का बाल नजर आता है और गावस्कर कपिलदेव भारत भाग्य विधाता। हम इस बात की चिंता नहीं कि उत्पादन मांग की तुलना में कम हो रहा है चिंता इस बात की है कि पहली पारी में हमारी रनों की संख्या विरोधी टीम के रनों से कम है। कुछ बच्चे देश के दूध के अभाव में मर गये यह जान कर उतना दुःख नहीं होता जितना दुःख यह जान कर होता है कि गावस्कर बिना कोई रन बनाये मध्यू की गेंद पर आउट हो गये। हमें सड़कों के गड्ढे दिखाई नहीं देते क्योंकि हमारा सारा ध्यान इस ओर है कि फलाँ मैदान की पिच कैसी है ?

हमारी शिक्षा, हमारी चिकित्सा, हमारा न्याय आदि सब कुछ क्रिकेट पर आकर रुक जाता है। रनों की संख्या के आधार पर बच्चे गिनती सीखते हैं, और चौकों-छक्कों के बल पर पहाड़े। टीम हारती है तो प्राइमरी का मास्टर डाँटते हुए कहता है—"बंद करो ये पहाड़े रटना। भारत की पोजीशन अभी डाउन चल रही है। भारतीय टीम यदि तीन चौके लगा कर बारह रन नहीं बना पाती तो तीन चौके बारह याद करने से क्या फायदा ?" उसकी आँख भर आती है। मरीज के चेहरे के पीलेपन का कारण डॉक्टर खून की कमी नहीं क्रिकेट की हार बताते हैं। कमेंटरी सुनते-सुनते ऑपरेशन किये जा रहे हैं। मुकदमे लड़े जा रहे है, फसले दिये जा रहे हैं। मरीज मर रहे हैं, बेगुनाह जेल जा रहे हैं, डॉक्टर उदास है, नर्स उदास है, वकील उदास है, जज उदास है, सब उदास हैं। भारत क्रिकेट में हार रहा है और हम उदास नहीं ? ऐसे कैसे हो सकता है ? इतने देशद्रोही नहीं हैं हम। दुर्घटना होती है तो जाँच अधिकारी कहता है—" इस समय भारत का 'लक' खराब चल रहा है। इधर दुर्घटना हो गयी, उधर भारत हार गया। कोई कुछ नहीं कर सकता। न गावसकर, न रेल ड्राइवर, सब कुछ 'लक' पर है।"

हमारे खिलाड़ी जब पिच पर दौड़ते हैं तो सारा देश दौड़ने लगता है। रेलें दौड़ती है, बसें दौड़ती हैं, फाइलें दौड़ती हैं, वक्तव्य दौड़ते हैं, सारा देश दौड़ता नजर आता है। विरोधी टीम गेंद को नहीं, हमारी चेतना को कैच करती है। हमारे खिलाड़ी आउट नहीं होते, सारा भारत आउट हो जाता है। मैच के दिनों में स्कूल, कालेज, अस्पताल, कोर्ट, कार्यालय, विधानसभा, लोकसभा आदि या तो क्रिकेट के मैदान में आ जाते हैं। या फिर क्रिकेट का मैदान वहाँ चला जाता है। छह महीने तक हमारे देश की विशाल सीमा सिमट कर छोटी हो जाती है—क्रिकेट के मैदान इतनी। भारत फोलो ऑन से खुद को बचा पायेगा या नहीं, इस समस्या के आगे हमें पंजाब की समस्या तुच्छ लगती है। मैच बंबई में हो या कलकत्ता में, मद्रास में हो या कानपुर में, जब हम मैच देखते हैं या कमेंटरी सुनते हैं, तब इस मामले में हम सब एक हैं। इस वक्त क्रिकेट का सीजन चल रहा है आपस में लड़ना ठीक नहीं। आपसी झगड़े छह महीने बाद करेंगे। हमारा आधा जीवन

राष्ट्र का, और आधा क्रिकेट को समर्पित है। इसलिए भारत अर्ध विकसित देश है और रहेगा।

हम इक्कीसवीं सदी में जायेंगे तो भी क्रिकेट के साथ। बिना क्रिकेट के हम कहीं नहीं जायेंगे। यदि हम क्रिकेट में लगातार जीतते हैं तो हम आगे बढ़ते जायेंगे। मगर जब जब हम हारेंगे, दुनिया रुके या न रुके, हम रुक जायेंगे। हम बढ़ेंगे भी और रुकेंगे भी। इस गति से हम एक न एक दिन इक्कीसवीं सदी में पहुँचेंगे निश्चित, मगर तब तक दुनिया बाइसवीं सदी में चली जायगी। बीसवीं सदी से भारत इक्कीसवीं सदी में पहुँचे, इसके लिए क्रिकेट में हमारी विजय लगातार जरूरी है। लगातार विजय के लिए जरूरी है कि हमारे पास एक ऐसा आल राउंडर हो, जो बैटिंग करे तो कम से कम पांच सेंचुरी बनाये बिना आउट न हो, और बोलिंग करे एक ओवर में छह खिलाड़ियों को आउट करे। जब वह फील्डिंग करे तो गेंद जमीन को छूने के पहले उसके हाथ आ जाये। तभी हम लगातार विजय प्राप्त कर इक्कीसवीं सदी में कदम रख सकते हैं। पर ऐसा अद्भुत आल राउंडर हम कहां से लायें? यही संकट भारत के सम्मुख है। अब तो ईश्वर ही हम इस संकट से छुटकारा दिला कर इक्कीसवीं सदी में ले जा सकता है।

हम भारतीय हैं। इसलिए भगवान पर हमारा पहला अधिकार है। वे खुद अब आल राउंडर क्रिकेटियर का अवतार लेकर हमें निराशा के सागर से बचा सकते हैं। वैसे भी उनका कलयुग में एक कल्कि अवतार ड्यू है ही। जिस प्रकार सांस्कृतिक कार्यक्रमों की सूची के नीचे लिखा रहता है कि किन्हीं विशेष कारणों से कार्यक्रम में परिवर्तन किया जा सकता है, उसी प्रकार प्रभु भी भारत को क्रिकेट की निराशा से बचाने के लिए तथा सही समय पर इक्कीसवीं सदी में पहुँचाने हेतु एक आल राउंडर क्रिकेटियर का अवतार ले सकते हैं, 'भय प्रकट कृपाला' की धुन पर।

अवतार लेने के मामले में प्रभु ने हमेशा भारत को प्राथमिकता दी है। उनका पिछला रेकार्ड यही बताता है। भारत जब भी संकट की स्थिति से गुजरेगा, लोग 'त्राहि-माम-त्राहिमाम' पुकारेंगे, तब-तब प्रभु अवतार लेंगे, यह प्रोमिस उन्होंने गीता में किया है, जिसे संस्कृत में, यदा-यदा ही

धमस्य 'कहते हैं। हाला कि प्रभु ने धम की हानि के लिए कहा है क्रिकेट के लिए नहीं। पर उन्हें धम की हानि पर अवतार लेना होता तो वे कब का ले चुके होते। धम तो अब रहा ही नही नाम मात्र का भी नही। धम को देखना हो तो म्यूजियम म शायद मिल जाय। मगर देश मे धम ढूढना आतकवादियो के सीने मे दिल ढूढने जसा है। जब धम है ही नही उसका अस्तित्व ही नहीं है। फिर उसका लाभ क्या है और हानि क्या ? धम की हानि प्रभु सह चुके। अगर वे क्रिकेट की हानि भी सहेगे तो फिर उन्हे इस देश मे कौन याद करेगा उन्ह भी तो अपनी अस्तित्व की फिक्र है इसलिए वे अवतार जरूर लेंगे।

प्रगटो प्रभु ! सारा भारत आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। दीन बधु हमारे चित्रकारो ने, कवियो ने आपका काल्पनिक रुप भी तय कर रखा है। आपके चार हाथ म से एक मे बैट, एक मे गेंद, एक म स्टप और एक म पुरस्कार का रवर होगा। आप हर मैच मे 'मैन आफ द मैच' कहलायेंगे, तभी भारत इस सकट से उबरेगा—अर्ध विकसित ही सही, समय मे इक्कीसवी सदी मे पहुचेगा। भारत क्रिकेट मे सदा विजयी होगा तो मरीज बचेंगे, सही फैसले होगे, दुघटना की जाँच होगी, बच्चे गिनती सीखेंगे, देश म एक ललक होगी, जोश होगा और हमारे छह महीने साथक होग।

हे प्रभु, आओ भारत की लाज बचाओ ! हम सब सुनने को और अनूप जलोटा आपकी कमेंटरी गान को उत्सुक है। क्रिकेट हमारा कम है। क्रिकेट हमारा धम है। सारा भारत क्रिकेटमय हो चला है क्या अब भी नही आओगे ? यदि नही आओगे तो देख लेना इक्कीसवी सदी मे जाते-जाते आपका यह भारत क्रिकेट मैदान मे आपके देखते ही देखते 'क्लीन-बोल्ड' हो जायगा।

एक टेस्ट मैच मेरे घर मे

हरिओम मेचन

आजकल मेरे घर म । 'टेस्ट मैचीय' वातावरण है । एक छोर स मेरी पत्नी की तेज गेन्दबाजी और दूसरे छोर स मेरी माँ अर्थात मेरी पत्नी की सास की 'स्पिन गेंदबाजी' जारी है। गहस्थी क उबड खाबड निर्जीव पिच पर हाथा म कर्त्तव्य का बल्ला लिए मैं दानो ओर की गेंद झेल रहा हूँ। यह और बात है कि कभी-कभी अनुमान गायकवाड की तरह गेंद की लाइन म सही ढग स न आने के कारण 'क्लीन बोल्ड होते हाते बचा हूँ। सुरक्षात्मक ढग स खेलते हुए भी कई बार सुनील गावस्कर की तरह 'बीट' हा चुका हू । मरे साले और सालिया स्लिप' और 'गली पर हर सभावित 'कच' लेने के लिए तयार खड़े हैं। फील्डिग बहुत 'टाइट' है फिर भी मने हिम्मत नही हारी। मैं भारतीय हूँ लकिन भारतीय बल्लेबाज नही, जा कमौके उल्टा सीधा बल्ला घुमा कर बिना 'रन' बनाए पवेलियन म लौट जाते है।

ग्यारह वष से बैटिंग कर रहा हूँ मैं। अभी तक एक भी रन नही बनाया है। यह भी अपने आप मे एक 'रिकाड' है। कभी अवसर मिला ता 'गरी सोबस' की तरह एक ओवर म ही छह छक्के लगाऊँगा। एक-एक रन बनाना मेरे वश की बात नही। एक रन के लालच म पार्थसारथी शर्मा की तरह 'रन आउट' होने का खतरा मैं नही उठा सकता। बापू नादकर्णी विजयहजारे, विजय मर्चेण्ट और पाली उमरीगर की तरह मैं लम्बी पारिया खेल रहा हूँ। हालांकि मैं जानता हू कि इस 'गहस्थी इलेविन

से मुझे कोई नही निकाल सकता। सुनील गावस्कर और विश्वनाथ की तरह मेरा स्थान भी सुरक्षित है। सारे जीवन मुझे गेंद-दाज का सामना करना है। हर स्थिति म इसी टीम मे रहना है। 'तुमको और न मुझको ठौर।' गेंद-दाजा को भयभीत करने के लिए कभी-कभी मेरी बल्लेबाजी करपन घावरी और सैयद किरमानी की तरह आक्रामक हो उठी है कि तु हर बार गेंदन्दाज मेरे ऊपर हावी होते चले गए हैं।

मेरी मा बिशनसिंह बेदी की तरह आमर, चद्रशेखर की तरह गुगली, प्रस ना की तरह आफब्रेक और वेंकट राघवन की तरह टाप स्पिन फेंकने म सिद्हस्त है। मेरे पिताजी का काफी कीमती विकिट उसन एक साधारण सी गेंद की योक करा कर तथा उन्ह क्लीन बोल्ड करके ले लिया था। मेरे पिताजी मा की 'स्पिन गेंद-दाजी' का लोहा मानत है। उसकी गेंद बडी सटीक और कसी हुई पडती है। माताजी की गेंदें खेलने की तकनीक मुझे मरे डैडी न उसी तरह समझा दी है जैसे लाला अमरनाथ न मोहिन्दर अमरनाथ को तेज गेंदें खेलने की तकनीक बताई है। मेरे पिताजी नही चाहते कि मैं गृहस्थी के निर्जीव पिच पर सुनील गावस्कर की भाति शून्य पर ही क्लीन बोल्ड हो जाऊँ।

मेरी पत्नी एण्डी रॉबर्टस और डेनियल से भी तेज गेंदें फेंक सकती है। लिली और थामसन से अधिक घातक गेंदन्दाजी करके शारीरिक क्षति पहुँचा सकती है। उसके 'बम्पर' काफी तेजी से आते ह और आशा के विपरीत काफी ऊचाई तक उठते हैं। मैंन कई बार राणा सागा और अनुमान गायकवाड मे भी अधिक घाव खाए हैं। एक बार तो यदि टानी ग्रेग की तरह साष्टाग दण्डवत की मुद्रा मे न लेट गया होता तो आज 'नारी काण्ट्रैक्टर' की स्थिति को प्राप्त हो गया होता। मैं एक छोर से तेज और दूसरे छोर से स्पिन गेंद-दाजी झेल रहा हूँ। मरी माताजी अपनी गेंदें अण्डरवुड स भी अधिक 'कट' करा सकती हैं। वह एक अनुभवी और क्षमतावान 'स्पिनर है।

दिन तो आफिस म रो झीक कर कट ही जाता है। सुबह शाम और रात देर तक दोनों गेंद-दाजा की कला से चमत्कृत होता हूँ। कभी-कभी तो मुझे अपना मिडिल स्टम्प' उखडता-सा लगता है। अब तक 'डेनिस

एमिस' की तरह न जाने कितने जीवन-दान मिल चुके हैं। मेरी पत्नी पुरानी 'रिकार्ड मेकर' है। शादी से पूर्व अपने मायके में उसने एक ही ओवर में अपनी चारों भाभियों के जमीदोज विकिट उखाड़े हैं। मुहल्ले-पड़ोस की महिलाओं पर एक ही ओवर में छह छह 'बाउंसर' फेंके हैं। स्कूल कालिजों में अपनी अध्यापिकाओं को 'क्लीन बोल्ड' और सहपाठियों को एल०बी० डब्ल्यू० किया है। अपनी बड़ी भाभी को तो घातक गेंदबाजी करके सदैव के लिए ही 'रिटायर' कर चुकी है। न जाने कितने ओवर 'विकिट-मेडन' फेंके हैं। अब मेरे जीवनरूपी बहुमूल्य विकिट को हथियाने के लिए कमरतोड़ कोशिश कर रही है। मैं उसकी हर गेंदें समझ-बूझ कर खेलता हूं। मैं भारतीय बल्लेबाजों की तरह स्टम्प के बाहर जाती हुई गेंदों से छेड़खानी करके उपहारस्वरूप अपना कीमती विकिट खोना नहीं चाहता। मैं हुक करना नहीं जानता, इसलिए एकनाथ सोलकर की तरह अनाड़ीपने से 'हुक शॉट' नहीं लगाता। 'फिरकी' गेंदों को उछाल कर विश्वनाथ की तरह मिड आन पर आसान कैच नहीं उछाल सकता।

भले ही मेरी बल्लेबाजी में तकनीक का अभाव है लेकिन मेरे अन्दर आत्मविश्वास की कमी नहीं। इसीलिए गृहस्थी के इस ऊबड़-खाबड़ निर्जीव पिच पर बहादुरी के साथ जमा हुआ हूँ। न जाने कब यह पिच टर्न लेने लगे और गेंदबाजी की मदद करने लगे। न जाने कब और किस बॉलर की कौन सी गेंद मेरे 'लेग स्टम्प' से आ टकराए। मैं खेल खेल कर जूझ रहा हूं। जूझ जूझ कर खेल रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि मेरे 'बोल्ड' होते ही गृहस्थी इलेविन की पूरी पारी लड़खड़ा जाएगी तथा ये दोनों बॉलर एक-दूसरे पर अपनी कला का चमत्कारी प्रदर्शन करेंगे। घातक और डरावनी गेंदबाजी।

साहब की किरकिट

कुन्दनसिंह परिहार

विमल नया-नया दफ्तर में भर्ती हुआ है, जोश है,कुछ करने की कुल-बुलाहट होती है। अभी उसकी जिंदगी का 'दफ्तरीकरण' होना शुरू नहीं हुआ है।

दफ्तर में नये साल की पार्टी थी। तभी विमल ने बड़े साहब के सामने प्रस्ताव रख दिया, 'सर, क्यों न इतवार को दफ्तर के लोगों का एक क्रिकेट मैच हो जाए?'

बड़े साहब को भी कुछ अच्छा लगा। उन्होंने मंजूरी दे दी। विमल ने दौड़-भाग करके क्रिकेट का सामान इकट्ठा कर दिया। दफ्तर के बड़े बाबू अग्रवालजी ने सुना तो माथा ठोंका बोले, 'इन नये नये लौंडों के आने से यही गड़बड़ होती है। अब दफ्तर वाले क्रिकेट खेलेंगे। एक इतवार मिलता था, घर की सब्जी-भाजी लाने के लिए वह भी गया खेलो 'किरकिट'।

गुजराती क्लब के मैदान में इंतजाम हुआ। दर्शकों के लिए कुर्सियाँ लगायी गयीं। साहबों की मेम साहबें उन पर आकर विराजीं। लंच का इंतजाम किया गया।

दो टीम बनीं। एक के कप्तान बड़े साहब, दूसरी के छोटे साहब। खेल शुरू हुआ जैसे बल्लेबाज, वैसे ही गेंदबाज जो कभी पहले खेलते भी रहे थे, उनकी उँगलियाँ अब कलम पकड़ने की ही अभ्यस्त रह गयी थीं। गेंदबाजों की गेंद विकेटों से कई फुट दूर से निकल जाती। बल्ला बढ़ाने पर भी गेंद छूने को न मिलती। कभी टप्पा खाकर ऐसे उछलती कि खेलनेवाले को अपना चश्मा सँभालना मुश्किल हो जाता। सबको खेल से ज्यादा अपने

हाथ-पाव बचाने की फिक्र थी। मनोरजन के पीछे हाथ पाव टूटे और दफ्तर से छुट्टी लेना पडे, तो हो गया खेल। चश्मा टूट जाये तो साठ रुपय दच्च पडे। दो दिन की तनख्वाह गयी चूल्हे मे।

बडे साहब खेलने आये तो सबने तालिया बजायी। छोटी अफसर पत्निया बडी मेम साहब के पास तारीफ करने के लिए सिमट आइ।

छोटे साहब ने गेंद सभाली। बहुत सभल कर गेंद फेंकना शुरू किया, कि न साहब को लगे न विकटो को। बडे साहब हर बार बल्ला हवा म घुमा देते। कभी बल्ला गेंद मे लग जाता तो सब फील्डस तालिया बजाते, कहते, 'वाह साहब, क्या बढिया शाट लगाया है।' अफसर की पत्निया बडी मेम साहब से कहती, 'कितना अच्छा खेल रह है। जरूर नयी उमर म खूब खेलते रहे होगे। तारीफ करने की होड लगी थी। सब न कम-स कम एक वाक्य बोला। चुप रह तो घर लौटने पर पति की लताड सुननी पडे।

श्रीमती वमा बोली, 'जब अभी इतना अच्छा खेलते हैं ता नयी उमर मे चैम्पियन रहे होग।'

बडी मेम साहब खुश होकर बोलीं—'मेरे को नई मालूम।

एक गेंद पर बडे साहब ने बल्ला घुमाया। सयोग से बल्ला गेंद म लग गया और गेंद चौधरी बाबू की तरफ भागी। चौधरी बाबू ने रोकन का अभिनय करते हुए उस एक लात लगायी, और गेंद पार रन की बाउड्री की तरफ दौडी। बाउड्री पार करने से पहले ही अपायर बन बख्शी बाबू ने बाउड्री का इशारा दे दिया। खूब जोरो की तालियाँ बजी। चौधरी बाबू प्रमुदित होकर बोले, कमाल का शाट लगाया साहब।' बख्शी बाबू भी चौका देख कर बहुत खुश थे।

बडे बाबू 'किरकिट विरकिट' भूल कर लच के इतजाम म लग थे। भीतर से उन्ह बडा सताप था कि दफ्तर क लोगो न उनका इतवार खराब कर दिया था। जब साहब के किसी शाट पर तालियाँ बजता ता वे भी घूम कर ताली बजाकर 'वाह बोलते और फिर वापस अपने काम म लग जाते।

बडे साहब एक घट से जम थे उनका आउट होना मुश्किल था, क्योंकि कोई उन्हें आउट करना ही नहीं चाहता था।

तभी छोटे साहब ने एक तरफ से गेंद फेंकने का काम विमल को दिया।

विमल बड़े साहब के अभी तक आउट न होने पर कसमसा रहा था। नौकरी की 'ड्यूटी' के अनेक पहलू अभी उसकी समझ मे नही आये थे।

छोटे साहब न उसे गेंद देते हुए कहा, 'ठीक से फेंकना।'

विमल बड़े साहब को आउट करके अपना कौशल दिखाना चाहता था। अफसर पत्नियो पर प्रभाव डालने की भी कुछ ललक थी। उसने धीमी, लेकिन सीधी गेंद फेंकी।

पहली गेंद तो विकटो के ऊपर से निकल गयी, दूसरी ने सब गिल्लियां बिखेर दी। लेकिन अपायर बख्शी बाबू ने गिल्लियां उड़ते ही हाथ उठा कर कहा, 'नो बॉल'।

विमल कुछ नही बोला। अगली गेंद मे फिर गिल्लियां साफ। बख्शी बाबू फिर हाथ उठा कर बोले —'नो बॉल'। विमल बोला, 'पहले ही कहना चाहिए था।' बख्शी बाबू बोले —'पहले ही कहा था।'

अगली गेंद फिर गिल्लियां ले गयी। बख्शी बाबू फिर हाथ उठाकर बोले, 'नो बोल'। लेकिन बड़े साहब को कुछ शर्म लगी। बल्ला लेकर चल दिये, बोले—'नही भई, हम आउट हो गये।'

छोटे साहब और दूसरे फील्डर्स बोले, 'अभी खेलिये साहब! आप आउट नही हुए हैं।' लेकिन साहब हाथ हिलाकर आगे बढ़ गये।

सबको लगा खेल का मजा ही खत्म हो गया। जब बड़े साहब ही मैदान से हट गये तो खेल का मजा ही क्या रहा साहब गये तो जैसे खेल की जान निकाल ले गये।

बड़े बाबू काम छोड़कर दौड़े-दौड़े विमल के पास आये। बोले, 'तुम अजीब बेवकूफ हो। साहब को आउट करवा कर दिया। टेढ़ी मेढ़ी गेंद नही फेंक सकते थे?'

विमल बोला—'मैं तो रूल्स के हिसाब से ही खेल रहा था।'

बड़े बाबू बोले—'बेटा, क्रिकेट के रूल्स तो बहुत जानते हो अब कुछ नौकरी के रूल्स भी समझ लो, नही तो कभी तुम्हारी गिल्लियां ऐसी साफ होंगी कि दुबारा जमाना मुश्किल हो जायेगा।'

क्रिकेट चिंतन

ईश्वर शर्मा

इस देश म राजनीति के बाद यदि कोई लोकप्रिय है, तो वह है—क्रिकेट। मैं जब राजनीति की ओर ध्यान देता हूँ तो लगता है क्रिकेट खेला जा रहा है। और जब क्रिकेट की ओर नजर डालता हूँ तो महसूस होता है कि राजनीति चल रही है।

शहर म, गाँव मे, जिधर भी निकल जाइये, हर जगह युवक क्रिकेट खेलता हुआ मिलेगा। युवा शक्ति क्रिकेट मे केन्द्रित हो गई है। अब युवा शक्ति की भटकने की सभावना नही रही। अन्य क्षेत्रो म उनकी रचनात्मकता का भय भी जाता रहा।

जगह जगह छोटे बालक क्रिकेट खेलते मिलते हैं। बाँटी, भौरा गिल्ली डडा सब गायब होकर क्रिकेट मे समा गये। टेलीविजन ने क्रिकेट को सक्रामक रोग की तरह फैला दिया। पहले रेडियो पर कमेन्ट्री सुन लेते थे, तसल्ली हो जाती थी। बडी उम्र के लोग खेल रहे हैं। थोडी देर खडे होकर सुन लिया और अपने काम पर लग गये। अब तो टी० वी० पर देख-देख कर क्रिकेट की एक-एक अदाकारी समझ म आने लगी है।

स्टाम्प नही मिला तो बेशरम की आडी-टेढी तीन डगालें तोड कर मिट्टी म दवा ली और शुरू हो गये। बैट नही मिला तो किसी ने घर का कपडा कूटने का कुटला ले आये और लग गये लाईन पर। खेल प्रारभ। पीछे से फटी पट वाला एक बालक बालिग करने खडा है। हाफ पट की हालत खस्ता है लेकिन रबर की गेंद पर बार-बार थूक लगाकर सामन की ओर रगड कर चमकाने की कोशिश मे लगा है। एक बालक जो अपनी

आस्तीन की बाँह से लगातार रगड पोछ रहा है, शायद कप्तान है। वह फील्ड अरेंजमेंट मे लगा है। किसी को पास बुला रहा है तो किसी को पीछे भेज रहा है। फील्ड सजने के बाद बॉलर के पास पहुँच कर उसे समझा रहा है लेग स्पिन फेंकना।

इमली माठा एंड पर बैटसमैन तैयार खडा है। लगता है जैसे बिस्तर से सीधे उठ कर आ गया है। आँख मे चिपडा स्थायी रूप से जमा है। मुह के किनारो पर लार बहने के निशान साफ दिखाई पड रहे है। बाल बिखरे हुए हैं। वह घूम घूम कर फील्ड अरेंजमेंट का मुआयना कर रहा हैं। पिच कवर मिट्टी वाली जमीन पर बना है। भारी मिट्टी जमा है लेकिन बैटसमैन किसी टेस्ट प्लेयर की तरह पापिंगक्रीज के बाहर आकर बेट से मिट्टी को ठकठका कर जमा रहा है।

बॉलर ने बॉल फेंकी। बट्समैन ने पूरा जोर लगा कर ऐसा बल्ला घुमाया कि वह खुद दो चक्कर घूम गया। बॉल थोडी दूर गई। बेटसमन ने रन के लिये दौड लगाई। आधे रास्ते मे ही उसकी पेंट सरक कर नीचे आ गई। लेकिन एक हाथ म पट सम्हाले हुए उसने रन पूरा कर लिया। अगली बॉल फेंकने बॉलर फिर तैयार। दोनो बेटसमैन पिच के बीचो बीच आकर 'मिड विकेट का फ्रस' मे लग गये। एक पुरानी कहावत याद आती है—'फटी कमीज अंग्रेजी बाजा।'

टेलीविजन का ही कमाल है जिसने बच्चे-बच्चे को क्रिकेट खेलने का सही ढग समझा दिया। रहने-बोलन, पहनने-ओढने का सलीका भले ही न आय,क्रिकेट खेलने का तरीका तो सीख ही लिया। बनियान लुगी पहने हुए लोग क्रिकेट खेल रह हैं। ये बालक अपने दादाजी का नाम या अपन पिताजी की उम्र और अपनी खुद की जन्म तारीख भले ही न जानत हा लेकिन किस क्रिकेट प्लेयर ने कितने रन बनाय, कितने शतक बनाय, कितने विकेट लिय, कितने टस्ट मैच खेले, अवश्य जानते हैं। उनके सामन क्रिकेट की चकाचौंध इतनी ज्यादा हो गई है कि बाकी कुछ नजर ही नहीं आता। यश, धन, पद सबकी प्राप्ति का शाटकट उपाय क्रिकेट दिखाई पडने लगा है। किसी भी बालक से पूछ कर देखिये, कोई गांधी नेहरू, सुभाष, रमन, भाभा नही बनना चाहता। सबकी इच्छा गावस्कर, कपिल,

बाथम, रिचडस, सोवस, इमरान बनन की है। पिछले चुनाव मे फिल्मी कलाकारो को टिकट दी गई थी अब क्रिकेटरो को लाइन म लगाया जाये तो कोई ताज्जुब नही है। वैसे भी यह मूर्ति पूजक देश है और क्रिकेटर अभी उगते सूरज है।

पहले आपातकाल की स्थिति युद्ध के समय दिखाइ पडती थी, अब क्रिकेट के समय दिखाई पडती है। पूरा राष्ट्र अपने व्यक्तिगत और दलगत हितो को भूल कर एक दिखाई पडता है। भावनात्मक एकता के शतप्रतिशत लक्षण दिखाई देने लगे है। व्यापारी व्यापार छोड देता है। अफसर, बाबू दफ्तर छोड देते है। छात्र स्कूल छोड देते हैं। घर म औरतें चौका-बतन छोड देती हैं। राष्ट्रहित सर्वोपरि हो जाता है। सबके मन म दुआ होती है कि गावस्कर एक सेचुरी और बना ल। ऐसी अटूट एकता तो देश के आक्रमण के समय भी दिखाई नही पडती।

कपिल बॉलिंग करने के पहले फीरड का मुआइना कर रहे हैं। गावस्कर अब बुढा गये हैं लेकिन उन्हे एकदम से निकाला भी नही जा सकता। पूरे देश मे आदोलन उठ खडा होगा। कप्तान कपिलदेव ने उन्हे स्लिप पर भेज दिया है। जाओ, एक कोने म चुपचाप खडे रहो। गावस्कर को ऐसी स्थिति मे देखकर बरबस ही कमलापति त्रिपाठी याद हो उठते ह। खडे रहो स्लिप म। रवि शास्त्री को लाग-आन मे दूर भेज दिया गया है बिरकुल विद्याचरण शुक्ल की तरह। गावस्कर ग्रुप के बबईया खिलाडी हैं। कपिल की कप्तानी को उनस खतरा बना रहता है। फारवड शाट लेग पर श्रीकात की तरह अजुन सिंह को बुला लिया गया। अरुण नेहरु की तरह वेंगसरकर को बाउड्री लाईन पर भेज दिया गया है। मदनलाल जिन्ह कि टीम के बाहर कर दिया गया था, कप्तान के चहेते होन के कारण शरद पवार की तरह उनकी पुन टीम म वापसी हा गई है। शिवराम कृष्णनन का सीताराम केसरी की तरह बारहवा खिलाडी बना दिया गया है। केवल चाय पानी की व्यवस्था करते रह। सदीप पाटिल को इस बेदर्दी के साथ टीम से निकाला गया कि प्रकाश चद्र सेठी की तरह उसने सन्यास की घोषणा कर दी।

कपिलदेव बराबर फील्डिग की आर ध्यान बनाये हुए हैं। फील्डरों को

जल्दी-जल्दी चेंज कर रहे है। कोई भी एक जगह स्थायी न हो सके। एक ही ओवर मे दो तीन बार फील्डरो की स्थिति बदल देते है।

बल्ला थाम हुए बेटसमैन विपक्षी नेता सा महसूस होता है। कपिलदेव के ओवर की हर बॉल मे वरायटी है। बाल के रूप मे वे एक नया नारा फेंकते ह। विपक्षी बल्लेबाज परेशान हैं। समझ मे नही आता उसे किस तरह खेलें। रन बनाना तो दूर रहा बमुश्किल तमाम अपना विकेट बचाने मे लगे है। हर बॉल, चाहे लूज बॉल ही क्यो न हो फील्डर ताली बजा कर बालिंग की प्रशसा कर रहे है। विपक्षी बल्लेबाज बार-बार मिड विकेट कार्फेंस करते है लेकिन गोलदाजी का सामना करने मे निरतर परेशानी का अनुभव कर रहे है। बल्लेबाजो का मनोबल तोडने के लिये कपिलदेव न एक शॉट लेग और लगा दिया। ऐसा लगा मानो कश्मीर मे फारूक अब्दुल्ला को मुख्यमत्री पद सौप कर विपक्षी एकता प्रयासो को ध्वस्त कर दिया है।

मैने कहा था, न जब क्रिकेट देखता हूँ तो मुझे राजनीति की झलक दिखाई पडने लगती है। और जब राजनीति पर नजर दौडाता हूँ तो क्रिकेट का मैदान दिखने लगता है। नेताओ में असतोप है लेकिन चाहते ह, आपनिंग कोई और करे। हम तो विकेट की रक्षा के लिए पीछे विकेट-कीपर की तरह खडे रहगे। कोई अपनी सही परफार्मेंस दिखाना नही चाहता। हार की पूरी जिम्मेदारी कप्तान पर सौंप कर उसे तीर का निशाना बनाना चाहते है। कभी पजाब की बाउन्सर फेंकी जाती है तो कभी गोरखालैंड की याकर। असम की गुगली अभी ठीक से खेल भी नही पाय कि नागालैड की लैंग स्पिन अटेक शुरू हो गया। इन सब वारो से कप्तान ले दे कर बच रहा है, तो साथी बट्समन उसे रन आउट कराने के फिराक मे है।

पहले वह समय था जब सत्ता की बिसात शतरज की मोहरो की आधार पर बिछाई जाती थी। अब सोचने-समझने और चाल चलन का उतना लबा अवसर तो मिलता नही इसलिये सत्ता के खेल क्रिकेट की तरह खेले जाते है। जिसे बलि का बकरा बनाना होता है, टीम के हित की दु... देकर नाईट वाच मैन की तरह मैदान पर भेज दिया जाता है।

बल्लेबाज को आगे नही बढने देना है तो शतक के करीब होने के बावजूद पारी समाप्ति की घोषणा कर दी जाती है।

यही कारण है कि देश मे राजनीति के बाद क्रिकेट इतना अधिक लोकप्रिय हो पाया है। राजनीति सीखना हो तो क्रिकेट खेलना प्रारभ कर दो। क्रिकेट राजनीति की प्राथमिक पाठशाला है। जहा सिखाया जाता है—अपना विकेट बचाये रखो, भले ही टीम हार जाये। खुद क्रिकेट पर खडे रहो, लोगो को दौडाते रहो। समय पडे तो साथी को रन आउट करा दो लेकिन खुद मत हटो।

क्रिकेट जिन्दगी की स्थितिया का चितन भी दर्शाता है। बुराइया का बालर अपनी पूरी दम-खम के साथ बालिंग करता है। हम किसी भाति बचते-बचाते रहते है, बाल को अपन से दूर बनाये रखते हैं। मेहनत करके एक-एक रन एकत्रित करते है। विवशताओ के फील्डर हम कैच आउट करने के लिये घेरे खडे हैं। बड परिश्रम के बाद हम अच्छाईया के शतक के समीप पहुँचते है, ठीक तभी समय का अम्पायर हमे रन आउट घोषित कर देता है।

लेकिन अभी समय है। अभी हम रन आउट नही हुए है। आवश्यकता है, केवल आउट होने के पहले एक बडा स्कोर खडा कर देने की।

मेरी क्रिकेट-कैरियर के कुछ अविस्मरणीय अनुभव

उपेन्द्र प्रसाद राय

अगर कभी मेरे विद्यालय की क्रिकेट हिस्ट्री लिखी गयी तो मेरा नाम उसमे निश्चय ही ब्लॉक-लेटर्स मे लिखा जायगा। हर मौके पर विद्यार्थी यही सकीर्तन करने लगते हैं कि लल्लू सर नहीं चलेंगे तो हमलोग भी क्रिकेट खेलने नही जायेंगे। लेकिन मेरा नाम इस विद्यालय की टूटी फूटी चहारदीवारी, जिसकी इटें चुरा चुरा कर लोगो ने भसो की खटालें खडी कर दी हैं और विद्यालय की राटिया तक ही सीमित नही है। शहर के ये जो सख्यातीत क्रिकेट प्रेमी हैं, वे सभी मुझे बहुत नजदीक से जानते हैं। उनके सामने यदि आप कह कि अमुक विद्यालय के क्रिकेटर आज कब्रगाह वाले मदान मे खेलने आ रहे हैं तो वे तुरत किसी एक्सपर्ट सम्पादक के समान आपको सशोधित कर देंगे, "अरे भाई, पहेली क्यो बुझा रहे हो? सीधे क्यो नही कहते कि लल्लू बाबू की टीम खेलने आ रही है?" देखी आपने मेरी लोकप्रियता। और अपने विद्यालय के जो मेरे सहकर्मी हैं, मेरी लोकप्रियता से जलकर राख हुए जाते हैं। हो जाओ राख—मुझे क्या? तुम्हारी ही बीबियो को बतन माजने म सुविधा होगी। सुनते है, विम और विज की अपेक्षा राख से बतन अधिक साफ होते हैं।

क्रिकेट मे मरी धुआधार दिलचस्पी और तल्लीन सबध की शुरूआत भी बडी मौलिक और अब तक अप्रकाशित एव अप्रसारित रही है। क्रिकेट प्रेमियो तथा इतिहास लेखको के हिताय थोडा इस पर भी रोशनी डालने का कष्ट करना मे अपना फर्ज समझता हूँ।

इस शहर मे आने के पहले मैंने क्रिकेट का सिर्फ नाम सुना था, कही

देखा नहीं था लोगों को खेलते । यहाँ आया तो पाया कि क्रिकेट की बीमारी तो महामारी के रूप में फैली हुई है। जिसे देखो वही इससे पीड़ित। जिसे यह बीमारी नहीं लगी हो उसे लोग अहमक, अमॉडर्न अफ्नावेबुल, असुसंस्कृत समझते थे। और इधर मेरी हालत थी कि न यह जानता था कि विकेट गिरना किसे कहते हैं और न यह मालूम था कि रन कैसे बनते हैं। लोग कहते "गेंद तो दूर थी किन्तु बल्लेबाज एक ही रन बना पाये। मैं क्रिकेट में अपनी बेजोड़ जानकारी प्रदर्शित करते हुए झट बोल उठता, "हाँ, और क्या! आठ-दस तो आसानी से ले सकते थे। लेकिन वे रन बनाना चाहें तब न?" कामेन्ट्री रसिक कान से ट्रांजिस्टर सटाये टिप्पणी करते, "इतनी ही देर में सात विकेट गिर गये।' मैं अफसोस जाहिर करते हुए कहता—'ऐसी ही हालत रही तो थोड़ी ही देर में पन्द्रह-बीस विकेट गिर पड़ेंगे, देख लीजिएगा।' क्रिकेट के बारे में थोड़ी जानकारी प्राप्त कर लेने के बाद तो एक दिन मैं अपने साथियों से झगड़ ही पड़ा था। प्रसंगवश किसी खिलाड़ी ने छक्का मार कर छह रन बनाये। मेरा कहना था कि ऐसा बोलनेवाला अपनी गलती सुधार ले। छक्का मारने पर गेंद बड़ी दूर चली जाती है। इतनी देर में दोनों बल्लेबाज दौड़ दौड़ कर पाँच-सात रन और बना ले सकते हैं। फिर छक्का पर छह ही रन क्यों बनाये उन्होंने? बेवकूफ रहे होंगे या काहिल तभी न?' खैर, कुछ ही दिनों में क्रिकेट के बारे में मेरी गहन जानकारी की नेकनामी धूम धाम के साथ चतुर्दिक फैल चुकी थी। लोग अब मुझे देखते ही अपने सारे काम भूलकर क्रिकेट की चर्चा चला देते तथा मेरी मौलिक सूझ-बूझ और जानकारी पर प्रमुदित होकर जोर जोर से भद देते। प्रारंभ में तो उनकी वाहवाही से मैं गौरवान्वित महसूस करता। मन ही मन सोचता—"तो साले! तुम लोगों ने क्या सोच लिया था कि गाँव से आया है तो गँवार होगा? इसे कुछ अता पता ही नहीं मालूम चीजों का? देख रहे हो न अब कि गाँव का आदमी तुम लोगों को कैसे धोबिया पाट लगा कर चित्त कर देता है? लेकिन ज्यों-ज्यों मेरी जानकारी बढ़ती गयी उनके ठठाकर हँसने और टेबुल पीट पीट कर दाद देने का रहस्य मेरी समझ में आने लगा। खैर, इसे भी मैं क्रिकेट के इतिहास

का अपनी देन समझता हूँ, क्योंकि उस समय मेरे द्वारा क्रिकेट के बारे में कही कितनी ही बातें चुटकुला बन गयी हैं और इससे क्रिकेट की लोकप्रियता में बेइंतहा बढ़ोत्तरी हुई है।

मेरे क्रिकेट-कैरियर का शुभारंभ बड़ा ही लोमहर्षक रहा है। न हुए उस दिन क्रिकेट के जाने-माने अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी मौजूद उस जगह पर, अन्यथा उसी क्षण उनके छक्के छूट जाते, चौके की तो बात ही क्या। हुआ यों कि जब तक तो मैंने क्रिकेट के बारे में सिर्फ जानकारी ही हासिल की थी जिसके आधार पर प्रकट किये गये मेरे निर्णयों को सुनकर अच्छे-अच्छों की आँखें फटी की फटी रह जाती थीं लेकिन अब मैंने हाथ में बल्ला लेकर अपने दोस्तों की विकसित बत्तीसी का जवाब देना चाहा था। मैं यह सिद्ध कर देना चाहता था कि नेपोलियन की वह डिक्सनरी जिसमें असंभव शब्द नहीं लिखा था, मेरे ही हाथ लगी है। दो चार दोस्तों के बीच इस युगांतकारी संकल्प की चर्चा चलायी तो लगे ईर्ष्या से सुलगने। सोचने लगे कि कल का आया हुआ यह फटीचर आदमी क्लास में रोज रोज बच्चों के सामने मिमियाने के बदले अब बल्ला लेकर दिग्विजय करने निकलेगा, अखबारों और रंगीन पत्रिकाओं में इसके इंटरव्यू और फोटो छपेंगे, सुंदरियों के अलबम में इसके चित्र रहेंगे, लाखों कमायेगा और चौपाटी पर भेलपूरी खाते हुए किसी बबईया हीरोइन से रोमांस लड़ायेगा। मेरी योजना के बारे में सुनते ही लगे नसीहत देने "देखो यार! सनकी मत बनो। क्रिकेट में लगोगे तो सुबह शाम के ट्यूशन टूटेंगे। क्रिकेट खेलना तो तुम सीख न सकोगे उल्टे पैसा आना भी बंद हो जायेगा। बेहतरीन तो यही है कि घर-घर जाकर पूर्ववत ट्यूशन करते रहो और अपने छात्रों की सुमुखी माताओं से क्रिकेट के बारे में गम्भीर वाद विवाद करते रहो। वहाँ तुम जम भी जाओगे क्योंकि घर की चहारदीवारी में रहने के कारण इस खेल के बारे में उनकी जानकारी भी तुम्हारी जैसी ही गम्भीर होगी। इस उमर में अब क्रिकेट क्या खेलोगे। हाँ, कुछ एक्सट्रा करना ही चाहते हो तो एक सेकेंडहैंड सिलाई मशीन खरीद लो और मच्छरदानी, लंगोट इत्यादि सीया करो। कुछ ऑर्डर तो हम लोग ही दिला देंगे।" इत्यादि। उनकी ये उखड़ी उखड़ी बातें सुनकर मैं मन ही मन मुस्कराता। यह

सोचकर बड़ी खुशी होती कि सालों के दिल में फफोले उठ रहे हैं। सीधे-सीधे यह नहीं कहते कि हम तुम्हारी इतनी अच्छी योजना के बारे में जानकर जलन के मारे कुम्हार का आवाँ बनते जा रहे हैं। मैं कह रहा हूँ कि मैदान में कैच लेकर तगड़े-तगड़े विकेट गिराऊँगा और ये मुझे लगाट सीना सिखा रहे हैं ! बोल लो भाई, बोल लो। जो कुछ बकना है, बक लो, मेरे आत्मविश्वास और संकल्प का खूँटा इतना कमजोर नहीं है कि तुम्हारी आलोचना की भैंस उसे उखाड़ ले जाये। एक दिन जब तुम्हीं आटोग्राफ लेने के लिये मेरे आगे-पीछे भागोगे तो उलट कर तुम्हारी ओर देखूँगा भी नहीं। दूसरों को देकर आगे निकल जाऊँगा।

सो एक दिन मैंने अपने स्कूल के ड्रिल-मास्टर को घर पर बुलाकर देसी घी के पराठे खिलाये, बिना पानी मिलाये दूध से बनी खीर खिलायी (जिसके चलते भैंस और ग्वाले—दोनों मुझपर बेहद नाराज हुए कि मैंने यह अभूतपूर्व बात क्यों की), चाय पिलायी, पान खिलाया और दो पैकेट सिगरेट और एक डिब्बा माचिस खरीदने के लिये नगद पैसे दिये। ड्रिल मास्टर ने खुश होकर अगली सुबह मैदान में आने के लिये कहा।

अब रात कटे कैसे ? नींद निगोड़ी को न आना था, न आयी। हाँ, कभी-कभी झपकी आ जाती थी। झपकी आते ही आँखों के सामने वही स्वर्गीय दृश्य उपस्थित हो जाता था—मैं पिच पर विकेट के सामने बल्ला लेकर खड़ा हूँ। अम्पायर ने दोनों हाथ समेटते हुए कुबड़े के समान आगे झुककर बाल फेंकने के लिये सिगनल दिया। एक विश्वविख्यात रेसर राकेट की गति से दौड़ते हुए आता है और अचानक बिगडैल घोड़े के समान बिदककर उछलता है और पूरी ताकत से गेंद को मेरे विकेट की तरफ फेंकता है। मैं बल्ले से दो चार बार पिच को ठकठकाकर पास आयी गेंद पर इतनी जोर से शॉट मारता हूँ कि वह बाउंड्री को पार करती हुई आफिस में बैठे अभिभावकों से शिक्षकों की शिकायतों का ब्रह्मानन्द उठाते हुए हेडमास्टर के टेबुल पर आ गिरती है, ठीक उनकी आँखों के सामने। पहले तो वे क्रोध में चिल्लाते हैं, "कौन बदतमीज लड़का है ? पकड़ना तो। बाप ने पढ़ने के लिए भेजा है कि ढेलेबाजी करने के लिये।" किन्तु जब उन्हें मास्टर लोग तरह-तरह से विश्वास दिला देते हैं कि सर, यह

ढेला नही, क्रिकेट की गेंद है और किसी लडके ने नही, लल्लू सर ने मैदान म छक्का मारा है, सो यहाँ आ गिरी है, तो वे अवाक् रह जाते है। फिर मास्टरों को डपट कर कहते है, "मुँह क्या देखते हो ? अपने स्कूल मे इतनी बडी प्रतिभा है और अब तक तुम लोगो का मालूम नही हो पाया ? य कोई हिस्ट्री की छोटी छोटी तारीखें तो नही थे जि हे तुम खुद तो याद रख पात नही और लडकों को पूछ-पूछ कर पीटते रहते हो। अरे, देखत क्या हो ? घंटी बजवाकर सारे लडको को इकट्ठा करो। आरती का थाल सजा दो और उनकी स्तुति करो। लेकिन जाने मेरी श्रीमती जी को मुझसे कौन सा जन्मजात वैर है कि जब से इस घर मे उसने अपने श्रीचरण रखे है, खुशियो भरी मेरी हर कहानी का अन्त ट्रेजिक ही होता है। अब यही देखिय न, जब जब मेरे मस्तिष्क मे इस स्वर्गीय दृश्य का रगीन टेलीविजन आन होता, मेरी श्रीमती जी बिना किसी प्रकार का खेद प्रकट किये रुकावट डाल देती। मुझे जोर जोर से झकझोरती हुई चिल्लाती, 'क्या हुआ तुम्हें जी ? बिछावन पर सोये सोये बिना वजह के उछल क्या रह हो ? मिर्गी लग गयी है क्या ?" मैं आखें मलते हुए उठ बठता और श्रीमती जी की बातें सुनकर मन ही मन हँसता—ठीक है, द लो गालिया। लेकिन शीघ्र ही जब क्रिकेट सम्राट की पत्नी कहलाओगी, उसके बगल म बैठकर हवाई जहाज से लदन और ऑस्ट्रेलिया की सर करोगी, बडे-बडे होटलो म टिकोगी, चमचमाती कारो पर चलोगी तो ये गालिया खुद ही भूल जाओगी और पछताओगी कि अनजाने में तुम एक महान पति को जलील करती रहो। अब तक तो हर बात पर मैं हाथ जोडकर तुमसे माफी मागता रहा हूँ। अब भगवान अपनी असीम अनुकपा से वह दुलभ दिन भी दिखायेंगे जब तुम मुझसे माफी मागोगी। खर, मैं माफ कर दूगा क्योंकि इसके सिवा और मैं कर ही क्या सकता हूँ ? तुम भी क्या सोचोगी कि सचमुच कितने माफीनुमा मानव से तुम्हारा पाला पडा है !

यो ही झपकी लेते देह उछालते, झकझोरे जाते और गालियों की क्रमश तीव्र होती बौछार सहते किसी प्रकार रात कटी। ऐसा लगा कि आज के सूरज की पहली किरण माथे पर लगी टुच्ची मास्टरी की गाढी कालिख को धोकर ले गयी और किरण नम्बर टू ने आकर मेरी महान

सोचकर बड़ी खुशी होती कि सालो के दिल मे फफोले उठ रहे हैं। सीधे-सीधे यह नही कहते कि हम तुम्हारी इतनी अच्छी योजना के बारे म जानकर जलन के मारे कुम्हार का आवा बनते जा रहे हैं। मैं कह रहा हूँ कि मैंदान मे कैच लेकर तगडे-तगडे विकेट गिराऊँगा और य मुझे लगोट सीना सिखा रहे है! बाल लो भाई, बोल लो। जो कुछ बकना है, बक लो, मेरे आत्मविश्वास और सकल्प का खूटा इतना कमजोर नही है कि तुम्हारी आलोचना की भस उसे उखाड ले जाये। एक दिन जब तुम्ही आटोग्राफ लेने के लिये मेरे आगे-पीछे भागोगे तो उलट कर तुम्हारी ओर देखूगा भी नही। दूसरो को देकर आगे निकल जाऊँगा।

सो एक दिन मैंन अपने स्कूल के ड्रिल मास्टर को घर पर बुलाकर देसी घी के पराठे खिलाय, बिना पानी मिलाये दूध म बनी खीर खिलायी (जिसके चलते भस और ग्वाले—दोनो मुझपर बेहद नाराज हुए कि मैंने यह अभूतपूव बात क्यो की), चाय पिलायी, पान खिलाया और दो पैकट सिगरेट और एक डिब्बा माचिस खरीदन के लिय नगद पैस दिय। ड्रिल मास्टर ने खुश होकर अगली सुबह मैदान मे आने के लिय कहा।

अब रात कटे कैसे? नीद निगोडी को न आना था, न आयी। हा, कभी कभी झपकी आ जाती थी। झपकी आते ही आखो के सामने वही स्वर्गीय दश्य उपस्थित हो जाता था—मैं पिच पर विकेट के सामन बल्ला लेकर खडा हूँ। अम्पायर ने दोनो हाथ समटते हुए कुबडे के समान आग झुककर बाल फेंकने के लिये सिगनल दिया। एक विश्वविख्यात रेसर राकेट की गति से दौडत हुए आता है और अचानक बिगडैल साडे के समान बिदककर उछलता है और पूरी ताकत से गेंद को मरे विकेट की तरफ फेंकता है। मैं बल्ले से दो चार बार पिच को ठकठकाकर पास आयी गेंद पर इतनी जोर से शाट मारता हूँ कि वह बाउड्री को पार करती हुई आफिस मे बठे अभिभावको से शिक्षको की शिकायतो का ब्रह्मानन्द उठाते हुए हेडमास्टर के टेबुल पर आ गिरती है, ठीक उनकी आँखो के सामने। पहले तो व क्रोध मे चिल्लाते हैं "कौन बदतमीज लडका है? पकडना तो। बाप ने पढने के लिए भेजा है कि ढेलेबाजी करने के लिय।" किन्तु जब उन्हें मास्टर लोग तरह-तरह से विश्वास दिला देते हैं कि सर, यह

ढेला नही, क्रिकेट की गेंद है और किसी लडके ने नही, लल्लू सर ने मैदान म छक्का मारा है, सो यहाँ आ गिरी है, तो वे अवाक रह जाते है। फिर मास्टरो को डपट कर कहते है, "मुँह क्या देखत हो ? अपने स्कूल म इतनी बडी प्रतिभा है और अब तक तुम लोगो को मालूम नही हो पाया ? य कोई हिस्ट्री की छोटी छोटी तारीखें तो नही थ जिन्ह तुम खुद तो याद रख पाते नही और लडको को पूछ-पूछ कर पीटते रहते हो। अरे, देखते क्या हो ? घटी बजवाकर सारे लडको को इकट्ठा करो। आरती का थाल सजा दो और उनकी स्तुति करो। लेकिन जान मेरी श्रीमती जी को मुझसे कौन सा जन्मजात वैर है कि जब से इस घर मे उसने अपने श्रीचरण रखे हैं, खुशियो भरी मेरी हर कहानी का अन्त ट्रेजिक ही होता है। अब यही देखिये न, जब जब मेरे मस्तिष्क म इस स्वर्गीय दृश्य का रगीन टेलीविजन ऑन होता, मेरी श्रीमती जी बिना किसी प्रकार का खेद प्रकट किये रुकावट डाल देती। मुझे जोर जोर से झकझोरती हुई चिल्लाती, "क्या हुआ तुम्हे जी ? बिछावन पर सोये सोये बिना वजह के उछल क्या रहे हो ? मिर्गी लग गयी है क्या ?" मैं आँखें मलते हुए उठ बैठता और श्रीमती जी की बातें सुनकर मन ही मन हँसता—ठीक है, दे लो गालिया। लेकिन शीघ्र ही जब क्रिकेट-सम्राट की पत्नी कहलाओगी, उसके बगल में बैठकर हवाई जहाज से लदन और आस्ट्रेलिया की सैर करोगी, बड़े-बडे होटलो म टिकोगी, चमचमाती कारो पर चलोगी तो ये गालिया खुद ही भूल जाओगी और पछताओगी कि अनजाने में तुम एक महान पति को जलील करती रही। अब तक तो हर बात पर मैं हाथ जोडकर तुमसे माफी मागता रहा हूँ। अब भगवान अपनी असीम अनुकपा से वह दुलभ दिन भी दिखायेंगे जब तुम मुझसे माफी मागोगी। खैर, मैं माफ कर दूगा क्योकि इसके सिवा और मैं कर ही क्या सकता हूँ ? तुम भी क्या सोचोगी कि सचमुच कितने माफीनुमा मानव से तुम्हारा पाला पडा है !

यो ही झपकी लेते देह उछालते, झकझोरे जाते और गालियों की नमरा तीव्र होती बौछार सहते किसी प्रकार रात कटी। ऐसा लगा कि आज के सूरज की पहली किरण माथ पर लगी टुच्ची मास्टरी की गाढी कालिख को धोकर ले गयी और किरण नम्बर टू ने आकर मेरी महान

क्रिकेट-कैरियर का अमर उद्घाटन किया। बिछावन से उठा, झटपट मुंह धोया, बल्ले और गेंद पर मैच करने के लिये शरीर में काफी ताकत बनी रहे, इसलिये खूब डटकर जलपान किया और फिर नियम के विरुद्ध श्रीमती जी को मेरे द्वारा घर से बाहर पैर रखे जाने की सूचना दिये बिना पीछे वाले गेट से भाग चला। उद्देश्य था, यात्रा के समय अशुभ टीका टिप्पणियों से बचना। लेकिन जाने कैसे किसी एक्सपर्ट शिकारी कुत्ते के समान उसने पिछले दरवाजे से भागती मेरी गंध को सूंघ लिया और रसोईघर में ही गरज कर बोली, "आज सुबह-सुबह कहाँ चले? कोई नया ट्यूशन कर लिया है क्या? देखना, पैसे एडवांस ले लेना। नहीं तो फिर दो-तीन महीने पढ़ा कर अंगूठा दिखा देगा और तुम मूरख के समान उसकी नेकनीयती की वापसी का इंतजार करते रहोगे। और हाँ, जा ही रहे हो तो ये झोला लेते जाओ। लगे हाथों बनिये की दूकान से आटा और नमक लेते आना और एक झाड़ू भी।" मुझे कुछ भी सुनने का धैर्य नहीं था। 'हाँ'—'ना' करते हुए वहाँ से तेजी से निकल भागा। मैदान में पहुँचा तो यह देखकर दिल बिजली के पोल से भी ऊँचा उछलने लगा कि कल के पराठे, खीर, चाय और सिगरेट-माध्यम ने ड्रिल मास्टर पर अपना खूब रंग जमाया है। वे बल्ले और गेंद के साथ वहाँ बैठे बेसब्री से मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। हमलोगों ने झटपट पास पड़ी ईंटों के टुकड़ों का विकेट खड़ा किया। मेरे हाथ में बल्ला थमाकर वे बोले, "देखिये लल्लू बाबू, आप विकेट के सामने डटकर खड़े हो जाइये। मैं पहले धीरे धीरे गेंद फेंकूंगा। आप निशाना साध कर मारते जाइयेगा। ठीक है? रेडी?" मैंने भी जब रेडी कहा तो वे थोड़ी दूर जाकर पलटे, हौले हौले दौड़े और नियत स्थान पर आकर खड़े-खड़े गेंद फेंक दी। मैं भी तैयार था। बल्ले को काफी ऊपर उठा कर पूरी ताकत से गेंद पर शाट मार दिया।

अब हुआ यों कि गेंद तो मेरी टांगों से टकराकर वहीं स्थिर हो गयी किन्तु मेरे हाथों से छूटकर बाउंड्री की ओर उड़ चला। और गेंद एवं बल्ले की इस शरारत से मेरा संतुलन बिगड़ गया जिसके परिणामस्वरूप मैं लड़खड़ा कर विकेट पर चारों खाने चित्त हो गया। ईंटों के टुकड़े इधर उधर बिखर गये। ड्रिल मास्टर ने दौड़कर मुझे उठाया और झटपट सर्वेक्षण

करके बताया, "सिर मे बायी तरफ गूमड निकलने के पूरे आसार हैं, पीठ लहूलुहान है हाथ-पैर म सिफ हल्के-हल्के पाँच-सात खराच हैं, अन्यथा वे सही सलामत हैं। "फिर उन्होने देवताओ की आकाशवाणी वाली स्टाइल मे उदघोष किया "मैं इसी क्षण तुम्हे विश्व-—चैम्पियन घोषित करता हूँ क्योकि अबतक कोई भी माई का लाल ऐसा पैदा नही हुआ था दुनिया मे, जिसने अपनी जिन्दगी की पहली ही गेंद पर छक्का मारा हो जिससे डरकर गेंदबाजो विकेट के पास दुबक गयी हो और बैट बाउन्ड्री पार कर गया हो। ऐसा अभूतपूर्व प्रदशन सिफ तुम्हारे द्वारा पहली और अतिम बार हुआ है। अब है कोई बेटा जो तुम्हारा रेकॉर्ड तोडे। बस, यही सोच लो कि अब भारत रत्न की उपाधि तुम्हारी जेब मे है। अफमोस सिफ इस बात का है कि पास म कैमरा नही था अन्यथा ये टी० वी० वाले इस प्रदशन के फोटो के लिये मेरे पास लाखो बार झख मारते। और फोटो देने के पहले मैं उन्ह उसी प्रकार रूलाता जैसे वे अपने प्रोग्राम से दशको को रोज रूलाया करते हैं। खैर, अब तुम्हे क्रिकेट खेलने की जरूरत नही है। क्योकि इस महानतम उपलब्धि के बाद साधारण खेल खेलकर इस पर पानी फेरना अक्लमदी नही होगी यह तो वैसा ही होगा कि शेर का शिकार करने के बाद कोई चूहे के शिकार म लग जाये।"

मेरी प्रशसा मे वे और न जाने क्या-क्या कहते लेकिन तभी उनकी नजर बैट उठाये चले आ रहे हेडमास्टर पर पडी जिससे वे बोलना भूल प्रश्न चिन्ह बन कर खडे हो गये।

हेडमास्टर साहब पास आकर अपनी कुर्सी की मर्यादा के अनुसार गला फाड कर चिल्लाये, 'आप लोगो को सिर फुटौवल करना है तो शौक से कीजिये। मैं इस पुण्य काय म आपके सदोत्साह को बढाने मे पूर्ववत भरपूर सहयोग दूगा। लेकिन व्यक्तिगत झगडे म स्कूल के सार्वजनिक बल्ले की फेंका फेंकी मुझे पसद नही।"

ड्रिल मास्टर ने समझाना चाहा, "सर, ऐसा हुआ कि हमलोग क्रिकेट खेल रहे थे। ये गिर पडे। इनकी पीठ लहूलुहान हो गयी है ।"

"देखिये, मैं पहले भी हजारो बार, या अगर आपको सही गिनती आती हो, तो लाखो बार कह चुका हूँ कि व्यक्तिगत मामलो म मैं दखल

नही दता। यह मेर सिद्धा त के खिलाफ है। आपकी पीठ आपकी व्यवित-गत सम्पत्ति है। इसे लाल कीजिये या काली, इसम एक सरकारी स्कूल के हेड के बोलने की कोई गुजाइश नही। इनकी पीठ कोई लडके की पीठ तो है नहीं कि सावजनिक एरिया समझकर जब जिस मास्टर का जी चाहे, चार हाथ चला ल। हा, विद्यालय का सर्वोच्च अधिकारी होन के नाते मैं विद्यालय की सम्पत्ति के दुरूपयोग और तोड फाड को सहन नहीं कर सकता।" अतिम पक्ति बोलते-बोलते हेडमास्टर साहब का मुह फाईल के फीते के समान लाल हो गया।

ड्रिल मास्टर ने उतावला होकर कहा "सर, इनके रुरम गूमड ।"

हेड मास्टर साहब इतना सुनते ही आप से बाहर हो गये 'आप तो मास्टर जी ऐस बाल रह हो कि इनका सिर तो वहुत महत्वपूण है और यह बल्ला कुछ नही। जरा शा त चित्त से सोचिय कि यह बल्ला टूट जाता तो ? आप ही सबसे पहले कहते कि हड मास्टर ने तोड दिया। और चार फटीचरो को गवाह बना दते। और आप लल्लू बाबू ! मैंने कहा कि मेरे लडके को सुबह शाम थोडा पढा दिया कीजिये तो बोले कि समय ही नही मिलता। बल्ला ताडन के लिए समय मिलता है न!"

खर, इतिहास ने इसके वाद महत्वपूण मोड लिया। मैं हेडमास्टर के सुपुत्र को मुफ्त ट्यूशन पढाने लगा और इसके एवज म उ होंने मुझे स्कूल की क्रिकेट-टीम का मनेजर बना दिया। इसके अनेकानेक फायदे हुए। मरे पहले जो शिक्षक श्रेष्ठ मनेजर सपादित करते थे वे दस रुपय खच करत तो वीस का वाउचर वनात थे जिसस हेडमास्टर साहव को आतरिक व्यथा होती थी। जब मैं मनेजर बना तो दस खच करके अपनी काय कुशलता एव मितव्ययता का सिक्का जमान के लिए पाँच का वाउचर देता था जिसे हडमास्टर साहव पच्चीस के वाउचर मे तब्दील कर लेते थे। इससे उ ह आ तरिक आन द प्राप्त होता था, आत्मिक शा ति मिलती थी और काय को हमशा जारी रखने का न तिक वल मिलता था। मुझे यह फायदा मिला कि धीरे धीर मैं अपने शहर म विश्वविख्यात हो गया जैसे एक समय इस आर्यावत म इ दिरा इडिया थी और इडिया इ दिरा, उसी प्रकार इस शहर म लल्लू बाबू क्रिकेट हो गय और क्रिकेट लल्लू बाबू हो गया। बच्चा

को यह फायदा मिला कि चाहे वे हर बार हार ही क्या न जायें, उनको दिये जाने वाले ठोस जलपान की मात्रा मे कोई कटौती नही होती थी जैसा कि हार कर लौटने पर पहले वाले मैनेजर साहब किया करते थे।

मुझे तो ऐसा लगता है कि स्कूल क्रिकेट टीम और जलपान व्यवस्था म अन्योन्याश्रय सबंध है। यह इसी जलपान व्यवस्था का सिर पर चढ़कर बोलने वाला जादू है जिसने बहुत सारे ऐसे टीचरो और विद्यार्थियों को क्रिकेट रसिक बना दिया है जिन्हें खेलकूद से वैसी ही जन्मजात नफरत है जैसी भारतीय प्रजातंत्र म लीडरो को सच्चाई एव सच्चरित्रता से। उनकी क्रिकेट रसिकता की अग्नि परिक्षा लेने के लिये एक दिन मैंने घोषणा कर दी कि अगले मच मे जलपान की व्यवस्था नही हो पायेगी। पसे नही हैं। मच के दिन मदान म पहुँचा तो दग रह गया। खेल मे भाग लेने के लिये खुशामद करने वाले अवांछित प्रत्याशियो की सख्या एकदम कम हो गयी थी और शिक्षक वद जिन्होंने स्कूल से मच देखने और बच्चो को अनुशासित रखने के लिए प्रमाण किया था, रास्ते मे ही कहीं अदृश्य हो गये थे। मुझे तो लगता है कि अगर अन्तराष्ट्रीय मैचो म भी जलपान व्यवस्था खतम कर दी जाये तो खिलाडियो की सख्या मे बेहद गिरावट आयेगी हो सकता है कि बडे-बडे स्टेडियम मे क्रिकेट मैच देखा हो या टी० वी० पर तो आये दिन देखते ही होगे। मैच के दौरान दो-चार बार एक सजा सजाया ठेला मैदान म लाया जाता है। खिलाडी बैट बाल फेंक कर उधर लपकते हैं। और फटा इत्यादि पीते हैं। फटा पीने क बाद पाकिस्तानी खिलाडी खूब रन बनाते है या कई-कई विकेट गिराते हैं। लेकिन हिन्दुस्तानी खिलाडी इतना उत्साह नही प्रदर्शित करते। मान लिया जाये कि मदान म गद एक निश्चित दूरी तक जाती है। अगर बल्ले पाकिस्तानी खिलाडियो क हाथ म है तो व उतनी देर म तीन-चार रन मार लेंगे। लेकिन अगर बट हिन्दुस्तानी खिलाडी चला रहे हो तो वे एक रन से अधिक बनाने की तकलीफ नहा करेंगे। होशियार है न! पाकिस्तानी खिलाडियो के समान अहमक नहीं। मन ही मन बोलते होग—"साले, हम भी कोई पाकिस्तानी खिलाडी समझ लिया है क्या कि एक बोतल फटा पर पन्द्रह बार दौडें ?" देख लिया न आपने ? हिन्दुस्तान

अगर क्रिकेट मे फिसड्डी साबित होना है तो इसका कारण हमारे खिलाडियो मे खेल की समझ और उत्कृष्टता का अभाव नही वरन् फटा की कमी है, और फटा की कमी के चलते हारे गये मैचो के लिये आप अपने खिलाडियो को गलत ढग से दोषी नही ठहरा सकते ।

हार का एक कारण और है । ये पाकिस्तानी खिलाडी बडे चीटिंग बाज होते हैं । अपनी पारी मे तो वे अच्छी-सी गेंद लेकर खेलते हैं । जब हिन्दुस्तान की पारी आती है तो अच्छी गेंद को छिपा लेते हैं और टेढ़ी गेंद इन्हें थमा देते हैं । लो बेट, खेल अब और गिरा विकेट ! भारतीय खिलाडी या तो लज्जावश चुप रह जाते हैं या अपनी सरलता के कारण इस होशियारी को पकड नही पाते । अब आप ही बताइये—आगन टेढा होने से कोई सही-सही नाच सकता है क्या ? इसी प्रकार गेंद टेढी होने से कोई विकेट गिरा सकता है क्या ? या रन बनाने से अपनी प्रतिद्वन्द्वी को रोक सकता है क्या ?

इस प्रकार विश्व क्रिकेट के बारे मे मेरी बहुत सारी मौलिक मान्यतायें हैं । भारतीय क्रिकेट टीम पर मैंने इतना चिन्तन किया है । मेरी क्रिकेट कैरियर भी काफी लम्बी एव प्रभावोत्पादक है । इसके लिये मैं अपने स्कूल के हडमास्टर साहब का प्रमाण पत्र भी प्रस्तुत कर सकता हूँ । अत अगर एक बार मुझे भारतीय टीम का मनेजर नियुक्त किया जाये तो मैं क्रिकेट का इतिहास, भूगोल और अर्थशास्त्र—सब कुछ बदल सकता हूँ ।

टेस्ट क्रिकेट का, परीक्षा भवन मे [1]

डॉ० इन्द्रदेव आचार्य

अखिल भारतीय क्रिकेट ज्ञान जाँच आयोग
प्रथम व अंतिम प्रश्न-पत्र

पूर्णांक 100 समय एक घंटा

(निम्नांकित बारह प्रश्नों में से किन्ही दस प्रश्नो के उत्तर देने अनिवार्य है। सभी प्रश्नो पर समान गुणांक है।)

प्रश्न 1 निम्नलिखित विषयो मे से किसी भी एक विषय पर, 100 पंक्तियों मे (सेंचुरी लाइन्स मे) निबंध लिखें

(क) यदि भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान राजनारायण होते, तो क्या होता ?

(ख) मैं जबरन आउट घोषित कर दिया गया हूँ, क्योंकि अंपायर आर० एन० एस० का आदमी है।' ऐसा वक्तव्य, आउट होने पर, चरण सिंह दे सकते हैं या नही ?' कारण देते हुए चर्चा करिए।

(ग) 'इंदिरा गांधी अभी तक आउट कैसे नही हुई है ? इसकी जाँच के लिए फौरन आयोग बैठाया जाये।' जनता पार्टी के एक सदस्य की इस टिप्पणी पर अपनी टिप्पणी करें।

(घ) क्रिकेट भारतीय खेल नही है। हम तो गुल्ली-डंडा या कबड्डी खेल कर ही गौरवान्वित होना चाहिए।' मोरारजी भाई ऐसा कह सकते है या नहीं ? अपनी राय बतायें।

प्रश्न 2 निम्नलिखित वाक्य सच्चे हैं या झूठे, इस पर संक्षिप्त

टिप्पणी दें

(क) क्रिकेट पूँजीपतियों का खेल है क्योंकि भिखारियों को इसे खेलना नहीं आता।

(ख) चेतन चौहान को टेस्टमैचों में इसलिए लिया जाता है कि वह यशवंतराव चौहान के दूर के रिश्तेदार हैं।

(ग) गुगली बॉलिंग की वास्तविक शुरूआत तब से हुई है, जब आत्म ने हव्वा की दिशा में सेब फेंका था।

(घ) पाकिस्तानी क्रिकेट के कप्तान हमेशा जनरल जिया ही रहेंगे।

(ङ) पिछले दिनों जब बम्बई के वानखेड़े स्टेडियम में क्रिकेट टेस्ट हुआ तब टिकटों की बिक्री में क्रिकेट बोर्ड ने जो कमाई की, उससे ज्यादा कमाई उन भेलपूरीवाला, आलू-पकौड़ीवाला और पाव भाजीवाला ने की जो इन चीजों को स्टेडियम से बाहर बेच रहे थे।

प्रश्न 3 निम्नलिखित वाक्यों में जो भावार्थ है उसकी चर्चा आंकड़ों सहित करें।

'भारत और आस्ट्रेलिया के बीच केवल इसलिए क्रिकेट टेस्ट खेला गया कि सुनील गावस्कर को नये-नये रेकॉर्ड स्थापित करने का अवसर मिल सके।'

अथवा

'पाँच दिनों के टेस्ट मैच के दौरान जिस भारी संख्या में दर्शक आकर अपना भारी समय बरबाद करते हैं, उतने में लोग यदि चरखे चलायें, तो देश की सूती वस्त्र समस्या चुटकियों में हल हो जाये।'

प्रश्न 4 स्पिन बाल किसे कहते हैं ? इस प्रश्न का सही उत्तर निम्नांकित उत्तरों में से खोज निकालें

(क) जो बॉल, अहमदाबाद की स्पिनिंग मिल में तैयार हुई हो।

(ख) जो बाल, दलबदलू नेता की तरह कभी भी किसी भी दिशा में जा सकती हो।

(ग) घिसे हुए टेनिस बॉल को।

(घ) जो बाल, बैटसमैन की दिशा में जाने के बजाय बॉलर के हाथ

से छूट कर, स्वय बॉलर की ही पीठ की तरफ चली जाये ।

(घ) जो बॉल, वेदी-चद्रशेखर द्वारा फेंकी जाये ।

प्रश्न 5 'बाउसर' किसे कहते हैं ? निम्नांकित उत्तरो म से सही उत्तर खोजें

(क) एनाउसर का भाई बाउसर होता है ।

(ख) बटसमैन के सिर के ऊपर से निकल जानेवाली बाल बाउसर कहलाती है ।

(ग) मोटे खिलाडी को बाउसर कहकर चिढाते हैं ।

(घ) जिस बॉल को पीट कर छक्का लगाया जाये । उसे बाउसर कहते हैं ।

(च) अमरीका के सबसे प्रसिद्ध मुक्केबाज का लाड का नाम 'बाउसर' है असली नाम चाहे जो हो !

प्रश्न 6 नीचे के वाक्य सच्चे हैं या झूठे, इसका निर्णय कीजिए

(क) कपिल देव की बॉल पर जब कोई बैटसमैन छक्का लगा देता है, तब कपिल देव अपनी मूछ का एक बाल तोड कर गिरा देता है ।

(ख) घावरी की बाल पर जब किसी बैट्समैन का बीच का स्टप उड जाता है, तब स्लिप म खडे फील्डर स्टप के चारों ओर भागडा डास करते हैं ।

(ग) हर बार खेल शुरू होने से पहले, सुनील गावस्कर, हनुमान जी के मदिर मे जाकर पूजा करते हैं । गावस्कर को जब भी सौ या अधिक रन बनान म सफलता मिलती है तब वे दोबारा हनुमान मदिर जाकर, एक किलो सिंदुर और पाच किलो शुद्ध तेल के अलावा, दजन भर लाल लगोट भी चढाते है ।

प्रश्न 7 साबित कीजिए कि बुरी या कमजोर बैटिंग के कारण आज तक कोई भी टीम, क्रिकेट का कोई टेस्ट नही हारी है, क्योंकि हार का कारण, तो हमेशा निम्नलिखित मे स ही होता है

(क) धरती माता की इच्छा, यानी खराब पिच ।

(ख) इद्र देव की इच्छा, यानी बेवक्त बारिश ।

(ग) मानव मात्र की इच्छा, यानी पक्षपाती अपायर ।

(घ) मानव समुदाय की इच्छा, यानी दर्शकों का होहल्ला और हूटिंग।

(च) सूर्य भगवान की इच्छा, यानी बार बार छिपने और प्रकट होनेवाली धूप।

प्रश्न 8 आस्ट्रेलिया के साथ टस्ट के समय कमेंट्री का जिम्मा यदि किसी पारसी कमेंटेटर को सौंपा जाता, तो उसने खिलाडियों के नामों का अनुवाद इस प्रकार किया होता या नहीं, इसकी चर्चा करें

(क) डार्लिंग—'प्यारवाला।'

(ख) बॉडर—'सीमावाला।'

(ग) राईट—'अधिकारवाला।'

(घ) वाटमोर—'और-क्यावाला।'

(च) स्लीप—'निंदियावाला।

क्रिकेट कमेंट्री के बहाने खुद की बातें बताने के लिए।

क्रिकेट की चीजों का व्यापार करने के लिए।

व्यापारियोंवाली स्टाइल मे, यानी सिर पर काली टोपी, लंबा कोट और धोती पहन कर क्रिकेट खेलने के लिए।

नये खिलाडियों को प्रोत्साहन देने के बहाने अपनी शिष्य मडली बढाने के लिए।

पिच पर अपने बट के जरिये छक्का डास करने के लिए।

ओपनिंग बैटसमैन वनन के खतरों का विवेचन करने के लिए।

प्रश्न 10 वानखेड स्टेडियम मे सुन गये निम्नलिखित वाक्यों को किसने, कब, किससे और क्यों कहा होगा और कह देने का नतीजा क्या निकला होगा, इसकी पूर्ण विवेचना करिए।

(क) 'गवनस पवलियन म अमिताभ बच्चन जसे दीखते उस नौजवान की बगल मे फिल्मी एक्ट्रेस जसी दीखती, जो महिला बठी है। वह आपको दीख रही है या नहीं ? जो साडी उसन पहन रखी है, ठीक वही साडी मुझे फौरन लाकर दीजिए ! समझे ?

(ख) दूरबीन, खिलाडियों की तरफ रख कर देखिए। जिधर मैच खेला जा रहा है। उधर न दखकर, उन फैशनेबुल छोकरियों की तरफ

क्या देखे जा रहे हैं ?"

(ग) "ओ भाई साहब ! ऊपर से केले के छिलके क्यों फेंक रहे हैं ? फेंकना ही है, तो केले फेंकिए ! खा तो सकें ! लीजिए अपने छिलके वापस ! हुह !"

(घ) "मर गये ! बॉस से ऑफिस में यह कह कर आया था कि बीवी बीमार है। घर जाना होगा, छुट्टी दीजिए ! इधर बॉस ठीक सामने की कतार में आये बैठे हैं। उन्होंने अगर मुझे उड़ती नजर से भी देख लिया, तो "

(च) "इतने सारे लोग एक साथ 'आउट' बोल रहे हैं, तो भी अम्पायर सुनता क्यों नहीं ? क्या बहुमत में उसका जरा भी विश्वास नहीं है ? या वह एकदम बहरा है ?"

प्रश्न 11 क्रिकेट के खेल के बारे में निम्नलिखित व्यक्तियों के विचार क्या हो सकते हैं, इसका अंदाजा लगाते हुए, प्रत्येक व्यक्ति की ओर से पाँच-पाँच वाक्य लिखिए

☐ मेरी बीवी और क्रिकेट, अथवा
मेरी प्रेमिका और क्रिकेट।

☐ मेरा घरेलू नौकर और क्रिकेट, अथवा
हमारी मालिन और क्रिकेट।

☐ विनोबा भावे और क्रिकेट, अथवा
महात्मा गाँधी और क्रिकेट।

प्रश्न 12 'मैं क्रिकेटर क्यों नहीं बना ?' इस शीर्षक से, राजनारायण की शैली में, 500 शब्दों में टिप्पणी लिखिए !

नोट उपर्युक्त प्रश्नों में से किसी का भी उत्तर देना सरासर मूर्खतापूर्ण है, क्योंकि जिन्हें क्रिकेट में रुचि है, वे क्रिकेट मैच देखने की हड़बड़ी में उत्तर देने के लिए रुक नहीं सकेंगे और जिन्हें क्रिकेट में रुचि नहीं है, वे बहुत प्रयास करके भी किसी प्रश्न का उत्तर दे नहीं सकेंगे।

क्रिकेट रस-मजरी

अशोक चद्र शर्मा 'मलयज'

प्रथम खण्ड

क्रिकेट का मौसम आ गया। देश-देशातर की टीम अपने दौरे पर निकलकर कमाल दिखा रही हैं। वातावरण मे इन सख्याओ, विकेटो के गिरने आउट, रन-आउट, कैच-आउट का शोर गुजायमान हो रहा है। सक्षेप मे, सारा वातावरण क्रिकेटमय हो गया है। ऐसे म भला प्रेमी प्रेमिका वातावरण से क्या अछूते रहे। एक विह्वल प्रेमी, जो अपनी प्रेमिका के *नयन बाण से विचलित प्रतीत होता है, बडो ही कातर वाणी म कह* उठता है

दोहा

तुम 'बालर' सी हो अडिग, नयन तीन ही गेंद।
फेंक रही मेरी तरफ, सकटग्रस्त विकेट।

अर्थात हे प्रिये, नयन बाण रूपी गेंद, तुम मेरी ओर जिस अडिग भाव से फेंक रही हो, उमसे मेरा धीरज रूपी विकेट' सकटग्रस्त हो गया है। कहने का तात्पय यह है कि तुम्हारे नयन बाण के सम्मुख हे प्रिये! मैं स्वय को धैय धारण करने मे असमथ पा रहा हूँ।

प्रेमी प्रेमिका के तेवर बदलते न देखकर अधीर हो उठता है तथा बडी विनीत भाषा म, कवि के शब्दो म अपने को निम्न प्रकार व्यक्त करता है—

दोहा

नयन तीर के तेज से, हार गया,हूँ नार,
लगता है होकर रहेगी धीरज की हार,

तेज 'बाल' के फोर्स को, सहे न विकेट अधीर,
जब निज धुन मे ही रमा हो 'बॉलर' बपीर

हे कोमलांगी, मैं तुम्हारे नयन बाण के तेज को ठीक उसी प्रकार नही सहन कर पा रहा हूँ, जैसे फोस वाले 'बाल' को विकेट नही सह पाता है। प्रिये, फिर भी अपनी ही धुन मे मस्त 'बेदर्दी बॉलर' की भाँति, तुम अपने नयन बाण चलाए जा रही हो।

फिर भी प्रेमिका मानी हुई लगती तथा प्रेमी को सभाल सभालकर उसी प्रकार उसकी मनुहार करनी पडती है, जिस प्रकार 'टेस्ट मैच' मे शामिल खिलाडी बडी ही सावधानी से गेंदो को लेता है, कवि के शब्दो म

बल्लेबाज नवीन ज्यू खेले गेंद सभार,
धर धीरज ओ कामिनी, करता मैं मनुहार।

द्वितीय खण्ड

प्रथम खण्ड मे, प्रेमिका की उपमा 'बॉलर' से तथा प्रेमी की 'बल्लेबाज से की गई थी। इतना तो स्पष्ट ही है कि प्रेमिका की बालिंग बडी ही 'इकोनामिकल' थी तथा उसने प्रेमी को कही पर भी अनावश्यक छूट नही दी।

इस दूसरे भाग में प्रेमी की तुलना 'बॉलर' से तथा प्रेमिका की तुलना 'बैटसमन' (या बैटसवूमैन) से की गई है।

'पहले ओवर' मे प्रेमी ने 'रूप प्रशसा रूपी 'बॉल' प्रेमिका की ओर फेंकी तथा इसी स्टाइल की 'बाल' कई 'ओवर' तक फेंकता रहा। पर प्रेमिका शानदार बल्लेबाजी का प्रदशन करती हुई जरा भी विचलित नही हुई, ठीक उसी प्रकार जैसे कि 'अडियल बल्लेबाज' पर बॉलर का कोई भी प्रभाव नही पडता, कहने का तात्पय, प्रेमी द्वारा अपन रूप की प्रशसा सुन कर भी उसने उसे लिफ्ट नही दी। कवि के शब्दो मे

सोरठा रूप प्रशसा बाल, फेंकहू बार हजार प्रिय,
पर रीझी ना नार, अडियल बल्लेबाज सो,

क्रिकेट रस-मजरी

अशोक चन्द्र शर्मा 'मलयज'

प्रथम खण्ड

क्रिकेट का मौसम आ गया। देश-देशातर की टीमे अपने दौर पर निकलकर कमाल दिखा रही हैं। वातावरण म इन सम्याओ, विकेटों के गिरने, आउट, रन-आउट, कैच-आउट का शोर गुजायमान हो रहा है। सक्षेप म, सारा वातावरण क्रिकेटमय हो गया है। ऐसे म भला प्रेमी प्रेमिका वातावरण से क्यो अछूते रह। एक विह्वल प्रेमी, जो अपनी प्रेमिका के नयन बाण से विचलित प्रतीत होता है, बडी ही कातर वाणी म कह उठता है

दोहा

> तुम 'बालर' सी हो अडिग, नयन तीन ही गेंद।
> फेंक रही मेरी तरफ, सकटग्रस्त विकेट।

अर्थात ह प्रिये, नयन बाण रूपी गेंद, तुम मेरी ओर जिस अडिग भाव से फेंक रही हो, उससे मेरा धीरज रूपी 'विकेट' सकटग्रस्त हो गया है। कहने का तात्पय यह है कि तुम्हारे नयन बाण के सम्मुख हे प्रिये ! मैं स्वय को धैय धारण करन म असमथ पा रहा हूँ।

प्रेमी प्रेमिका के तेवर बदलते न देखकर अधीर हो उठता है तथा बडी विनीत भाषा म, कवि के शब्दो म अपने को निम्न प्रकार व्यक्त करता है—

दोहा

> नयन तीर के तेज से, हार गया,हूँ नार,
> लगता है होकर रहेगी धीरज की हार,

तेज 'बाल' के फोस को, सहे न विकेट अधीर,
जब निज धुन मे ही रमा हो 'बालर' बेपीर

हे कोमलांगी, मैं तुम्हारे नयन बाण के तेज को ठीक उसी प्रकार नही सहन कर पा रहा हूँ, जैसे फोस वाले 'बाल' को विकेट नही सह पाता है। प्रिये, फिर भी अपनी ही धुन मे मस्त 'बेदर्दी' बॉलर की भांति, तुम अपने नयन बाण चलाए जा रही हो।

फिर भी प्रेमिका मानी हुई लगती तथा प्रेमी को सभाल सभालकर उसी प्रकार उसकी मनुहार करनी पडती है, जिस प्रकार 'टेस्ट मच' म शामिल खिलाडी बडी ही सावधानी से गेंदो को लेता है, कवि के शब्दो म

बल्लेबाज नवीन ज्यू खेले गेंद सभार,
धर धीरज ओ कामिनी, करता मैं मनुहार।

द्वितीय खण्ड

प्रथम खण्ड मे, प्रेमिका की उपमा 'बॉलर' से तथा प्रेमी की 'बल्लबाज' से की गई थी। इतना तो स्पष्ट ही है कि प्रेमिका की बालिंग बडी ही 'इकोनॉमिकल' थी तथा उसने प्रेमी को कही पर भी अनावश्यक छूट नही दी।

इस दूसरे भाग मे प्रेमी की तुलना 'बॉलर' से तथा प्रेमिका की तुलना 'बैटसमन' (या बैटसवूमन) से की गई है।

'पहले ओवर' म प्रेमी ने 'रूप प्रशसा' रूपी 'बॉल' प्रेमिका की ओर फेंकी तथा इसी स्टाइल की 'बॉल' कई 'ओवर' तक फेंकता रहा। पर प्रेमिका शानदार बल्लेबाजी का प्रदर्शन करती हुई जरा भी विचलित नही हुई, ठीक उसी प्रकार, जैसे कि 'अडियल बल्लेबाज' पर बॉलर का कोई भी प्रभाव नही पडता, कहने का तात्पर्य, प्रेमी द्वारा अपने रूप की प्रशसा सुन कर भी उसने उसे लिफ्ट नही दी। कवि के शब्दो मे

सोरठा रूप प्रशसा बाल, फेंकहू बार हजार प्रिय,
पर रीभी ना नार, अडियल बल्लेबाज सो,

यही नहीं, कई 'ओवर' तक रूप प्रशंसा रूपी बॉल फेंककर जब प्रेमी थक गया, तो उसने, स्टाइल बदल दी तथा अब वह प्रस्ताव रूपी 'बॉल' फेंक रहा है। अनुप्रास की अन्यतम छटा बिखेरते हुए, कवि ने प्रेमी की विवशता का क्या ही सजीव चित्रण किया है, देखिए

दोहा मेरे हर प्रस्ताव को यूँ करती इनकार,
ज्यूं 'बालर' के बॉल को बल्ला दे दुत्कार,

अर्थात मेरी प्रेमिका, मेरे हर प्रस्ताव को ठीक उसी प्रकार अस्वीकार कर देती है, जैसे बॉलर की गेंद को बल्ला झटक कर दूर हटा देता है।

पर क्रिकेट तो 'अवसर' का खेल है। हमेशा प्रेमी को लिफ्ट न देने वाली प्रेमिका को भी, परीक्षा के समय अथवा नोटस प्राप्त करते समय, विनम्र होना ही पड़ता है, कवि के विचार में, ऐसे समय यह न समझना चाहिए कि प्रेमिका का रुख बदल गया है, क्योंकि विषम स्थिति में पड़ने अथवा 'लंच का समय' करीब आने पर चतुर बल्लेबाज संभल-संभल कर बैटिंग करने लगते हैं। कवि के शब्दों में

दोहा संभल-संभल कर खेलते बल्लेबाज प्रवीन
लंच काल नजदीक हो, या हालत हो दीन।

सोरठा हो इक्जाम करीब, लिफ्ट तभी देती प्रिया,
या कहती तब प्लीज, नोटस न हो जब मिल रहे।

तृतीय खण्ड

इस खण्ड में प्रेमी के किसी व्यवहार से, प्रेमिका तुनक कर रूठने का अभिनय कर रही है। गालों पर हाथ रख, गुमसुम हो वह बैठ गई है, प्रेमिका की यह स्थिति प्रेमी को नागवार सी लग रही है। उदासी ने उसे आ घेरा है। कवि भावुक हो यूं कह उठता है

दोहा रूठ गई है प्रेमिका सुने न कोई बात।
बैठी गुपचुप सोचती रख गालों पर हाथ।

मानो वर्षा हो गई, गया फील्ड है भीग,
खेल हो गया बद है, रही उदासी दीख।

प्रेमिका का रूठना, गालो पर हाथ रखकर गुमसुम हो सोचना प्रेमी को बडा ही कष्टप्रद प्रतीत हो रहा है। लगता है अच्छे खासे चलते खेल के बीच म ही बरसात हो गई हो, तथा फील्ड भीग जाने के कारण खेल बन्द हो गया हो।

काव्य सौष्ठव खेल बन्द हो जाने के फलस्वरूप उत्पन्न उदासी म समता स्थापित की गई है।

चतुर्थ खण्ड

इस खण्ड म, विषयातर के रूप म, कवि प्रेमी प्रेमिका की चर्चा करता है। कवि न एक ऐसे पति को अपनी कृति का विषय बनाया है, जो प्रति मास अपनी सारी आमदनी पत्नी को सौप देता है, पर पत्नी सारा धन साडियो पर खच कर देती है तथा पति द्वारा जेब खच मागे जाने पर किफायतसारी का उपदेश देती है। कवि के शब्दों में, पति कहता है

सोरठा देता तुमको सौप अपनी सारी आय मैं,
फिर क्यो करती कोप, जेब खच जब मागता।
दोहा वो हफ्ता मेडन गया, ये भी जाता और,
इकोनामिक बॉलर सदश क्यो देती स्कोर।

हे प्रिये ! तुम जेब खच देन मे वही प्रवत्ति दिखा रही हो, जो प्रवृत्ति 'रन' दने मे 'इकोनॉमिक बॉलर' दिखाते है। सुमुखि सुन्दरी, तुम्ह यह ज्ञात ही है कि पिछले हफ्ते मुझे किफायतसारी के उपदेशो के सिवा कुछ भी नही मिला, इस हफ्ते म भी थोडा-बहुत देकर टरकाना चाहती हो। आखिर इकोनॉमिक बालरो वाली प्रवृत्ति का तुम क्या अनुसरण कर रही हो ?

पहलवान गली की क्रिकेट कमेंट्री

धनजय कुमार

ये आकाशवाणी है। अब आप कलानगर मोहल्ले की पहलवान गली मे हो रहे क्रिकेट का आँखा देखा हाल सुनें। अभी जब कि सुबह के आठ-सवा-आठ हो रह हैं। पहलवान गली के पूरब तरफ वाले पचभुजाकार मैदान म खिलाडी अशोक और भजराम आ चुके है। उन्होंने इटो को एक दूसर के ऊपर सजाकर विकेट बना लिया है। दूसरी तरफ भी बाइस कदम नाप कर इटो की सहायता से ही *एक नानस्टाइक एण्ड का विकेट तैयार* कर लिया गया है। खिलाडियो की सख्या कम होने के कारण दोनो मौजूद खिलाडियो ने फिलहाल खेल प्रारम्भ कर दिया है। बॉलिंग का दायित्व भजराम को सौंपा है। और अशोक ने बटिंग तथा विकेट कीपिंग का दोहरा दायित्व खुद ले लिया है।

इस बीच भजराम की पहली गेंद को सुरक्षात्मक ढग से खेल दिया अशोक न। भजराम की दूसरी बॉल को स्ट्रेट ड्राइव करना चाहा था अशोक ने लकिन काक की बॉल और 'चले' के बेट म सम्पर्क स्थापित न हो सका और बाल बहुत दूर पीछे चली जा रही है अशोक बैट को क्रीज पर ही छोडकर बाल के पीछे दौड रह हैं और उन्होंने उसे नाली म जाने स पहले ही पकड लिया है। विकेट के करीब आकर उन्होने भजराम की तरफ बडा ही सुन्दर थ्रो किया। बॉल सीधे जाकर विकेट पर गिरी। अशोक ने भजराम से कहा, देखा निशाना ?' और साथ म दो अगुलियो को मुह मे डालकर एक तेज सीटी बजा दी—फिर ।

अब मदान म खिलाडियो की सख्या पहले की अपेक्षा ज्यादा हो गई

है। पूरे पाच खिलाडी हो गए हैं, बहुतो के आने की सम्भावना है। नए विकेट कीपर ने हाथा पर चप्पल का दस्ताना चढा लिया है। भजराम अपन ओवर की आठवी फेंकने के लिए तैयार वो चले, उन्होंने इट के विकेट को पार किया—सुन्दर गुड लेन्थ बाल, थोडी अन्दर की तरफ आती हुई। अशोक ने उसके प्रति आदर का भाव दिखाते हुए बल्ले को थोडा धीरे घुमाया और गेंद सीधे विकेट कीपर समसुदीन के हाथा मे। गेंद भजराम को वापस देने से पहले समसुदीन ने टोका—"ओवर हो गया तुम्हारा ?" "नही एक बॉल और है।" भजराम ने ईमानदारी से बताया। बॉल पुन भजराम के हाथो मे पहुँच गई और वह अपने बालिंग रन पर वापस जा रहे है—अपने ओवर की अतिम गेंद करने। बहुत ही अच्छी गेंद जिसे अशोक न उछाल दिया है गोबर के ढेर की तरफ और बडे ही शानदार ढग से वहाँ खडे फील्डर 'छेदी' ने उसे लपक लिया और अशोक आउट हो गए बिना कोई रन बनाए। बल्ले को वही क्रीज पर पटक कर वा छेदी से बॉल माग रहे हैं कि अन्य खिलाडियो की आवाज गूज उठी—नही नही तुम अभी खेलकर उठे हो।' अशोक को मजबूर हो गड्ढे के पास फील्डिंग के लिए खडा होना पडा।

भजराम ने डेढ बैट नापा और बिना गाड लिए ही पूरे विकेट को गाड कर लिया। इस समय गेंद 'भगवान' के हाथ मे है, जो इलाके के सबसे फास्ट बालर माने जात हैं। अपन ओवर की पहली गेंद फेंकन का तैयार। गेंद पर शायद कुछ गन्दगी लग गई थी, जिसे उन्होने अपने पतलून के पीछे पोछ कर साफ किया और चल पडे अपन बॉलिंग रन पर। वो दौडे, विकेट को पार किया और बहुत ही तेज गेंद, आफ स्टम्प स बहुत बाहर जाती हुई, जिसे भजराम ड्राइव करना चाहत थे, पर गेंद बैट मे न लगकर उनके पायजामे को छूती हुए विकेट कीपर की तरफ निकल गई। बडे जोरो की एल० बी० डब्लू० की अपील हुई और हाँ भजराम आउट। भगवान की पहली गेंद पर। बहुमत ने उसे आउट घोषित किया।

विकेट कीपर समसुदीन ने चप्पल का दस्ताना उतार कर विकेट के पीछे फेंका और भजराम स बैट छीन लिया। इस बीच द्वारिका भी क्रीज पर आ गए हैं, दोना म बैट छीना झपटी चल रही है। द्वारिका का कहना

है—पहले मैं आया था। समसुदीन बैंट को मजबूती से पकडकर, पीछे खीचते हुए कह रहे हैं—पहले मैं आया था, चाहे अशोक से पूछ लो। अशोक ने ममसुदीन के पक्ष मे निर्णय दिया। बल्ला समसुदीन के हाथ मे है और द्वारिका निराश होकर क्षेत्र रक्षण स्थल पर वापस जा रहे हैं। भगवान अपने ओवर की अगली गेंद फेंकने को तैयार—बहोत ही अच्छी गेंद सुर्रा । यदि ऐन वक्त पर समसुदीन ने बल्ला न लगाया होता तो पूरी सम्भावना थी उनके आउट होने की। वे भाग्यशाली रहे, जो ऐन वक्त पर उन्होंने बल्ला लगा दिया। समसुदीन ने खुद ही गेंद को उठाया और बॉलर भगवान को सौप दिया। भगवान की ये गेंद थोडी फ्लाइटेड, जिसे समसु ने आगे बढकर ड्राइव कर दिया मदान मे खडी भैंस की तरफ और वो रन लेना चाहते थे, पर देखा बॉल भगवान के हाथ मे वापस आ चुकी है और वह धीरे धीरे स्ट्राइकर एण्ड पर आने लगे। पाचवी गेंद एक बार फिर स सुरा , पर लेग स्टम्प से काफी बाहर कोई खतरा नही, पर भविष्य म हो सकता है। भगवान बहुत ही खतरनाक बॉलर जो ठहरे। समसुदीन चिल्ला रहे हैं—'तुम्हारा ओवर हो गया। 'अब साले ? अभी तो तीन बॉल और बाकी है।' बॉल की सख्या को लेकर दोनो म वाद विवाद हो रहा है। अब गेंद और बल्ले के मालिक अशोक ने हस्तक्षेप किया— 'नही एक बॉल है तरी' भगवान चुपचाप अशोक की बात को मान कर अपनी अतिम बाल करने के लिए वापम बालिंग रन पर जा रहे हैं। काफी उग्र दिखाई दे रहे है वे। इस बार उनका बालिंग रन काफी बढ गया है। शायद अपने ओवर की अतिम बाल वो बहुत [illegible] ना चाहते है। गेंद काफी तेजी के साथ आई, समसुदीन घब [illegible] पीछे हटे, उनका सतुलन बिगड गया और विकेट भर [illegible] ने उह हिट विकेट आउट कर दिया। वे [illegible] स्थल पर।

इस सम[illegible] उम्र मे अ[illegible] बडे हैं अनुभवी खि[illegible] बीच थुका कर, [illegible]

खडे हो गय ह । इस बीच क्षेत्ररक्षण म काफी तब्दीली, सभी क्षत्ररक्षका न मदान का छोर पकड लिया है । अशाक पीपल के पड के नीचे खडे होकर क्षेत्ररक्षण कर रहे हैं छाया का भी आनन्द मिल रहा है उन्ह । 'सुनहरी' अपन पहले ओवर की पहली गेंद करने को तैयार । काफी छोटा बालिग रन । उन्होंने विकेट को पार किया और इस गेंद को घुमा दिया है द्वारिका ने । इस बीच द्वारिका ने दो रन पूरे कर लिए । उनका खाता दो रन से खुला । सुनहरी की अगली गेंद बहुत ही अच्छी गेंद द्वारिका बीट हुए । उन्होंने पीछे मुडकर देखा गेंद आफ स्टम्प से थोडी ही ऊपर होकर [illegible]ल गयी है । इस बीच मैं देख रहा हूँ एक भद्र महिला का प्रवेश हुआ [illegible] मे खेल रुक गया है । वो महिला शायद किशन की मा है । किशन [illegible] वह मदान से बाहर ले जा रही है । कुछ बडबडाती भी आप[illegible] शायद सुनाई भी दे रहा हो—'बिना खाए-पीए चला आता है । अन्य खिलाडी इस दृश्य को [illegible]द के चेहरे पर तो अतिरिक्त खुशी दीख रही मे उसका ही नम्बर होगा द्वारिका के जा चुकी है और खेल एक बार फिर से [illegible] ओवर की अगली गेंद फेंकने को [illegible] ये गेंद हा हा मिली मिड हसी का फौवारा फूट पडा । फील्डर [illegible] को । सुनहरी की अगली द्वारिका ने शायद छक्का, और की छत पर— धडाम । सभी देख रहा हू एक भी खिलाडी नजर आप लोगो स ये अनुरोध है कि को थोडी-थोडी देर बाद खाल

[illegible]

है—पहले मैं आया था। समसुदीन बैंट को मजबूती से पकडकर, पीछे खीचते हुए कह रहे हैं—पहले मैं आया था, चाहे अशोक से पूछ लो। अशोक ने समसुदीन के पक्ष मे निणय दिया। बल्ला समसुदीन के हाथ में है और द्वारिका निराश होकर क्षेत्र रक्षण स्थल पर वापस जा रहे हैं। भगवान अपने ओवर की अगली गेंद फेंकने को तैयार—बहोत ही अच्छी गेंद सुर्रा । यदि ऐन वक्त पर समसुदीन ने बल्ला न लगाया होता तो पूरी सम्भावना थी उनके आउट होने की। वे भाग्यशाली रहे, जो ऐन वक्त पर उन्होंने बल्ला लगा दिया। समसुदीन ने खुद ही गेंद को उठाया और बालर भगवान को सौंप दिया। भगवान की ये गेंद थोडी फ्लाइटेड जिसे समसु ने आगे बढकर ड्राइव कर दिया मैदान मे खडी भैंस की तरफ और वो रन लेना चाहते थे, पर देखा बॉल भगवान के हाथ मे वापस आ चुकी है और वह धीरे-धीरे स्ट्राइकर एण्ड पर जाने लगे। पाचवी गेंद एक बार फिर से सुर्रा , पर लेग स्टम्प से काफी बाहर कोई खतरा नही, पर भविष्य म हो सकता है। भगवान बहुत ही खतरनाक बॉलर जो ठहरे। समसुदीन चिल्ला रहे हैं—'तुम्हारा ओवर हो गया।' 'अब साले ? अभी तो तीन बॉल और बाकी है।' बॉल की सख्या को लेकर दोनों म वाद विवाद हो रहा है। अब गेंद और बल्ले के मालिक अशोक न हस्तक्षेप किया—'नही एक बॉल है तेरी' भगवान चुपचाप अशोक की बात को मान कर अपनी अतिम बॉल करने के लिए वापस बालिंग रन पर जा रहे हैं। काफी उम्र दिखाई दे रहे है वे। इस बार उनका बालिंग रन काफी बढ़ गया है। शायद अपने ओवर की अतिम बॉल को बहुत ही फास्ट करना चाहते हैं। गेंद काफी तेजी के साथ आई, समसुदीन घबरा कर एकदम स पीछे हटे, उनका सतुलन बिगड गया और विकेट भरभरा कर गिर पडे। बहुमत ने उन्हें हिट विकेट आउट कर दिया। वे वापस जा रहे हैं अपने क्षेत्र रक्षण स्थल पर।

इस समय बैंट है गली के धाकड बल्लेबाज द्वारिका के हाथो म जो उम्र म अन्य खिलाडियो से काफी बडे हैं—करीब बाइस-तेईस वष क अनुभवी खिलाडी। बल्ले को आधा के बीच फसा कर हथेलियो पर थूक थूका कर एक दूसरे से रगड कर मिला लिया उन्होंने और बैंट थाम कर

खडे हो गये हं। इस बीच क्षेत्ररक्षण में काफी तब्दीली, सभी क्षत्ररक्षकों ने मैदान का छोर पकड लिया है। अशोक पीपल के पड के नीचे खडे होकर क्षेत्ररक्षण कर रहे हैं, छाया का भी आनन्द मिल रहा है उन्हें। 'सुनहरी' अपने पहले ओवर की पहली गेंद करने को तैयार। काफी छोटा वालिंग रन। उन्होंने विकेट को पार किया और इस गेंद को घुमा दिया है द्वारिका ने। इस बीच द्वारिका ने दो रन पूरे कर लिए। उनका खाता दो रन से खुला। सुनहरी की अगली गेंद बहुत ही अच्छी गेंद द्वारिका बीट हुए। उन्होंने पीछे मुडकर देखा गेंद आफ स्टम्प से थोडी ही ऊपर होकर निकल गयी है। इस बीच मैं देख रहा हूँ एक भद्र महिला का प्रवेश हुआ है मैदान में खेल रुक गया है। वो महिला शायद किशन की मां है। किशन का कान पकडकर वह मैदान से बाहर ले जा रही है। कुछ बडबडाती भी जा रही है। आपको शायद सुनाई भी दे रहा हो— बिना खाए पीए सबेरे सबेरे क्रिकेट खेलने चला आता है । अन्य खिलाडी इस दृश्य को देख कर हँस रहे हैं, और अगद के चेहरे पर तो अतिरिक्त खुशी दीख रही है शायद इसलिए कि अब बैटिंग में उसका ही नम्बर होगा द्वारिका के बाद। महिला मैदान से बाहर जा चुकी है और खेल एक बार फिर से प्रारम्भ हो गया है। सुनहरी अपने ओवर की अगली गेंद फेंकने को तैयार—उन्होंने विकेट का पार किया और ये गेंद हा हा मिली मिड आन पर खडे फील्डर की पीठ पर। हंसी का फौवारा फूट पडा। फील्डर बुदबुदाया— साले और बॉल वापस सुनहरी को। सुनहरी की अगली गेंद पर ही शक्तिशाली ड्राइव किया है द्वारिका ने शायद छक्का, और गेंद जाकर गिरी है पहलवान की टीन की छत पर— धडाम । सभी खिलाडियों में भगदड मच गई, और मैं देख रहा हूं एक भी खिलाडी नजर नहीं आ रहा मैदान में। फिर भी मेरा आप लोगों से ये अनुरोध है कि अपने-अपने ट्रांजिस्टरों और रेडियो सेटों को थोडी थोडी देर बाद खोल कर देख लें। खेल कभी भी प्रारम्भ हो सकता है।

है—पहले मैं आया था। समसुदीन बैंट को मजबूती से पकड़कर, पीछे खींचते हुए कह रहे हैं—पहले मैं आया था, चाहे अशोक से पूछ लो। अशोक ने समसुदीन के पक्ष मे निणय दिया। बल्ला समसुदीन के हाथ मे है और द्वारिका निराश होकर क्षेत्र रक्षण स्थल पर वापस जा रहे हैं। भगवान अपने ओवर की अगली गेंद फेंकने को तैयार—बहोत ही अच्छी गेंद सुर्री । यदि ऐन वक्त पर समसुदीन ने बल्ला न लगाया होता तो पूरी सम्भावना थी उनके आउट होने की। वे भाग्यशाली रहे, जो ऐन वक्त पर उन्होंने बल्ला लगा दिया। समसुदीन ने खुद ही गेंद को उठाया और बालर भगवान को सौंप दिया। भगवान की ये गेंद थोडी फ्लाइटेड, जिसे समसु ने आगे बढकर ड्राइव कर दिया मैदान मे खडी भस की तरफ और वो रन लेना चाहते थे, पर दखा बॉल भगवान के हाथ म वापस आ चुकी है और वह धीरे-धीरे स्ट्राइकर एण्ड पर जाने लगे। पाचवी गेंद एक बार फिर स सुरा , पर लेग स्टम्प से काफी बाहर कोई खतरा नही, पर भविष्य म हो सकता है। भगवान बहुत ही खतरनाक बॉलर जो ठहरे। समसुदीन चिल्ला रह हैं—'तुम्हारा ओवर हो गया।' 'अब साले ? अभी तो तीन बॉल और बाकी है।' बॉल की सख्या को लेकर दोनो मे वाद विवाद हो रहा है। अब गेंद और बल्ले के मालिक अशोक ने हस्तक्षेप किया—'नहीं एक बॉल है तेरी' भगवान चुपचाप अशोक की बात को मान कर अपनी अंतिम बॉल करन के लिए वापस बालिंग रन पर जा रहे हैं। काफी उग्र दिखाई दे रहे हैं वे। इस बार उनका बॉलिंग रन काफी बढ़ गया है। शायद अपने ओवर की अंतिम बॉल वो बहुत ही फास्ट करना चाहते हैं। गेंद काफी तेजी से साथ आई, समसुदीन घबरा कर एकदम स पीछे हटे, उनका सतुलन बिगड गया और विकेट भरभरा कर गिर पडे। बहुमत ने उन्हें हिट विकेट आउट कर दिया। वे वापस जा रहे हैं अपन क्षेत्र रक्षण स्थल पर।

इस समय बैंट है सबसे धाकड बल्लेबाज द्वारिका के हाथो म जो उम्र म अन्य खिलाडियों से काफी बडे हैं—करीब बाइस-तेईस वर्ष क अनुभवी खिलाडी। बल्ले को जांघो क बीच फसा कर हथेलियों पर थूक थूका कर एक दूसरे म रगड कर मिला लिया उन्होंने और बैंट तान कर

खड़े हो गये है। इस बीच क्षेत्ररक्षण म काफी तब्दीली, सभी क्षत्ररक्षको ने मैदान का छोर पकड़ लिया है। अशोक पीपल क पेड के नीचे खड़े होकर क्षेत्ररक्षण कर रहे हैं छाया का भी आनन्द मिल रहा है उन्हे। सुनहरी अपन पहल ओवर की पहली गेंद करन का तैयार। काफी छोटा वालिंग रन। उन्होने विकेट को पार किया और इस गेंद को घुमा दिया है द्वारिका ने। इस बीच द्वारिका ने दो रन पूरे कर लिए। उनका खाता दो रन से खुला। सुनहरी की अगली गेंद बहुत ही अच्छी गेंद द्वारिका बीट हुए। उन्होंने पीछे मुड़कर देखा गेंद आफ स्टम्प स थोड़ी ही ऊपर होकर निकल गयी है। इस बीच मैं देख रहा हूँ एक भद्र महिला का प्रवेश हुआ है मैदान म खेल रुक गया है। वो महिला शायद किशन की मा है। किशन का कान पकड़कर वह मदान से बाहर ले जा रही है। कुछ बडबडाती भी जा रही है। आपको शायद सुनाई भी दे रहा हो— बिना खाए पीए सबेरे सबेरे क्रिकेट खेलने चला आता है ।' अन्य खिलाड़ी इस दृश्य को देख कर हँस रहे हैं, और जगद के चेहरे पर तो अतिरिक्त खुशी दीख रही है शायद इसलिए कि अब बैटिंग मे उसका ही नम्बर होगा द्वारिका के बाद। महिला मदान से बाहर जा चुकी है और खेल एक बार फिर से प्रारम्भ हो गया है। सुनहरी अपने ओवर की अगली गेंद फेंकने को तैयार—उन्होन विकेट को पार किया और य गेंद हा हा मिली मिड आन पर खड़े फील्डर की पीठ पर। हसी का फौवारा फूट पडा। फील्डर बुदबुदाया—'साले और बॉल वापस सुनहरी को। सुनहरी की अगली गेंद पर ही शक्तिशाली ड्राइव किया है द्वारिका ने शायद छक्का, और गेंद जाकर गिरी है पहलवान की टीन की छत पर— धड़ाम । सभी खिलाडियो मे भगदड़ मच गई और मैं देख रहा हू एक भी खिलाड़ी नजर नहीं आ रहा मदान मे। फिर भी मेरा आप लोगो से ये अनुरोध है कि अपने-अपन ट्रांजिस्टरो और रेडियो सेटो को थोड़ी थोड़ी देर बाद खोल कर देख लें। खेल कभी भी प्रारम्भ हो सकता है।

क्रिकेटाधिकारियों के नाम खुला पत्र

हेमु भारद्वाज

प्रिय क्रिकेटाधिकारियो !

लो ! वेस्टइंडीज के विरुद्ध यह टेस्ट शृंखला हम हार गये। (बुरी तरह हार गये—कहना बेकार ही है क्योंकि हार अंतत हार ही होती है।) निराशा की कोई बात नहीं। क्योंकि भारतीय क्रिकेट के पराजय के स्थायी नाटक में जीत एक आकस्मिक घटना है। (हार्डी के शब्दों को बदलने के लिए क्षमा करें।) और जब जब यह आकस्मिक घटना घट जाती है सारा देश पागल हो जाता है और भूल जाता है कि और भी गम हैं जमाने में क्रिकेट के सिवा।

खैर, आप लोगों ने भारतीय क्रिकेट की टीम में मुझे नहीं चुना। कोई बात नहीं। भविष्य में भारतीय टीम टेस्ट शृंखलाएं खेलेगी ही। आप लोगों से मेरा अनुरोध है कि भविष्य में किसी भी टेस्ट शृंखला के लिए चुनी जाने वाली टीम में मेरे नाम की घोषणा अभी से कर दें। जब आप मैच शुरू होने में पांच मिनट पूर्व के कप्तान की घोषणा कर सकते हैं तो महीने पूर्व एक खिलाड़ी की घोषणा कर नया कीर्तिमान स्थापित क्यों नहीं कर सकते! पहले से इसलिए कह रहा हूं कि ऐन वक्त पर आप लोगों पर अनेक दबाव पड़ने लगते हैं। मेरा नाम फिर दबा रह जायेगा आप फिर गलती कर जायेंगे और सारा देश फिर आपको कोसेगा।

आपको विश्वास दिलाता हूं कि आप मेरे नाम की घोषणा कर दीजिए, मैं तुरन्त स्वीकार कर लूंगा। हमारे देश में कोई पद आफर होने पर उसे अस्वीकार करने की परम्परा नहीं है—अपनी अयोग्यता बताते

हुए तो बिलकुल भी नही।

आप लोगो के चयन के खिलाफ पत्रकार, खेलप्रेमी और अनेक विशेषज्ञ हर बार शोर मचाते हैं, आप लोगो की पक्षपातपूर्ण नीति और अदूरदर्शिता की आलोचना करते हैं। मगर तीव्रविरोध और कटु आलोचनाओं के बावजूद आप लोग हर बार गलती करते हैं। जानता हूँ, यदि आपने मेरे चयन की घोषणा कर दी तो सारा देश आपके खिलाफ हो जाएगा। इससे आप पर तो कोई फर्क पडेगा नहीं, मैं सुर्खियो मे आ जाऊंगा। मेरे नगर के निवासी मेरा अभिनंदन करेंगे, मेरे नाम पर कोई मैच आयोजित करेंगे। मुझे आप लोग इज्जत से क्यों महरूम करते हैं?

आप लोग कह सकते हैं कि मेरा नाम तो कभी क्रिकेट जगत् मे चमका ही नही, तो साहब इससे क्या फर्क पडता है। वेस्ट-इण्डीज के खिलाफ पिछली टेस्ट शृंखला मे हमारे कप्तान 10 रन प्रति पारी के हिसाब से भी रन नही बना पाए। वर्तमान टेस्ट शृंखला का घाव तो ताजा ही है। आप खुद ही देख लीजिए न। अच्छे-अच्छे खिलाडी जो क्रिकेट के अलावा कुछ भी नही जानते लगातार बिना रन बनाए आउट होते रहते है। मैं वादा करता हूँ कि इन्हा अनुभवी खिलाडियो की गरिमामय परम्परा को कायम रखने के प्रयास कर देश की क्रिकेटी इज्जत मे इजाफा करूंगा।

तथापि मै अपना परिचय दे रहा हूँ—मेरी उम्र चालीस वर्ष है। आप कहेंगे, 'भाई इस उम्र मे तो पहले खिलाडी सन्यास ले लेता है।' मानता हूँ पर अपने देश मे सन्यास लिया नही जाता, दिलाया जाता है। वेस्ट इंडीज के कप्तान क्लाइव लायड की उम्र कौन कम है? पर वे बराबर कप्तानी पर जमे हैं। आपको याद होगा कि आस्ट्रेलिया के हाथो पिटती इंग्लैंड की टीम को उबारने के लिए मुझसे उम्र मे तीन साल बडे बाउ के को बुलाया गया था। आपने भी सकट की घडी मे एक बार दुरानी को बुलाया था। आप लोग मुझे बाद मे बुलाते फिरेंगे, इससे तो अच्छा है कि पहले ही मेरे नाम की घोषणा कर दें।

आप कहेंगे कि हिन्दी के अध्यापक-लेखक का क्रिकेट मे क्या ताल्लुक? तो भाईजान! वही जो भारत और क्रिकेट का है। अमरिका, रूस, चीन क्रिकेट नहा खेलत। क्रिकेट-जगत् मे इस देश की कोई औकात

भी नही। फिर भी इन देशो का अपमान नही होता, अजीब बात है! लगता है, गरीब देश के लिए क्रिकेट का खेल बहुत मुफीद रहता है, पर क्रिकेट खेलना (हारना) नहीं छोड सकते। दरअसल हमारे देश म क्रिकेट सुनने वालो की सख्या बहुत अधिक है। जिन दिनो भारतीय दल कोई टस्ट मैच खेलता है देश के विश्वविद्यालय कार्यालय, अस्पताल आदि काम की दृष्टि से बद ही रहते हैं क्योकि लोग तो अपनी-अपनी जगह क्रिकेट सुनने म व्यस्त रहते हैं। जाहिर है, ऐसे दिनो म प्रशासन भी साफ-सुथरा रहता है।

वसे भी आप लोगो की कृपा से कई अच्छे-अच्छे खिलाडी रही खेल की कमेण्ट्री सुनते रहते हैं और आप लोगो की अदूरदर्शिता पर रोते रहते हैं। मैं भी काफी कमट्री सुन चुका, आहे भर चुका। मेरे नाम की घोषणा अविलम्ब कर दीजिए—सोचते विचारते आप कभी भी नहीं हैं फिर मेरे नाम को लेकर वक्त क्यो बरबाद करते हैं। रन बनाने की गारटी तो कोई भी खिलाडी नही दे सकता। बडे-बडे विशेषज्ञ कहते हैं कि क्रिकेट तो चास का खेल है इसम निश्चित कुछ भी नही। जब सब-कुछ चास पर ही निर्भर है तो क्या पता, अपने कर-कमलो म आए बल्ले से भी कोई मूल्यवान एकाध रन निकल जाए। (हमारी टीम म बहुमत ऐसे ही खिलाडियो का है।) अत मुझे ले लेने म कोई जोखिम भी नही है।

अक्सर कहा जाता है कि भारतीय खिलाडियो म आत्म विश्वास की कमी है। मेरे पास आत्म विश्वास का थोक स्टाक है। एक प्रमाण दूँ—मेरी अधिकाश रचनाए पत्रिकाओ से सम्पादको के अभिवादन व खेद सहित वाली पर्चियो के साथ वापस आती रहती है पर मैं कभी निराश नही होता। लगातार लिखता जाता हूँ पत्रिकाओ को भेजता रहता हूँ। सम्पादक लोग अपनी खेद व अभिवादन वाली घातक गेंदबाजी से भी साहित्य से मुझे आउट नही कर पाए, इसलिए टीम म मेरे आ जाने से एक आत्म विश्वास वाला खिलाडी आपको मिल जाएगा।

मुझे भारतीय क्रिकेट दल म शामिल किया ही जाना चाहिए। क्योकि आप लोगो ने अभी तक किसी लेखक को यह मौका नहीं दिया। सरकार हमारा प्रतिनिधित्व चाहती है, वह हमारा सम्मान करती है हम पुरस्कार

देती है। पर आप लोग हमारी बराबर उपेक्षा करते आ रहे है। यदि समय रहते आपने उन्हे उचित प्रतिनिधित्व न दिया तो कविता-कहानियो मे वे आपकी धुनाई कर देंगे। यदि आप लोगो ने मुझे टीम मे नही लिया तो आप लोगो के विरोध मे हम समानान्तर क्रिकेट प्रारम्भ कर देंगे और 'आम आदमी' के लिए क्रिकेट खेलने लगेंगे। हमारे लेखक तो कलम को बदूक बनाने पर तुले है, क्या आप मुझे कलम का बल्ला बनाने का अवसर भी नही देंगे ?

एक खतरे से आप लोगो को आगाह कर दू—यदि आप लोगो ने मुझे टीम मे न लिया तो जब भी मेरे नगर मे टैस्ट मैच होगा तब आपको नगर की दीवारो पर 'भारद्वाज नहीं तो टैस्ट नही' के पोस्टर चिपके मिलेंगे। तब तो झक मार कर आप मुझे टीम मे लेंगे। क्या पोस्टर छपाने मे मेरा खर्चा कराते है।

आप लोगो के अपने हक मे निर्णय की घोषणा की प्रतीक्षा करूँगा।

भवदीय

हेतु भारद्वाज

पुनश्च—यदि वाकई आप लोग मुझे टीम मे ले रहे हो तो पत्र के सम्बोधन के 'प्रिय' को 'आदरणीय' समझें और अत के 'भवदीय' को 'आपका आज्ञाकारी।'



क्रिकेट-कीर्तन के कीर्तनकार

1 शरद जोशी
14/53 यशवन्त नगर, गोरेगांव (पश्चिम)
बम्बई—400061 (महाराष्ट्र)

2 के० पी० सक्सेना
72 नारायण नगर, रामसागर
लखनऊ—226015 (उ० प्र०)

3 लतीफ घोंघी
बी—9 कॉलेज रोड
महासमुंद—493445 (रायपुर) म० प्र०

4 डॉ० ज्ञान चतुर्वेदी
एम 4/8, [illegible], बी० एच० ई० एल०
भोपाल—462022 (म० प्र०)

5 पूरन सरमा
1958/प० किशनपोल का रास्ता
जयपुर—302003

6 डॉ० प्रेम जनमेजय
73 साक्षरा अपार्टमेंट्स ए3 पश्चिम विहार
नई दिल्ली—110063

7 डा० वालेन्दु शेखर तिवारी
हरिहर सिंह रोड, मोराबादी
रांची—834008 (बिहार)

8 डा० हरीश नवल
सी 2/3, राणाप्रताप बाग
दिल्ली—110007

9 यज्ञ शर्मा
जी 12/17 जलपदमा सोसाइटी, गोरेगांव (पश्चिम)
बम्बई—400090 (महाराष्ट्र)

10 घनश्याम अग्रवाल
अमल प्लाट,
अकोला—444004 (महाराष्ट्र)

11 हरिओम बचन
एफ 2191, नेताजी नगर
दिल्ली—110023

12 कुन्दन सिंह परिहार
1319, नेपियर टाउन
जबलपुर—482002 (म० प्र०)

13 ईश्वर शर्मा
द्वारा, अमन सन्देश, जवाहर लाल नेहरू मार्ग
रायपुर—492001 (म० प्र०)

14 उपेन्द्र प्रसाद राय
बंद्राय विद्यालय, हिनू
रांची—834002 (बिहार)

15 इ द्र देव आचाय
कला एव वाणिज्य महाविद्यालय
धमतरी—493773 (म० प्र०)

16 अशोक च द्र शर्मा
86/2, परदशी पुरा
इ दौर—452003 (म० प्र०)

17 धनजय कुमार
जी—1 अर्मापुर स्टेट
कानपुर (उ० प्र०)

18 डा० हेतु भारद्वाज
छावनी—नीमकाथाना
जिला—सीकर (राज०)

डॉ बालेन्दु शेखर तिवारी

जन्म 29 अक्टूबर, 1948

शिक्षा एम ए, पी एच डी, डी लिट्

प्रकाशित पुस्तकें

रिसच गाथा, बिना यात्रा की यात्रा, किराएदार साक्षात्कार, व्यग्य ही व्यग्य (व्यग्य सग्रह), हिन्दी का स्वातन्त्र्योत्तर हास्य और व्यग्य (शोध), वचनदेव कुमार की व्यग्य कविताए जिजीविषा के स्वर, सूर-विविध सदर्भों म, अज्ञेय की सजना-विविध आयाम राग दरबारी-व्यग्य सदभ की परख (सम्पादित)

विशेष

किराएदार साक्षात्कार' के लिए बिहार सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा शिवपूजन सहाय पुरस्कार से सम्मानित

सम्प्रति—राँची विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग म रीडर

ISBN 81-7056-032-2